श्रीगणेशाय नमः।

अथ एकादशीमाहात्म्य।

भाषा।

एक समय की बात है कि ऋषिलोगों की मण्डली एक नियत स्थान पर सभा के लिये एकत्रित हुई थी, उनमें से महर्षि सूतजी बोले कि द्वादश मास और अधिक मास में जो दो शुभ अर्थात् उत्तमोत्तमा एकादशी होती हैं उनकी संख्या छब्बीस हुई तिनका नाम कहते हैं। आप लोग सावधान होकर श्रवण कीजिये।

१-उत्पन्ना, २-मोक्षदा, ३-सफला, ४-पुत्रदा, ५-षट्तिला, ६-जया, ७-विजया, ८-आमलकी, ९-पापमोचनी, १०-कामदा, ११-वरूथिनी, १२-मोहिनी, १३-अपरा, १४-निर्जला, १५-योगिनी, १६-देवशयनी, १७-पवित्रा, १८-पुत्रदा, १९-अजा, २०-परिवर्त्तनी, २१-इन्दिरा, २२-पाशांकुशा, २३-रमा, २४-देवउत्थानी ये २४ चौबीसों तो प्रधान हुये लेकिन इससे दो और अधिक होती हैं, किसी २ वर्ष में तिथ्यादियों के घटने बढ़ने से जो द्वादश मास से अधिक मास होजाने के कारण से जिसको लोग मलमास कहते हैं इस लिये पद्मिनी और परमा ये दो नामके भी हैं इसलिये सब की गणना अर्थात् संख्या छब्बीस हुई हैं। इन सबकी पृथक् पृथक् कथा श्रवण करने से अवश्य ज्ञात होगा कि ये सब अपने २ नामानुकूल निश्चय फलको देने वाली होती हैं।

यदि व्रत और उद्यापन करने का सामर्थ्य न हो सके तो इनके नामोच्चारण करने सेही प्राणी उस फल को प्राप्त कर लेते हैं जो कि व्रत करने से होता है।

इसके बाद पुनः सूत जी कहने लगे कि हे श्रोतागण ब्राह्मणों। प्राचीन कालमें आनन्दकन्द श्रीकृष्ण जी महाराज जिस सर्वोत्तमा व्रत को अति प्रसन्नता पूर्वक करके विधि और माहात्म्य के साथ कहे हैं, उसको जिस प्रकार से कहे हैं उसी तरह से इस असार संसार पृथ्वी में जो जीवात्मा

श्रद्धा भक्ति पूर्वक सुनेगा या सुनावेगा सो अनेकों तरह के भोगों को भोग कर विष्णुलोक को प्राप्त होगा ।

इसके वाद उसी समय में धर्मवीर अर्जुन वंशी-विहारी श्रीकृष्ण जी से बोले । कि हे जनार्दन ! भक्तों को सुख देने वाले आप से मेरी यही प्रार्थना है कि उपवास रात्रि भोजन और एकवार भोजन इस तिथि में जो करे उसका फल मुझे कहिये और किस विधि से इस व्रतको करना चाहिये यह सबका वृत्तान्त कृपाकर हमसे कहिये । इतना वचन अर्जुन का सुनकर श्रीराधाविहारी श्रीकृष्ण जी कहने लगे कि हे अर्जुन ! तुम दत्त चित्त होकर श्रवण करो मैं सकल वृत्तान्त तुमसे कहता हूं । देखो हेमन्त ऋतु के आरम्भ में अगहन मास के शुक्ल पक्ष में एकादशी के दिन जो प्राणी व्रत करे वह इससे पहले दशमी तिथि के रात्रि में दन्तधाव न करे और पवित्र होकर रहे किसी से मिथ्यादि भाषण और स्पर्श न करे और दिन के आठ वें भाग में अर्थात् सायंकाल में जब सूर्य्य महाराज अस्ताचल को प्राप्त होते हों उसी समय में रात्रि भोजन करे । पुनः हे अर्जुन ! इसके वाद प्रातः काल में यथोचित नियम के अनुसार व्रतार्थ संकल्प को करे और मध्याह्न कालमें पवित्र और सदा वहने वाली धार में स्नान करे, यदि धार तालाव अथवा वावड़ी इनमें उत्तम, मध्यम, को क्रम से विचारना चाहिये अगर कहो कि इन तीनों में से कोई भी न प्राप्त होय तो कूपही पर स्नान करना श्रेष्ठ है । उस काल का यह मन्त्र भी है कि हे अश्वक्रान्ते ! हे रथक्रान्ते ! हे विष्णु क्रान्ते ! हे वसुन्धरे ! हे मृतिके ! मेरे जन्म जन्मान्तर के एकत्रित पापों को तूं हरण करो और तेरे हरण किये हुये पापों से मैं परमपद गति को प्राप्त हो जाऊँगा । यह स्नान करने से पूर्व ही इस मन्त्र से व्रत करने वाला मनुष्य मृत्तिका से (मिट्टी से) स्नान करे। इसके वाद पतित, चोर, पाखण्डी, दुराचारी, मिथ्यावादी, अपवादी, देवता, वेद और ब्राह्मणों के निन्द्रा करने वालों से यदि आवश्यक भी किसी तरह का कार्य्य आ पड़े तौपर भी इनसे वार्तालाप न करें । क्योंकि दुराचारी उसी को कहते हैं जो माता भगिनी, आदि से गमन करने वाला हो और दूसरे का द्रव्य पराई स्त्री तथा देवता का धन को जो हरण करता है उसी का नाम है । अगर इनमें से पूर्व कहे हुये के अनुसार किसी

को देखे तो उसका प्रायश्चित दोष निवारण के लिये सूर्य्यनारायण का दर्शन कर ले। अनन्तर आदर पूर्वक नैवेद्यादि वस्तुओं से श्रीगोविन्द भगवान की पूजा करे और अपने घर में भी श्रद्धा पूर्वक आनन्द मन से दीप दान करे, और सुनो कि हे अर्जुन ! उस दिन में किसी प्राणी का निन्दा करना और मैथुन करना ये सब परित्याग दे।

व्रत करने वाले मनुष्य को उचित कर्त्तव्य यह है कि हरि कितन तथा पौराणादिकों के कथा श्रवण करने में दिन रात्रि को आनन्द पूर्वक व्यतीत करे और रात्रि में श्रद्धा पूर्वक जहां तक हो सके उस रात्रि में जागरण करे और ब्राह्मण तथा दीन जनों के यथोचित सत्कार करके दक्षिणा देकर तृप्त करे। अब धर्म्मात्मा मनुष्य को उचित कर्तव्य यह है कि कृष्ण पक्ष हो अथवा शुक्ल पक्ष की दोनों एकादशियों में भेद न करना चाहिये। क्योंकि इस प्रकार व्रत करने का जो फल होता है उसको सुनो। शंखोद्धार नामक क्षेत्र में स्नान करके श्रीगदाधर भगवान के दर्शन करने का जो फल मनुष्य को प्राप्त होता है सो फल एकादशी व्रत का उपवास फल के सन्मुख सोलहवें भाग के समान भी नहीं है। और व्यतीपात योग में दान देने का फल लाख गुण होता है। हे अर्जुन ! संक्रान्ति में दान देने का फल चार लाख गुणा होता है और सूर्य, चन्द्र के ग्रहण में तथा कुरुक्षेत्र में जो फल होता है वह सब फल एकादशी को उपवास करने वाले मनुष्य को प्राप्त होता है और अश्वमेध यज्ञ का जो फल होता है उससे सौ गुणा फल अधिक एकादशी के व्रत से प्राप्त होता है। जिसके घर में आठ सहस्र वर्ष पर्यन्त एक लक्ष तपस्वी नित्य भोजन करते हैं उसको जितना फल होता है और वेदवेदांग परायण को एक सहस्र गौ देने से जो पुण्य होता है उतना पुण्य एकादशी को उपवास करने से मनुष्य प्राप्त कर लेते हैं। जिसके गृह में नित्य दस श्रेष्ठ ब्राह्मण भोजन करते है उससे दस गुणा फल एक ब्रह्मचारी के भोजन कराने से होता है, उससे सहस्र गुणा फल पृथिवी दानका और उससे हजार गुणा फल कन्यादान का है, उसी प्रकार दस गुणा फल विद्या दान का भी कहा है, और विद्यादान से दस गुणा फल भूखे हुये मनुष्य को अन्नदान देने का होता है, अन्न-दान देने के समान कोई फल नहीं होता है, न होगा सो हे अर्जुन ! उस

स्वर्गस्थपितृ और देवता तृप्ति को प्राप्त होते हैं, इसलिये एकादशी व्रत के पुण्य की संख्या नहीं है। इसके पुण्य का प्रभाव देवताओं को भी दुर्लभ है। हे सत्तम! उपवास का आधा फल रात में भोजन करने वाले को और दिन में एक बार भोजन करने वाले को, रात्रि में भोजन करने वाले का आधा फल होता है, उपवास, एक बार भोजन, और रात्रि भोजन, इस प्रकार के व्रत में से कोई व्रत करना उचित है। संयम नियम तिथ दान और यज्ञ भी तभी तक गर्जता है जब तक एकादशी नहीं आती है।

तभी तक संसार से भयभीत होने वाले को एकादशी व्रत करना चाहिये। हे अर्जुन! मैं तुम्हारे पूछने से कहा हूं, एकादशी को भोजन करे, संख से जल न पीवे और न सूकर तथा मत्स्य को मारे, यह सब व्रतों में उत्तम व्रत कहा है। एक सहस्र किया हुआ यज्ञ भी एकादशी के समान नहीं है। अर्जुन ने कहा कि हे देव! संपूर्ण तिथियों में पुण्यवती तिथि एकादशी को आपने कैसे कहा? मैं उसकी पुरातन कथा सुनना चाहता हूं। श्रीकृष्ण जी कहने लगे कि हे अर्जुन! सतयुग में देवताओं को कष्ट देने वाला अत्यन्त अद्भुत और महा भयानक मुर नाम का एक दैत्य उत्पन्न हुआ! हे पार्थ! वह प्रतापी दैत्यने इन्द्र, आदित्य वसु, ब्रह्मा, वायु, अग्नि को भी अपने वश में कर लिया तब इन्द्र उसका संपूर्ण वृतान्त शंकर जी से जाकर कहे कि हे देव! हम सब देवता अपने देवलोक से निकल २ कर पृथ्वी तल पर भ्रमण कर रहे हैं। अब देवताओं की कौन सी दशा देने वाली है? इसका उपाय बताइये। तब महादेव जी बोले कि हे देवताओं में श्रेष्ठ देवेन्द्र! जहां पर जगत्पति, शरणागत रक्षक, त्राण कारी गरुडध्वज भगवान हैं वहां जाओ!

शिवजी की वाणी सुनकर महामान्य इन्द्र अपने गण और देवता सहित जहां जगन्नाथ देव शयन करते थे, तहां को प्रस्थान किये! जलमें शयन करते हुये भगवान को देखकर इन्द्र दोनों हाथ जोड़कर उनकी स्तुति करने लगे कि हे देवताओं से वन्दित देवताओं में उत्तम देव! आपके लिये नमस्कार है। हे दैत्य शत्रु! हे कमल नयन! हे मधुसूदन! हमारी रक्षा करो? दैत्यों से भयभीत हुये मेरे सहित सब देवतागण आपकी शरण में आये हैं आप सब करने और कराने वाले हैं, आप सब लोगों की माता और

आपही संसार के पिता हैं, आपही सबके उत्पन्न कर्त्ता, पालन-कर्त्ता हैं, और नाश कर्त्ता हैं हे प्रभो! आप देवताओं को सहायता और शांति देने वाले हैं, आप पृथ्वी, आप आकाश, और सम्पूर्ण संसार के उपकारी हैं, आप स्वयं ब्रह्मा, रुद्र और तीनों लोक के पालन कर्त्ता हैं, आप सूर्य्य, और चन्द्रमा तथा अग्नि देव हैं, साकाल्य, होम, आहुति, मन्त्र, ऋत्विज और जप आपही हैं, हे नाथ! यजमान के यज्ञ और फल को भोगाने वाले आपही हैं, आप से रहित तीनों लोकों और चर अचर में कुछ नहीं हैं अर्थात् आप सर्व व्यापी हैं, हे भगवन्। हे देव! हे देवताओं के ईश! हे शरणागतवत्सल! हे योगीश्वर! दैत्यों से वीजित विभव हीन देवता भय भीत हो करके आपकी शरण हैं, रक्षा करो! रक्षा करो!! हे जगत्पति! लोक से भ्रष्ट होकर अर्थात् निकल कर देवता पृथ्वी पर भ्रमण करते हैं।

इन्द्र की ऐसी वाणी सुनकर विष्णु भगवान पूछने लगे कि कहो ऐसा कौन मायावी दैत्य है जिन्होंने सब देवताओं को जीत लिया है और उसका वहां स्थान है और क्या उसका नाम है या उसको किसका बल और आश्रय है? यह सब भेद हम से बताओ और निर्भय हो जाओ। तब इन्द्र ने कहा कि हे देवताओं के ईश! भगवान! भक्तों के ऊपर दया करने वाले ब्रह्मा के वंश में पहिले महा उग्र देवताओं को दुःख देने वाला नाडी जंघ नाम का दैत्य उत्पन्न हुआ उसका महा पराक्रमी वो विख्यात पुत्र मुरु नाम का महा असुर हुआ है। चन्द्रावती नाम की उसकी विशाल नगरी है उसी नगरी में निवास करता हुआ पराक्रमी दुष्ट संसार को जीतकर देवताओं को अपने अधीन करके स्वर्ग से निकाल बाहर कर दिया है। इन्द्र, अग्नि, वरुण, यम वायु, ईश चन्द्रमा, नैऋत्य, आदि सब के स्थान में आपही स्थित रूप से व्यापक हैं और सूर्य बन कर आपही तप रहे हैं। हे प्रभो! वह आपही मेघ और सब देवताओं से नहीं जानने के योग्य हो बैठे हैं। हे विष्णु! उस दानव को मारकर देवताओं को विजयी बनाओ।

इस तरह से इन्द्रका वचन सुनकर भगवान क्रोधित होकर इन्द्र से कहने लगे कि हे देवेन्द्र शत्रु! मैं उस बली दैत्य को मारूंगा हे महाबली तुम सब चन्द्रावती को चलो। इस अमृत रूपी वाणी को सुनकर विष्णु

भगवान को आगे कर सब देवता वहां गये, देवताओं ने हजारों तीक्ष्ण बाणों से सुसज्जित असंख्य दैत्यों को गरजते हुये देखा। उस बाहुशाली असुर के मारे भयसे देवता रणभूमि को छोड़ कर दशों दिशाओं को भाग चलें। तब भगवान को संग्राम में खड़े देख कर वे असुर नाना प्रकार के अस्त्र शस्त्र लेकर उनके ऊपर दौड़े, शंख, चक्र, और गदाधारी भगवान उन्हें आते देखकर सर्प समान अपनी तीक्ष्णबाणों से उनकी शरीर को वेध डाला विष्णु भगवान के हाथ से मारे हुये सैकड़ों असुर विनाश को प्राप्त हुये, एक वही दानव विचलित न होकर के बार बार युद्ध करता रहा। उसके ऊपर भगवान जिस २ बाण को छोड़ते गये वे उसके तेज से कुण्ठित हो हो कर पुष्प के समान उसके निकट मालूम पड़ने लगे शस्त्रों से उसका नस अर्थात् संपूर्ण अङ्ग छिन्न भिन्न होने पर भी जब वह दैत्य पराजय न हो सका तब परिघ के समान अपनी भुजाओं से युद्ध करने लगा। दिव्य दश सहस्र वर्ष पर्यन्त उसने बाहु युद्ध किया तब उससे श्रमित होकर अर्थात् थक कर भगवान बद्रिकाश्रम को चल दिये, वहां हेमवती नाम की परम सुहावनी गुफा थी उसमें महा योगी भगवान शयन करने के लिये प्रवेश कर गये। हे अर्जुन! उस बारह योजन का अर्थात् ४८ अड़तालिस कोस की गुफा में एक ही द्वार था वहां निःसन्देह भय भीत होकर मैं सो गया।

हे पाण्डु नन्दन! मैं उस युद्ध से थक गया था लेकिन वह दानव भी मेरे पीछे लगा था इस कारण से उस गुफा में प्रवेश किया। इसके बाद मुझको सोता हुआ देखकर वह असुर अपने मन में विचारने लगा कि दैत्यों का संहार करने वाले विष्णु को अब मैं मारूंगा। वह दुर्बुद्धि ऐसा विचार करता रहा उसी समय मेरे शरीर से महा प्रभावशाली एक कन्या उत्पन्न हुई।

हे अर्जुन! उस दैत्य ने उस देवी को तीक्ष्ण बाणों से युद्ध करने के उपस्थित देखा वहां वह दानव उस स्त्री के कहने से युद्ध करने लगा और उस स्त्री को युद्ध करते हुये नित्य देख कर वह मुर नामका दैत्य विस्मय को प्राप्त हुआ। वह अपने मन में विचार करने लगा कि इस कन्या को किसने ऐसा भयानक अति प्रबल वज्र पात के समान बनाया है फिर सोच

विचार कर उस दानवेन्द्र ने उस कन्या के साथ युद्ध करने लगा। तब उस महादेवी ने उस बली पौरुष वाले को तुरन्त रथ चूरा चरा करके क्षणमात्र में उस को भी सब अस्त्र शस्त्र छीन लिया। तब वह व्याकुल हो इनसे आ लिपटा और मल्ल युद्ध करने लगा। इसके बाद उस कन्याने दानव को गिराय दिया, फिर वह उठ कर कन्या को मारने के लिये दौड़ा, देवी ने उसको आते देख क्रोध किया और अपनी भुजगत से बाण उस दानव का शिर काट डाला और मुण्ड कटा हुआ वह दैत्य यमलोक को गया। शेष असुर जो बचे वो भय भीत होकर पाताल लोक में चले गये।

इसके अनन्तर विष्णु भगवान उठ उस दैत्य को अपने सन्मुख मरे हुए देखकर और उस कन्या को नम्रता पूर्वक दोनों हाथ जोरे हुए खड़ी देख विष्णु भगवान विस्मित होकर उससे पूछे कि इस दुष्टात्मा दैत्य को जिसने गन्धर्व और इन्द्र पवन आदि सब देवता को जीत लिया है उसे किसने मारा? लोकपाल सहित नागों को क्रीड़ा में जिसने जीत लिया और जिससे परास्त हुआ मैं भी इस गुफा में भयभीत होकर शयन करता हूं और किसकी दया से भागा हुआ मैं रक्षित हूं?

कन्या बोली कि हे प्रभो! तुम्हारे अंश से उत्पन्न मैं हूं और मैं इस दानव को मारी हूं। हे हरि! भगवान्! यह आपको शयन करते देख मारने को उपस्थित हुआ, इससे इस त्रिलोकी के कण्टक के समान विचार जान कर मैंने इस दुरात्मा दैत्य को मारकर देवताओं को निर्भय किया और सब शत्रुओं को भय देनेवाली मैं आपकी शक्ति हूं। तीनों लोकों की रक्षा करने के लिये मैंने उस भयंकर दानव को मारा है, इसको देखकर क्या आपको आश्चर्य हुआ है? सो मुझसे कहिये। यह बात कन्या की मुंह से सुनकर श्री भगवान! भक्त हितकारी! असुर संहारी! भक्त वत्सल! गर्व प्रहारी! बोले कि हे शुभमें! मैं इस असुर को मारने से तेरे ऊपर प्रसन्न हूं। सब देवता को आनन्द हुआ और वे सब हृष्ट पुष्ट हुये तेरे किये हुये कीर्त से सब देवता और तीनों लोकों में आनन्द हुआ है। हे मृगनयनी! तुझ से मैं बहुत प्रसन्न हूं। हे सुव्रते! तुम मुझ से वर मांग, मैं तुमको ऐसा वर दूंगा जो कि देवताओं को भी दुर्लभ है। कन्या बोली हे देव! भगवान! यदि आप मुझपर प्रसन्न हैं और यदि आप वर देना चाहते हैं तो ऐसा वर

दीजिये जिससे व्रत करने वाले मनुष्य को मैं महापापों से उद्धार करूँ और उपवास का जो फल है उससे आधा रात्रि भोजन का और उसका आधा एकवार भोजन करने का होय, मेरे दिन भक्ति से और इन्द्रियों को वश में करके जो व्रत करे सो वैष्णव स्थान अर्थात् वैकुण्ठ में सैकड़ों करोड़ कल्प तक वास करे। जितेन्द्रिय होकर व्रत करने वाला नाना प्रकार का आनन्द भोगे।

हे भगवान्! आपकी कृपा से (प्रसन्नतासे) मुझे यह वरदान मिले मेरे दिन में जो उपवास करे, रात्रि भोजन करे अथवा एक वार भोजन करे उसको धन धर्म और मुक्ति आप दीजिये, श्रीभगवान बोले कि हे कल्याणि शशि वदने! तुमने जो कहा है वह सब होगा और इन लोगों में जो मेरे भक्त हैं और जो मनुष्य तेरे भक्त हैं, वे मेरे निकट निवासकरेंगे और तीनों लोकों में प्रसिद्ध होंगे। मेरी पराशक्ति तू एकादशी के दिन उत्पन्न हुई है इसे तेरा नाम एकादशी हुआ मैं तेरे व्रत करने वाले को सब पापों को नाश करूंगा और न नाश होनेवाला पद दूंगा। तृतीया, अष्टमी, चतुर्दशी नवमी, ये तिथि और एकादशी सबसे अधिक प्रिय है। मैं सत्य २ कहता हूं कि सब तीर्थों, सब दानों और सब व्रतों से अधिक पुण्य एकादशी व्रत का है।

श्रीभगवान उसको ऐसा वर प्रदान करके उसी स्थान में अन्तर्ध्यान हो गये और तब से एकादशी व्रत तिथि हृष्ट पुष्ट हो गई अर्थात् तभी से संसार में वह पूजनीय हुई। हे अर्जुन! जो मनुष्य एकादशी व्रत करेगा उनके शत्रुओं का नाश मैं करूंगा और परम गति दूंगा। जो एकादशी के महाव्रत को करेगा उसके विघ्न को मैं नाश करूंगा और सब सिद्धि दूंगा। हे कुन्ती पुत्र! इस प्रकार एकादशी की उत्पत्ति हुई। यह एकादशी सर्वदा सम्पूर्ण पापों को नाश करने वाली है, तथा परम पवित्र एकादशी एकही तिथि संसार में उदय हुई है। हे अर्जुन! शुक्ल कृष्ण पक्ष का भेद न कर व्रत दोनों पक्ष में करना श्रेष्ठ है और द्वादशी युक्त एकादशी सब से उत्तम है। सब व्रत करने वालों को अन्तर न करना चाहिये क्योंकि दोनों पक्षों की तिथि एक ही होती है। एकादशी का व्रत जो मनुष्य करते हैं वे वैकुण्ठ को जाते हैं। जहां गरुड़ध्वज भगवान हैं वे मनुष्य सम्पूर्ण लोकों में धन्य हैं जो विष्णु की भक्ति करते हैं और

एकादशी माहात्म्य को पढ़ते हैं । एकादशी को निराहार रह करके दूसरे दिन भोजन करने वालेको निःसन्देह अश्वमेध यज्ञकरने का फल होता है । विद्वान् यह व्रत कर पुष्पाञ्जलि अर्पण करे कि हे पुण्डरीकाक्ष हे अच्युत ! मैं आपकी शरण हूँ रक्षा करो । व्रत के फल की इच्छा करने वाला मनुष्य जपे हुये अष्टाक्षर मन्त्र से पात्र में रखा हुआ जल को तीन बार अभिमन्त्रित करके पी जाय । दिन में शयन करना दूसरे का अन्न पुनर्भोजन मैथुन अर्थात् स्त्री प्रसंग, शहद, कांस पात्र में भोजन, मांस और तेल में आठ कार्य्य द्वादशी के दिन वर्जित हैं । जो वार्तालाभ के योग्य नहीं हैं अर्थात् पतित हैं उनसे भाषण करें तो शुद्धि के हेतु तुलसीपत्र भक्षण करें, पारण में आंवला का फल भक्षण करने से भी शुद्ध हो जाता है । हे राजेन्द्र ! एकादशी के मध्याह्न काल में, द्वादशी के अरुणोदय में स्नान, पूजन, दान, होम आदि करना उचित है । यदि कोई महासंकट में प्राप्त हुआ हो तो द्वादशी में जल से पारण करले और पुनः भोजन करे तो पुनर्भोजन का दोष न होगा । विष्णु की भक्ति करने वाले को मनुष्य, विष्णुभक्त के मुख से निकली हुई सुन्दर मंगलदात्री कथा दिन रात सुनते हैं वे करोड़ो कल्प पर्यन्त विष्णुलोक अर्थात् वैकुण्ठ में आनन्द करते हैं, जो एकादशी महात्म्य एक पद भी श्रवण करते हैं उनके ब्रह्महत्या आदि पाप निःसन्देह छूट जाता है । वैष्णव धर्म के समान सनातन अर्थात् प्राचीन मत कोई नहीं है ।

इति श्री भविष्योत्तरपुराणे श्रीकृष्णार्जुन संवादे मार्गशीर्ष कृष्णैकादशी महात्म्य सम्पूर्णम् ॥

युधिष्ठिर जी बोले कि संसार को रचने वाले विश्व के स्वामी पुराण पुरुषोत्तम तीनों लोकों को सुख देने वाले और साक्षात् विष्णु स्वरूप मैं आपकी वन्दना करता हूं । हे देवताओं के ईश देव ! मुझे परम सन्देह है कि इससे संसार के उपकारार्थ और पापों के क्षय के निमित्त मैं आप से पूछता हूँ । अगहन मासके शुक्ल पक्ष की एकादशी का कौनसा नाम है, उसकी विधि किस प्रकार है और उसमें किस देवता की पूजा किया जाता

है। हे स्वामिन्! मुझसे यह विस्तार पूर्वक यथावत् वर्णन कीजिये। यह सुनकर श्रीभगवान युधिष्ठिर जी से कहने लगे कि हे राजन्! तुमने अच्छा प्रश्न किया है इस कारण तुम्हारा विपुल (यश) संसार में होता रहेगा हे राजेन्द्र! मैं तुमसे हरिवासर अर्थात् एकादशी की कथा कहता हूं कि अगहन के कृष्ण पक्ष की उत्पन्ना नाम की एकादशी मुझको अत्यन्त प्रिय है। हे राजन्! मुरु नामक असुर के वध के निमित्त मार्गशीर्ष मास में मेरे शरीर से उत्पन्न हुई है इससे वह मेरी परम प्रिय विख्यात है। हे राजाओं में श्रेष्ठ! वह मैं तुम्हारे आगे तीनों लोकों और चर अचर के निमित्त पहले ही कह चुका हूं। हे राजन्! अगहन मास के कृष्ण पक्षमें यह उत्पन्न हुई है इस कारण इसका उत्पन्ना नाम हुई। अब मैं अगहन शुक्ल पक्ष की कथा कहता हूं। उसकी कथा सुनने मात्र से वाजपेय यज्ञ का फल होता है। जिसका नाममोक्षदा है और यह सम्पूर्ण पापोंको हरता है। इसमें तुलसीकी मञ्जरी और धूपदीपसे दामोदर भगवानका यत्नपूर्वक पूजन करे।

हे राजेन्द्र! सुनिये मैं पुरातन की शुभ कथा कहता हूं जिसके पिता, माता अथवा पुत्र अधोगति को प्राप्त हुये हैं वे इसके प्रभाव से निःसन्देह स्वर्ग को जाता है। हे राजन्! इस कारण इसकी उस महिमा को श्रवण करो!

एक सुन्दर चम्पक नगर में जहां वैष्णव रहते थे तहां "वैखानस" नामका राजा राजाओं में ऋषिपुत्र के समान प्रजा का पालन करने वाला हुआ। उस नगर में चारों वेदों के जानने वाले ब्राह्मणों का निवास रहा इस प्रकार वह राजा राज करता था। एक दिन वह राजा अपने पिता को रात्रि में स्वप्न देखा कि अधोगति को प्राप्त हुये हैं अर्थात नरक में देखा, उनको ऐसे वहां देख आश्चर्जित हो जलभरे नेत्र से ब्राह्मणों के आगे अपने स्वप्न का वृत्तान्त कह सुनाया कि हे ब्राह्मणों! मैंने अपने पिता को पतित होकर नरक में परे हुये देखा है और वे कहे हैं कि हे पुत्र! मेरा उद्धार करो मैं अधोयोनि को प्राप्त हुआ हूं। हे ब्राह्मणों! अपने पिता को जब से इस प्रकार कहते हुये मैंने देखा है तबसे मुझको सुख नहीं मिलता है। यह मेरा विशाल राज्य और सुख मुझको असह्य हो रहा है। घोड़े, हाथी और रथ ये सब मुझको अच्छा नहीं लगता है। कोशका भी कुछ सुख मुझको

नहीं देता है। हे श्रेष्ठ ब्राह्मणों! हमको स्त्री तथा पुत्र कोई अच्छा नहीं लगता है। मैं क्या करूं? कहां जाऊं मेरा शरीर जल रहा है। दान, व्रत, तप और योग कोई उपाय ऐसा बताओ जिससे मेरे पूर्वज मोक्ष प्राप्त होय हे विप्रो! सो उपाय मेरे से कहिये। उस बलवान पुत्रके जीवन से कौनसा फल है जिसका पिता नरक में पड़े हैं उसका जन्म व्यर्थ है।

ब्राह्मण बोले कि हे राजन्! यहां से पर्वत मुनि का आश्रम समीप है हे राजसिंह! वो भूत और भविष्य सब जानते हैं वहीं पर जाइये। तब वैखानस राजा उनकी बात को सुनकर शान्त ब्राह्मणों और प्रजाओं के सहित जहां पर्वत मुनि का आश्रम था वहां पर गये। जो आश्रमी, ऋग्वेदी यजुर्वेदी, सामवेदी और अथर्ववेदी विद्वान मुनि गणों से सेवन किये गये हैं वहां मुनियों के सहित द्वितीय ब्रह्मा के समान पर्वत मुनिको राजा देखा तब शिर नीचा कर प्रणाम किया। मुनि उसके राज्य के सातों अंगो का कुशल पूछने लगे कि तुम्हारा राज्य तो निष्कण्टक है? और राज्य में सुख शान्ति है यह सुन कर राजा बोले कि हे विप्र! तुम्हारे प्रसाद से सातों अंगो में कुशल है विभव और ऐश्वर्य्य अनुकूल रहने पर भी कुछ विघ्न उपस्थित हो गया है। हे ब्राह्मण! मुझको यह संशय है। इस कारण मैं आपसे पूछने के हेतु आया हूं। राजा का यह वचन सुन कर श्रेष्ठ पर्वत मुनि ध्यानावस्थित हो नेत्र मूंद कर भूत और भविष्य का विचार करके एक मूहूर्त में ध्यान कर श्रेष्ठ राजा से बोले कि हे राजेन्द्र! हमने तुम्हारे पापी पिता के पाप को जान लिया, पूर्व जन्म में तुम्हारे पिता ने द्वेष के कारण अपनी कामासक्त पत्नी का ऋतु भंग किया, वह स्त्री चिल्लाती रही कि हे नराधिप! रक्षा करो, ऋतु दान दो, परन्तु तुम्हारे पिताने उसके इतने आग्रह पर भी उसको ऋतु दान नहीं दिया इस पाप से वह नरक में पड़ा। हे मुनिनाथ! पाप रहित होकर उस नरक से कैसे उद्धार होगा सो आप से पूछता हूं? मुनि बोले कि अगहन के शुक्ल पक्षमें मोक्षदा नामकी हरितिथि होती है तुम सब लोग उसका व्रत करो और पिताको पुण्यप्रदान कर दो। उस पुण्य के प्रभाव से उनको मोक्ष प्राप्त होगा। तब मुनिका वचन सुनकर राजा अपने गृहको आये। हे भरत कुलमें श्रेष्ठ अर्थात् युधिष्ठिर! बड़े कष्ट से राजा को अगहन की एकादशी प्राप्त हुई; फिर राजाने स्त्री पुत्र सेवक

और सम्पूर्ण रनिवास के सहित विधिवत् व्रत करके उसका पुण्य अपने पिताको दिया । उस पुण्य के देने से आकाश से पृथ्वी तक पुष्पवृष्टि हुई । देवताओं ने वैखानस राजा के पिताकी स्तुति की और वह स्वर्ग लोक को गये और वैखानस राजा का पिता अन्तरिक्ष हो शुद्ध वाणी से बोले कि हे पुत्र तेरा कल्याण हो ! ऐसे तीन बार कहके वह स्वर्ग लोक को चलेगये । हे राजा ! इस प्रकार से जो इस मोक्षदा नामकी एकादशी का व्रत करे उसका समस्त पाप नाश हो जाता है और मृत्यु होने पर वह मोक्ष को प्राप्त होता है । हे राजेन्द्र ! इससे बड़ी मोक्षदात्री निर्मल और शुभ कोई नहीं है, जिन लोगों ने इसको व्रत किया है इनके पुण्य की संख्या हम नहीं जानते । स्वर्ग और मोक्ष प्रदान करने में यह चिन्तामणि के समान है ।

इति श्री ब्रह्माण्ड पुराणे मार्गशीर्ष शुक्लैकादशी
महात्म्य भाषा सम्पूर्ण ॥ २ ॥

इसके अनन्तर युधिष्ठिर महाराज भगवान से पूछे कि पौष कृष्ण पक्ष में कौन एकादशी होती है, उसका नाम क्या है, उसकी विधि क्या है और उसमें किस देवता की पूजा की जाती है ? हे स्वामि जनार्दन ! यह सब मुझसे विस्तार पूर्वक कहिये ! श्री कृष्ण महाराज बोले हे राजेन्द्र ! तुम्हारे स्नेह के कारण मैं कहता हूं । मैं जितना संतुष्ट यज्ञ में अधिक् दक्षिणा देने से नहीं होता उतना संतुष्ट एकादशी के व्रत से होता हूं इस कारण सम्पूर्ण यत्न से हरिवासर का व्रत करना उचित है । हे राजा ! पौष कृष्ण पक्षमें द्वादशी युक्त जो एकादशी होती है उसका माहात्म्य एकाग्र चित्त करके श्रवण कीजिये । हे राजन् ! सब महीनोंमें जो एकादशी होती है । हे राजन् ! यद्यपि उनमें भेद न करना चाहिये तथापि इस एकादशी की और कथा सुनिये । अब मैं सब लोगों के हितार्थ पौष की एकादशी के विधि कहता हूं । पौष कृष्ण की एकादशी का नाम सफला है, इसके अधिदेव नारायण है, इसमें यत्न पूर्वक उनकी पूजा करनी चाहिये । हे राजेन्द्र ! पूर्व विधि अर्थात् प्रथम कहे विधि से मनुष्य को एकादशी करना चाहिये, नागों में जैसे शेष और पक्षियों में जैसे गरुड़, यज्ञों में जैसे अश्व

मेध, नदियों में जैसे गङ्गा, हे राजन्! उसी प्रकार व्रतों में एकादशी तिथि प्रबल है अर्थात् श्रेष्ठ है। हे भरतवंश से श्रेष्ठ! युधिष्ठिर! जो सर्वदा एकादशी का व्रत करते हैं वे सर्वथा मेरे को पूज्य हैं। सफला नाम की जो एकादशी है उसकी पूजा की विधि सुनो। देश में उत्पन्न होनेवाले ऋतु के फलों से उस दिन में मेरा पूजन करे। उत्तम नारियल का फल, बिजौर जंभीरी, अनार, सुपारी और बैर, लवंग, आम, तथा अन्यान्य प्रकार के फल और धूप दीप से विधिपूर्वक विष्णु भगवान की पूजा करे। सफला एकादशी में दीपदान सब से अधिक उत्तम कहा है और रात्रि में प्रयत्न से जागरण करना चाहिये। जब तक नेत्र खुलें रहे तब तक एकाग्र मनसे जो रात्रि जागरण करता है उसका पुण्य सुनिये। हे राजन्! उसके समान न तो यज्ञ, न तीर्थ है और न इस लोक में कोई व्रत है। पांच सहस्र वर्ष पर्यन्त तपस्या करने से जितना फल होता है उतना ही फल सफला के व्रत से प्राप्त होता है। हे राजसिंह! सफला की कथा सुनिये।

एक समय में चम्पावती नाम की नगरी में माहिष्मत नाम के राजा राज करते थे। उस माहिष्मत राजा को चार पुत्र उत्पन्न हुये उनमें जो ज्येष्ठ पुत्र था सो महापापी हुआ। दूसरे की स्त्रियों से रमण करे और सदा वेश्याओं के सङ्ग में रत रहे। वह पापी अपने के सब द्रव्य को नष्ट कर दिया नित्य असद्वृत्ति में लगा रहता था। देवता, ब्राह्मण की निन्दा किया करे नित वैष्णव और देवताओं की निन्दा करता था। तब माहिष्मत राजा अपने पुत्र को इस प्रकार देख क्रोधित होकर उसका नाम लुम्पक रक्खे और उसका पिता बन्धु अपने राज्य से निकाल दिये, राजा के भय से उसके परिवार भी त्याग कर दिये। तब लुम्पक भी मनमें विचार करने लगा कि पिता भाई तो मुझको त्याग दिये अब मेरा कर्त्तव्य क्या है? इस प्रकार की चिन्ता में मग्न हो पाप में बुद्धि को प्रवृत करके विचार किया कि अब मैं पिता की पुरी त्याग कर वन में चलूं। दिन में तो वन में रहूंगा और रात्रिमें आकर नगर में सर्वत्र चोरी करूंगा। वह पतित लुम्पक अपने मनमें इस प्रकार का विचार कर पुरी को त्याग करके वनमें चला गया। वह पापी नित्य वनचरों का घात करता और चोरी करता था जब गृहस्थ उसको पकड़ लेते तो माहिष्मत के डर से छोड़ देते थे। वह

पापी जन्मान्तर के पाप से भ्रष्ट हो गया। वह दुष्ट नित्य मास और फल भक्षण करता और वासुदेव के निकट अपना स्थान बनाया, वहां बहुत वर्षों का एक पीपल का वृक्ष रहा, उस महावन में वह देवता के समान हो गया। उसी स्थान में वह पाप बुद्धि लुम्पक निवास करता था इसी प्रकार वह पापी कुछ काल तक वहां निवास किया। दुष्कर्म में रत और निन्दित कर्म को करता था, उसी समय में पौष कृष्ण पक्ष की सफला एकादशी का दिन प्राप्त हुआ। हे राजन्! दशमी के दिवस रात्रि में वस्त्रहीन होने के कारण शीत की पीड़ा से पीपल के निकट न तो निद्रा आई और न उसे सुख मिला और प्राणहीन के समान हो गया। शीतकी पीड़ा से दांत बजने लगे, इसी प्रकार रात्रि व्यतीत हुई, सूर्य के उदय होने पर वह चैतन्यता को प्राप्त नहीं हुआ सफला एकादशी के दिन जब मध्याह्न काल हुआ तो उसे होश और चैतन्यता को प्राप्त हुआ। चैतन्यता प्राप्त होनेपर क्षण भरके पश्चात् धीरे २ उठने लगा और पदपदपर गिरता था मानो पङ्गुकी भांति पृथ्वीपर चलता था मारे क्षुधा के पीड़ित था ही तुरंत वन में गया वहां जाने पर उस दुरात्मा लुम्पक को जीव घात करने की शक्ति न रही तब वह लुम्पक भूमि पर गिरे हुये फल को भोजन के निमित्त लेआया और जब तक वहां से आया तब तक सूर्य नारायण अस्त होगये अर्थात् अस्ताचल को चले गये। तब दुःखी होकर इस प्रकार विलाप करने लगा कि हाय! पिता! क्या हो गया और उन सब फलों को वृक्षके नीचे धर दिया और बोला कि इन फलों से हरि भगवान प्रसन्न होयं ऐसे कह कर वह लुम्पक रात्रि भर बैठा रह गया और उस रात्रि में उसको निद्रा नहीं आयी। उस जागरण से मधुसूदन भगवान ने सफला एकादशी का व्रत और उन फलोंका पूजन मान लिया, इस प्रकार लुम्पक ने अकस्मात् उत्तम व्रत कर लिया और उसी व्रत के प्रभाव से अकण्टक राज्य प्राप्त किया। हे राजन्! पुण्य का अंकुर जैसे उदय हुआ सो सुनिये। सूर्योदय के समय एक दिव्य अश्व वहां पर आया हे राजन्! वहतुरंग लुम्पक ने निकट आकर खड़ा हो गया और शरीर रहित वाणी अर्थात् आकाशवाणी हुई कि हे राज पुत्र! वासुदेव के प्रभाव (प्रसाद) और सफला के प्रभाव से तुम अपने राज्य को अकण्टक प्राप्त

करो। तुम अपने पिता के समीप जाओ और निष्कण्टक राज्य को भोग। जब ऐसी आकाशवाणी हुई तब दिव्य रूप धारण किया और उसकी मति परम वैष्णवी होकर श्रीकृष्ण जी में लीन हुआ और दिव्य आभूषणों से विभूषित हो पिता को नमस्कार करके घरमें रहने लगा। तब उस वैष्णव को उसके पिता ने निष्कण्टक राज्य दिया और उसने बहुत काल तक राज्य किया। बाद वह हरिवास अर्थात् एकादशी और विष्णु की भक्ति में सदा लीन रहने लगा और कृष्ण के प्रसाद से उसको मनवांछित पुत्र और सुन्दर स्त्री हुई। उसके पश्चात् वृद्धावस्था प्राप्त होने पर उसने पुत्र को राज पर बैठाया और विष्णु की भक्ति में परायण होके स्त्री सहित वन को चला गया और आत्मसाधन करके विष्णु लोक को गया वहां जाकर विष्णु के निकट चिंता रहित होकर रहने लगा। इस प्रकार से सफला एकादशी का व्रत जो करेंगे वे इसलोक में यश और परलोक में निःसन्देह मोक्ष प्राप्त करेंगे सफला एकादशी का व्रत करने वाला मनुष्य संसार में धन्य है, वे उसी जन्म में मोक्ष प्राप्त करेंगे इससे इसमें सन्देह नहीं। हे राजा! सफला का माहात्म्य सुनने से मनुष्य अश्वमेध यज्ञ का फल प्राप्त करके स्वर्ग में निवास करता है।

इति श्री पौष कृष्ण सफला एकादशी माहात्म्य
भाषा संपूर्ण ॥ २ ॥

युधिष्ठिर महाराज एक दिन श्रीकृष्ण से एकान्त में पूछे कि हे कृष्ण! आप सफला नामक शुभ एकादशी कहे पर अब पौष शुक्ल की एकादशी कृपा कर कहिये? उसका क्या नाम है? उसकी कौन विधि है? और उसमें किस देवता की पूजा करनी चाहिये? हे पुरुषोत्तम! हृषीकेश! आप किसके ऊपर प्रसन्न हुये?

श्रीकृष्ण जी बोले हे राजन्! पौष शुक्ल की एकादशी और उसकी विधि लोकों के उपकारार्थ सुनिये! हे राजन! पूर्व अर्थात् पहिले कही हुई विधि से इसका व्रत करना चाहिये। इसका नाम पुत्रदा है, और यह समस्त पापों को हरनेवाली है। सिद्धि और काम को देनेवाली नारायण इसके

देवता हैं, चर अचर और तीनों लोकमें इससे परे कोई अर्थात् दूसरा कोई नहीं है । हे राजन् ! पापों को हरने वाली कथा सुनिये । इसका व्रत करने से हरि भगवान् मनुष्य को विद्वान् और यशस्वी कर देते हैं ।

भद्रावती नामकी एक नगरी है वहां सुकेतु नामक राजा हुये और शैव्या नाम की स्त्री उनकी हुई वह राजा अपुत्री होकर अपने समय को विताने लगे और वंश चलाने वाले पुत्रकी प्राप्ति नहीं हुई । इस कारण राजा बहुत काल पर्यन्त धर्मकी चिन्ता करते थे अर्थात् धर्म, कर्म करते थे, और यह कहा करते थे कि पुत्र की प्राप्ति के निमित्त मैं क्या करूं, कहां जाऊं, राजा सुकेतुमान को राष्ट्र और पुर में कहीं सुख न प्राप्त हुआ इस से अपनी पत्नी शैव्या समेत प्रति दिन दुःखी रहते थे, रानी और राजा नित्य शोक में निमग्न रहते कि पितर हमारे दिये हुये जल को कुछ उष्णता अर्थात् दुःख से पान किये हैं । राजा के पश्चात् मैं किसी को नहीं देखत हूं जो हमारा तर्पण करे ऐसा स्मरण करके पितृगण दुःखी रहते थे । और उनके इस दुःख के मूल को जानकर राजा भी सन्तापित रहते, बन्धु, मित्र सुहृद और मन्त्री, गज अश्व, पदचर आदि उस राजा को कुछ भी नहीं अच्छे लगते, इस प्रकार अपने मनमें वह राजा निराश हो गया कि पुत्र हीन मनुष्य का जन्म निष्फल है, अपुत्री का गृह शून्य और उसका हृदय सदा दुःखित रहता है । पुत्रके विना देव पितर और मनुष्य के ऋण से उऋण नहीं होता, इस कारण सम्पूर्ण प्रयत्न से मनुष्य पुत्र उत्पन्न करे उनको इसलोक में यश और परलोक में शुभ गति अर्थात् मोक्ष की प्राप्ति होती है । जिनके सैकड़ो वर्षों के किये हुए पुण्य उदय होते हैं, और पुण्य कर्म करने वालों को लोक में पुत्र पौत्र होते हैं, और उनके गृह में आप आरोग्य और सम्पति रहती है । पुत्र सम्पति और विद्या ये सब विष्णु भक्ति और पुण्य विना नहीं प्राप्त होते हैं ।

इसी प्रकार प्रातः और रात्रि में चिन्ता करते हुये वह राजा सुखको प्राप्त नहीं हुआ अर्थात् दुःखी रहता था । तब एक दिन सुकेतुमान् राजा आत्मघात का विचार किया और आत्मघात से फिर दुर्गति विचार कर अपुत्री होने से उसने शरीर को क्षीण देख पुनः अपनी बुद्धि से आत्मा का हित विचार किया । तब राजा अश्व पर आरूढ़ होकर बन में गया ।

पुरोहित आदि किसी को राजा का जाना विदित नहीं हुआ। मृग और पक्षियों से सेवित गंभीर वन में राजा गये तब विचार करने लगे और उस वन के वृक्षों को अवलोकन करने लगे देखें कि वट, पीपर, बेल, खजूर, कटहल, मौलसिरी, सप्तपर्ण, हिन्दू और तिलक, शाल, ताल, सरल, तमाल, हिंगोट, अर्जुन, लभेरा खीची, और बहेरा को राजा देखने लगे। शालकी करौंदा, पाटल, खैर, शाख, और पलास को दशों दिशाओं में राजा देखने लगे। मृग, व्याघ्र, वराह, सिंह, वानर, और बच्चों समेत सर्पों को घूमते हुये राजा देखे। बच्चों समेत वनैले, मतवाले हाथी, कृष्ण मृग, गौ शरावत, और शृंगाल वन बिलाड़ सुरागौ और हथिनियों के झुण्ड में चार दांतवाले यूथप हाथियों को देखे। वह राजा उन सब को देख कर अपने गजों का स्मरण किये और उनके मध्य में विचरते हुये राजा शोक को प्राप्त हुये और महा आश्चर्य्य से वनको देखने लगे, कहीं उलूक और कहीं शृंगाल, का शब्द सुनाई दिया, इसी प्रकार राजा पक्षी गणों को देखते २ और वनमें घूमने लगे। सूर्य्यनारायण मध्य में गये अर्थात् दोपहर हो गया। क्षुधा और तृषा से पीडित होने के कारण कण्ठ से आवाज नहीं निकलती अर्थात् कण्ठ सूख गया, तब राजा इधर उधर दौड़ कर चिंता करने लगे कि मैंने कौनसा कर्म किया जिससे ऐसा दुःख मिला। मैंने पूजा और यज्ञ से देवताओं को सन्तुष्ट किया, ऐसे महान् दारुण दुःख मुझको कहांसे प्राप्त हुआ। ऐसे ही चिन्ता करते राजा वनमें आगे को चले। आगे जाकर एक सुकृतके प्रभावसे कुमुदनी से सुशोभित मानसरोवर के स्पर्धी एक मनोहर सरोवर को देखे। उसमें बहुत से मगर, मछली, और जलचरों के सहित कमल खिल रहे थे तथा राज हंस चकोर और चक्रवाक बोल रहे थे (कलोलें कर रहे थे) उस सरोवर के समीप राजाको लक्ष्मीवान, ऐश्वर्य्यवान, अर्थात् धनवान बहुत से मुनियों के आश्रम की शुभ सूचना हुई। राजा का दाहिना नेत्र और दाहिनी भुजा फरकने लगी, उनके सकुन होने के कारण राजा को शुभ लक्षण जान पड़ा। उस सरोवर के तट पर मुनियों को वेद मंत्र जपते देख अश्व से उतर के राजा उनके सन्मुख ठाढ़ हुये, फिर व्रत करने वाले मुनियों को पृथक् पृथक् बन्दना और दोनों हाथ जोर उन्हें दण्डवत् प्रणाम किये,

वह उत्तम राजा बहुत प्रसन्न हुये, वे मुनि गण भी प्रसन्न होकर राजा से बोले कि हम तुम्हारे ऊपर प्रसन्न हैं। हे राजन्! जो तुम्हारे मन में हो अर्थात् जो तुम्हारी इच्छा हो सो कहो! तब राजा बोले कि तपस्वियों! आप कौन हैं? और आप का क्या नाम है? और आप किस कार्य्य से यहां आये हैं सब यथावत् हमसे कहिये, मुनि बोले हे राजा! हम लोग विश्वदेव हैं और यहां स्नान करने आये हैं, हे राजन्! आज पुत्रदा नाम्नी एकादशी है आज से पांचवे दिन माघ आरंभ होगा। पुत्र की इच्छा करने वालों को यह शुक्ल पक्ष की पुत्रदा एकादशी पुत्र देती है। राजा बोले कि पुत्र के उत्पन्न करने में मुझे यह बड़ा सन्देह है जो आप लोग मुझ पर प्रसन्न हैं तो मुझको पुत्र दीजिये। मुनि बोले कि हे राजन्! आज के दिन पुत्रदा नाम्नी एकादशी है, यह एकादशी विख्यात है इससे आज ही इसके व्रत को करो हम लोगों के आशिर्वाद और केशव भगवान के प्रसाद से हे राजेन्द्र! तुमको अवश्य पुत्रकी प्राप्ती होगी। इस प्रकार उन मुनियों के वचन अर्थात् आदेश से राजा ने उत्तम व्रत को किया, पुनः वह राजा द्वादशी में पारण किया और उन मुनियों को बारम्वार प्रणाम करके अपने गृह को आया और उनकी रानी को गर्भ धारण हुई मुनियों के आशीर्वाद और पुत्रदा के प्रभाव से यथा काल में पुण्यात्मा और तेजस्वी पुत्र उत्पन्न हुआ। वह प्रजा पालन में तत्पर और पितर उसके सन्तुष्ट हुये।

हे राजन्! इस कारण पुत्रदा एकादशी का व्रत करना चाहिये। लोकों के हित के निमित्त तुम्हारे आगे मैंने कहा, मृत्यु लोक में जो इस पुत्रदा एकादशी का व्रत करते हैं उन मोक्ष भागियों को अवश्य पुत्र होता है। हे राजन्! इसके पढ़ने और सुनने से अश्वमेध यज्ञ का फल प्राप्त होता है।

इति श्री भविष्योत्तरपुराणे पौष शुक्ल पुत्रदा
एकादशी माहात्म्य भाषा संपूर्णम् ॥४॥

एक समय में दाल्भ्य ऋषि पुलस्त्य मुनि से पूछे कि जीव मृत्युलोक में प्राप्त होकर ब्रह्म हत्या आदि नाना प्रकार के पाप संयुक्त होते हैं। पराया द्रव्य लेने वाले और पराये व्यसन से जो मोहित होते हैं वे जिस

प्रकार नरक में न जायँ। हे ब्राह्मण! वह तत्व कहिये। हे भगवन्! जिस अल्प दान के करने से अनायास ही पाप शमन हो जाय सो वर्णन करिये।

दाल्भ्य ऋषि का वचन सुनकर पुलस्त्य मुनि बोले हे महाभाग! तुम साधु हो वह उदाहरण गुप्त है जिसको ब्रह्मा, विष्णु और इन्द्रादि देवताओं ने कभी किसी से नहीं कहा है। हे द्विजोत्तम्! वही तुम्हारे पूछने से मैं कहता हूं जब माघ मास आरम्भ होता है तब पवित्र पूर्वक स्नान करे और जितेन्द्रि रहे, काम, क्रोध, अभिमान, इर्ष्या, लोभ और पिशुनता से वर्जित रहे जलसे पाद प्रक्षालन करके विष्णु भगवान का स्मरण करे। भूमि में जो न गिरा हो ऐसे गोबर को ले आकर उसमें कपास और तिल मिलाकर पिण्ड बनावे, और उसका एक सौ आठ पिण्ड बनाकर कुछ कार्य का विचार न करे और यदि हो सके तो माघ के आरम्भ ही से यह करे तब स्त्री और पुत्रको देनेवाली कृष्णपक्ष की एकादशी का जो नियम है सो करे, उसका जो विधान है सो हमसे सुनिये! स्नान करके और शुद्ध होके प्रयत्न से देवताओं के देव अर्थात् भगवान की पूजा करे और एकादशी को उपवास करके सर्वदा श्रीकृष्ण के नाम का संकीर्तन करे रात्रि में पहले बनाये हुये एक सौ आठ पिण्डों से होम करे और रात्रि भर जागरण करे तथा शंख, चक्र, गदाधारण करने वाले देवताओं के ईश विष्णु भगवान का पूजन करे। चन्दन, अगर, कपूर, और खांड आदि नैवेद्य चढ़ावे और बारम्बार कृष्ण के नाम का स्मरण अर्थात् जप करे। कोहड़ा और नारियल अथवा बिजौरा पूजे, हे विप्रेन्द्र! इन सब का अभाव हो तो सुपारी ही श्रेष्ठ है। फिर जनार्दन भगवान की पूजा करके अर्घ्य देवे और कहे कि हे कृष्ण! हे कृपालु! तुम अगति को गति प्रद हो अर्थात् जिनकी गति नहीं उनको गति (उद्धार करने वाले) देने वाले हो, संसार सागर में जो डूबे हैं उनके ऊपर प्रसन्न रहिये, हे पुण्डरीकाक्ष! आपको नमस्कार है हे विश्व भगवान! आप को नमस्कार है! हे पूर्वज! सुब्रह्मण्य! हे महापुरुष आपको नमस्कार है, हे जगत्पति मेरे दिये हुये अर्घ्य को लक्ष्मी के सहित ग्रहण कीजिये। उसके पश्चात् छत्र उपानह और वस्त्र से ब्राह्मण की पूजा

करे और जलसे भरे कलश को दान करे वो कहे कि श्रीकृष्ण भगवान में मेरी प्रीति हो।

हे द्विजोत्तम! शक्ति के अनुसार कृष्णा गौ का दान देवे, और उस दिवस पात्र में तिल भरकर विद्वान् और श्रेष्ठ ब्राह्मण को दान देना चाहिये। हे मुनि! कृष्ण और श्वेत दोनों तिल भोजन स्नान आदि में उत्तम है इनमें से यथा शक्ति उत्तम ब्राह्मण को दान देना चाहिये। दान किये हुये तिल को खेत में बोने से जितने तिल उत्पन्न होंगे उतने ही सहस्र वर्ष पर्यन्त स्वर्ग लोक में आनन्द प्राप्त करेंगे। तिल से स्नान करे तिलको शरीर में लगावे, तिल से होम करे, और तिल को जल में मिला कर पीवे, तिल का भोजन और तिलका दान ये छः प्रकार के तिल पापों को नाश करने वाले हैं।

नारद जी श्रीकृष्ण से बोले कि हे श्रीकृष्ण! हे महाबाहो! हे भक्त-भावन! आपको नमस्कार है यादव! यदि आप मेरे ऊपर संतुष्ट हैं तो यह षट्तिला एकादशी के फल का उपाख्यान हमसे कहिये कि उसका फल किस प्रकार प्राप्त होता है? यह सुनकर श्रीकृष्ण जी नारद जी से कहने लगे कि हे ब्राह्मण! जैसा वृतान्त मैंने देखा है वैसा तुमसे कहते हैं। हे नारद! पुरातन कालमें मृत्युलोक में एक ब्राह्मणी रहती थी वह भक्ता स्त्री महीने भरके सब व्रतों और सर्वदा देव पूजा तथा व्रत में लीन रहती थी। हे द्विजोत्तम! कृष्ण के व्रत संयुक्त मेरी पूजा में वह तत्पर थी और नित्य के व्रत उपवास के कारण उसका शरीर खिन्न होगई थी। वह बुद्धिमती स्त्री दीन अर्थात् दरिद्री ब्राह्मण और कुमारी कन्या को भक्ति पूर्वक सर्वदा गृह आदि दान दिया करे। हे ब्राह्मण! वह स्त्री अत्यन्त कठिन व्रत में तत्पर थी। अन्नदान से उसने ब्राह्मण और देवताओं को नहीं तृप्त किया उसके बहुत काल के बाद मैंने विचार किया कि उन कठिन २ व्रतों के करने से निःसन्देह उस की शरीर शुद्ध होगई परन्तु उस स्त्री ने कारण से क्लेशित हुये अर्थात् क्षुधार्त को अन्नदान नहीं दिया जिससे परम तृप्ति हो, हे ब्राह्मण! इस जिज्ञासा से मैं मृत्युलोक में आया और भिक्षुक का रूप धारण कर और भिक्षुकपात्र लेकर उससे जाचना की। तब वह ब्राह्मणी पूछी कि हे ब्राह्मण! तुम कहां से आये हो? जहां से आये

हो सो कहो, परन्तु मैंने पुनः यही कहा कि हे सुन्दरी भिक्षा दो ! तब वह क्रोधित होकर मृत्तिका एक पिण्ड हमारे ताम्र पात्र में डालदी । तब फिर हम स्वर्ग को चले गये । इसके पश्चात् महा व्रत करने वाली वह तपस्विनी अपनी व्रतचर्य्या के प्रसाद से स्वर्ग में आई । हे विप्रर्षि ! उस मृत्तिकाके पिण्ड के प्रभाव से अन्न और कोश अर्थात् धन रहित मनोहर गृह उसको प्राप्त हुई । हे द्विज ! जब उसने गृह में प्रवेश किया तो वहां कुछ नहीं देखी, तब गृह से निकली और मेरे निकट आई और महा क्रोधित होकर कहा कि मैंने अनेक चन्द्रायण, उपवास और व्रत करके विष्णु भगवान की आराधना पूजा किया ! परन्तु हे जनार्दन ! मेरे भवन में कुछ भी धन नहीं दिखाता है तब मैंने उससे कहा कि जैसे तू आई है उसी प्रकार गृह को चली जा । देवस्त्रियां कौतूहल वश तुमको देखने आवेगी, जब देवताओं की पत्नियां विस्मय से तुमको देखने आवे तब तुम द्वार मत खोलियो और उनसे पट्तिला एकादशी का पुण्य मांगियो । हे नारद ! ऐसे सुनकर जब वह मानुषी चली गई तब उसी समय में देवताओं की पत्नी उसके यहां आईं वे स्त्रियां वहां कही कि हम तुमको देखने आई है हे सुन्दरी ! द्वार खोलो ! तुम्हारी सुन्दर मुख देखूं ! मानुषी बोली ! यदि मेरे को देखना चाहो तो मेरे कार्य्य से सत्यवाक्य बोलो और द्वार उद्धारन के नियम पट्तिला एकादशी का पुण्य दो यह सुन कर उनमें से एक भी पट्तिला व्रत के नाम न से बोली फिर एक स्त्री बोली कि मानुषी हम को देखना है उसके पश्चात् द्वार खोलकर ये स्त्रियां उस मानुषी को देखीं वह न तो गंधर्वी है, न पन्नगी न देवी है और न आसुरी है । हे द्विजश्रेष्ठ ! जैसी स्त्री पूर्व में इन्होंने देखी थी वैसी ही वह भी थी । उन देवियों के उपदेश से उस मानुषी ने मुक्ति और भुक्ति के देनेवाली पट्तिला एकादशी के व्रत को सत्य संकल्प से किया, तब क्षण मात्र में रूपवती और कांतियुक्त हो गई और धन, धान्य, सुवर्ण चांदी और वस्त्र से, पट्तिला के प्रभाव से उसका गृह भर गया अत्यन्त तृष्णा न करनी चाहिये और धन की शठता वर्जित है अपने धर्म के अनुसार तिल और वस्त्र दान देने से जन्म जन्मान्तर में आरोग्यता की प्राप्ति होती है । हे श्रेष्ठ द्विज ! पट्तिला की उपासना करने से दुर्भाग्य, दरिद्रता और कष्ट कुछ नहीं होते हैं । हे राजन् ! इस विधि

से पट्तिला अर्थात् तिल दान देने से निःसन्देह समस्त पाप छूट जाते हैं। इसमें कुछ विचार नहीं करना चाहिये।

हे श्रेष्ठ मुनि! सम्यक विधि से दिया हुआ दान संपूर्ण पापों को नाश करने वाला है और अनायास शरीर में किसी प्रकार की बाधा और दुख नहीं होता है।

इति माघ कृष्ण पट्तिला एकादशी माहात्म्य
भाषा सम्पूरणम् ॥ ५ ॥

श्री युधिष्ठिर महाराज श्रीकृष्ण से पूछे कि हे साधु! हे आदिदेव! जगत्पति श्रीकृष्ण! आप स्वेदज अण्डज, और जरायुज के मूल हैं, इनके उत्पन्न करने वाले आपही हैं, माघके कृष्ण पक्षकी एकादशी आपने पट्तिला कही, अब शुक्ल पक्षमें जो एकादशी होती है उसको कृपा करके कहिये, उसका नाम और विधि क्या है? तथा उसमें कौन देवता की पूजा की जाती है,। यह सब सुन श्रीकृष्ण भगवान भक्तहितकारी बोले कि हे राजेन्द्र माघ मास के शुक्ल पक्ष में समस्त पापों को हरने वाली जया नाम की जो एकादशी प्रसिद्ध है उसको मैं कहता हूं। यह पवित्र एकादशी पापों को नाश करने वाली तथा मोक्ष को देनेवाली इससे परे और दूसरी कोई नहीं है इस कारण यत्न पूर्वक इसका व्रत करना उचित है। हे राजशार्दूल! पुराणकी शुभ कथा सुनिये, इसकी महिमा पद्म पुराण में मैंने वर्णन की है।

एक बार स्वर्ग-लोक में राज्य करते थे और देवता उस मनोहर स्थान में सुख पूर्वक निवास करते थे। जहां नन्दवन में पारिजातक सुशोभित और अमृत पीने के लिये अप्सरागण जिनकी सेवा करती हैं। हे राजन्! जहां देवता अप्सराओं से सदा क्रीड़ा करते हैं तहां एक समय इन्द्र अपनी इच्छा से विहार करते थे। एक समय वह इन्द्र बहुत प्रसन्नता से करोड़ नायिकाओं को नचाने लगे और पुष्पदन्त नामक गंधर्व पचास समेत सब गंधर्व वहां गान करते थे। वहां चित्रसेन उनकी कन्या और मालिनी नामकी उसकी स्त्री आई, मालिनी से उत्पन्न पुष्पवान का एक गंधर्व और पुष्पदन्त का माल्यवान नामक पुत्र पुष्पवान गंधर्व की कन्या पुष्पवती माल्यवान गंधर्व पर अत्यन्त मोहित हो

गई, और काम के तीक्ष्ण वाण से पुष्पवती की शरीर वेधित हो गई तब वह स्वरूप और लावण्य से सम्पन्न पुष्पवती गंधर्व अपने भाव और कटाक्ष से से माल्यवान को अपने वश में कर लिया। हे राजन्! उसके रूप और लावण्यता को सुनिये। चन्द्रमा के समान उसका मुख, और उसके नेत्र श्रवण तक विस्तृत था, उसकी भुजा ऐसी है मानो काम देवने कण्ठ-पास बनाया है। हे नृपोतम! उसके कानों में कुण्डल सुशोभित थे, दिव्य आभूषणों से विभूषित कपोत के समान कण्ठ, पुष्ट और ऊंचे दोनों कुच उसके और मुष्टि तुल्य अर्थात् पतली कमर और नितम्ब तथा जान्ञ बहुत विस्तीर्ण, उसके चरण की कांति लाल कमल के समान शोभायमान ऐसी सुन्दर शोभा उस पुष्पवती को देख कर माल्यवान उस पर मोहित होगया। इन्द्र को प्रसन्न करने के निमित्त दोनों वहां आकर अप्सराओं के संहित गान करने लगे। परस्पर मोहित हो जाने के कारण दोनों का चित्त भ्रम में हो गया और शुद्ध राग नहीं आने लगे। परस्पर वह उससे और वह उससे दृष्टि मिलाने लगे कामदेव के वाण के वश में हो गये।

समयानुसार ताल और राग की गति भंग होने से इन्द्र उन दोनों के मानसिक विचार को जान गये। तब इन्द्र अपनी अवज्ञा सोच उन दोनों के ऊपर क्रोधित होकर उन दोनों को शाप दिये। रे मूढ़! पापियों! तुम दोनों को धिक्कार है, मेरी आज्ञा भंग करने वाले तुम दोनों स्त्री पुरुष पिशाच स्वरूप हो जाओ और मृत्यु लोक में जाकर अपने किये हुये कर्मों का फल भोगो इस प्रकार इन्द्र से शापित होकर वे दोनों मनमें दुःखित हुये। और इन्द्र से शापवश हिमालय पर्वत पर दोनों पिशाचत्व को प्राप्त होकर महा दुःख को प्राप्त हुये।

वहां महा कष्ट से उन दोनों का मन महा सन्तप्त हुये और शाप से मोहित रहने के कारण गन्ध तथा स्पर्श आदिका ज्ञान नाश हो गया। वे पाप करने वाले उष्णता से पीड़ित हुये, और उन्हें नींद तथा सुख की प्राप्ति अपने किये हुये कर्म के कारण न हुये। और उस गंभीर पर्वत पर तुषार से उत्पन्न, शीत से पीड़ित होकर परस्पर बात चीत करने लगे। शीतार्त हो जाने से उस पिशाच की शरीर रोमाञ्चित होगया, अपना दन्त पीसता हुआ वह पिशाच अपनी पत्नी पिशाचिनी से बोला कि हम दोनों

ने कौनसा अत्यन्त दुखदायी पाप किया है जिस दुष्कर्म से हम को पिशाच होना पड़ा, पिशाचत्व प्राप्त करना दारुण अर्थात् महान् नरक को जाना है। इस कारण यत्न पूर्वक पाप न करें। वे वहां अत्यन्त दुःख में निमग्न होकर इस प्रकार की चिन्ता करने लगे। और दैव संयोग से माघ मासके शुक्ल पक्ष की एकादशी उन दोनों को प्राप्त हुआ, जिस दिवस तिथियों में उत्तम और प्रसिद्ध जया नाम्नी एकादशी तिथि प्राप्त होती है। जब वह दिवस प्राप्त हुआ, तब उस दिवस में वे निराहार रह गये। हे राजन्! वहां वे दोनों न तो जीवघात किये और न फल तथा पत्रों ही को भक्षण किये और उस दिवस जल भी नहीं पान किये। हे राजन्! वे दोनों दुःखित होकर एक पीपल वृक्ष के निकट पड़े रहे और उनको उसी दशा में छोड़कर सूर्य्य भगवान अस्ताचल को चले गये। महाशीतकारी निशा प्राप्त होने पर वे हिमके कारण कांपने लगे और मरे के समान हो गये रात्रि भर परस्पर शरीर और भुजा से भुजा मिलाये रहे न तो उन दोनों को निद्रा आई और न रति अर्थात् मैथुन की इच्छा हुई और न कुछ सुख प्राप्त हुआ। हे राज-शार्दूल! इसी प्रकार इन्द्र के शाप से पीड़ित होकर उन दुखियों की वह रात्रि व्यतीत हुई। जया के व्रत और रात्रि जागरण करने से उन दोनों को उस व्रत के प्रभाव से जैसा हुआ वैसा आप ध्यान देकर सुनिये। हे राजन्! जया के व्रत और विष्णु के प्रभाव से द्वादशी का दिन आया उस द्वादशी के प्राप्त होते ही दोनों का पिशाचत्व छूट गया। बाद पुष्पवती तथा माल्यवान अपने पूर्व स्वरूप पुरातन स्नेह और पूर्व के अलंकारों से अलंकृत हो गये तब दोनों विमान में आरूढ़ होकर और अप्सरागण तथा तुम्बरु आदि प्रमुख गंधर्व उनकी स्तुति करने लगे, हाव भाव करते हुये मनोहर स्वर्गलोक को गये और वहां इन्द्र के सन्मुख जाकर प्रसन्नता से उनको प्रणाम किये। उनको पूर्व की भांति देख विस्मित हो इंद्र उनसे पूछने लगे कि किस पुण्य से तुम्हारा पिशाचत्व दूर हुआ सो कहो! किस देवता ने तुम्हारे ऊपर से शापको हटाया। तब माल्यवान बोला कि वासुदेव के प्रसाद और विजया के व्रत से। हे स्वामिन्! मैं सत्य कहता हूं कि भक्ति के प्रसाद से पिशाचत्व छूट गया। उसका यह वचन सुन कर इन्द्र पुनः कहने लगे कि विष्णु की भक्ति में परायण और हरि-

वासर को करने वाले पवित्र और पावन तुम को भी वन्दनीय हुये। जो मनुष्य विष्णु तथा शिवकी भक्ति में रत रहते हैं वे निःसन्देह हमारे भी पूजा और वन्दना के योग्य हैं। फिर पुष्पवती माल्यवान् के साथ सुख-पूर्वक देवलोक में विहार करने लगे। हे राजन्! इस कारण हरिवासर अर्थात् एकादशी का व्रत करना चाहिये। हे राजन्! जया का व्रत ब्रह्महत्या को भी हरने वाला है, उसने सम्पूर्ण दान दिये और सब यज्ञ किये और सब तीर्थों में अच्छी तरह से स्नान किये जिसने जया एकादशी का व्रत किया। जो मनुष्य, भक्ति और श्रद्धा से जया का व्रत करते हैं वे अवश्य सौ कल्प पर्यन्त वैकुण्ठ में आनन्द पूर्वक रहते हैं। हे राजन्! इसके माहात्म्य को पढ़ने और सुनने से अग्निष्टोम यज्ञ का फल होता है।

इति श्री भविष्योतर पुराणे माघ शुक्ल जया एकादशी माहात्म्य भाषा संपूरणम् ॥ ६ ॥

एक समय में श्री युधिष्ठिर महाराज श्रीकृष्णजी से पूछे कि हे वासुदेव! फाल्गुण के कृष्ण पक्षमें जो एकादशी होती है उस का क्या नाम है आप कृपाकर उसका वृत्तान्त हमसे कहिये। श्रीकृष्ण जी युधिष्ठिर जी से कहने लगे कि हे राजेन्द्र! फाल्गुन के कृष्णपक्षमें जो एकादशी होती है विजया उसका नाम है और यह एकादशी व्रत करने वालों को सदा विजय देने वाली है और उसका जो माहात्म्य है सो मैं कहता हूं। उसके व्रत का माहात्म्य समस्त पापों को हरने वाला है।

एक समय नारद मुनि कमलासन ब्रह्मा से पूछे कि हे देवताओं में श्रेष्ठ! फाल्गुन मास के कृष्णपक्षमें विजया नाम्नी जो तिथि होती है उसका व्रत कृपाकर के आप हमसे कहिये। इस प्रकार नारद मुनि के पूछने पर ब्रह्माजी कहने लगे कि हे नारद! पापों को हरने वाली उत्तम कथा मैं कहता हूं तुम ध्यान देकर सुनो?

एक पुरातन पवित्र और पापों को नाश करने वाले विजया के व्रतको मैंने किसी से वर्णन नहीं किया था। विजया एकादशी निःसन्देह मनुष्यों को जय देती है, जब रामचन्द्र चौदह वर्ष के लिये तपोवन को गये और सीता लक्ष्मण समेत पञ्चवटी में निवास करते थे और वहां

निवास करते समय महात्मा रामचन्द्र की आर्य्या सीता नाम्नी तपस्विनी को रावण हर कर ले गया और सीता के विरह में रामचन्द्र महा दुःखी होकर वन में भ्रमण करते हुये जटायु को मरा हुआ देखकर, पश्चात् उस वनमें घूमते हुये कवन्ध नामक असुर को वध किये बाद जब फिर जटायु के पास आये तो राम २ कहता सुन उस से पूछे तो वह जटायु सीताका सब समाचार बता कर फिर मृत्यु को प्राप्त हुआ।

बाद वहां से अरण्य वनको आये वहां पर वानरों का राजा सुग्रीव राज करता था उससे मित्रता किये और रामचन्द्र के कार्य निमित्त वानरों की सेना इकट्ठी हुई। तदनन्तर हनुमान जी लंकापुरी के उपवन में जानकी को देखे, और जानकी को रामचन्द्र का दिया हुआ चिह्न देखकर महान कार्य करके पुनः रामचन्द्र के यहां आये और लंका का समस्त वृत्तान्त उनसे निवेदन किये। पश्चात् हनुमानजी का वाक्य सुनकर और सुग्रीव से परामर्श करके रामचन्द्र प्रस्थान किये और वानरों की सेना समेत समुद्र के तटपर आकर वानरों के प्रिय रामचन्द्र समुद्र को देखकर विस्मित हुये और जलभरे नेत्र से लक्ष्मण से कहने लगे हे सौमित्र! किस पुण्य से इस समुद्र को पार किया जाय। यह मगर और मीन से भरा हुआ अगाध जल से परिपूर्ण है मैं कोई उपाय नहीं देखता हूं जिससे उस पार जाया जाय। लक्ष्मण जी बोले कि आदि देव आपही हैं हे पुराण पुरुषोत्तम! वकदाल्भ्य मुनि इसी द्वीप के अन्तर्गत रहते हैं। हे राघव! हमारे यहां से अर्ध योजन अर्थात् दो कोसपर उनका आश्रम है। हे रघुनन्दन! वह बहुत से ब्रह्मा को देखे हुये हैं। हे राजेन्द्र! उन्हीं श्रेष्ठ ऋषि से जाकर पूछिये। बाद लक्ष्मण जी का यह मधुर वचन सुनकर रामचन्द्र जी महा मुनि वकदाल्भ्य के दर्शन हेतु वहां पर गये और उस महा मुनि को द्वितीय विष्णु के सदृश बैठे हुये देखकर प्रणाम किये। तब रामचन्द्र को पुराण पुरुषोत्तम जानकर वे ऋषि उनसे पूछे कि आप किस कारण से मनुष्य का रूप धारण किये हैं? हे रामचन्द्र! आपका आगमन यहां कैसे हुआ? रामचन्द्र कहने लगे कि हे विप्रेन्द्र! आपकी कृपा से राक्षसों के सहित लंका

जीतने के निमित्त अपनी सेना समेत यहां समुद्र तटपर में आया हूं। हे मुनि! आपकी अनुकूलता से जैसे मैं समुद्र पार हो सकूं सो आप कृपा करके कहिये। तब मुनि कहने लगे कि हे रामचन्द्र! मैं सब व्रतों में उत्तम व्रत को कहता हूं जिसके करने से शीघ्र विजय होगी और राक्षसों समेत लंका जीतके बहुत कीर्ति को प्राप्त कीजियेगा। सो आप एकाग्रचित से इस व्रत को कीजिये। हे राम! फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष में विजया नाम्नी एकादशी होती है उसका व्रत करने से आपकी विजय होगी और निःसन्देह वानरों सहित समुद्र पार होंगे। हे रामचन्द्र! इस फलदाई व्रतकी विधि चित्त लगाकर सुनिये। दशमी के दिवस सोना, चांदी, तांबा, मृत्तिका का एक कलश बनावें और उस कलश को जल से भर कर और पल्लवों से सुशोभित करके स्थण्डिल के ऊपर सप्तधान्य रखकर कलश को स्थापित करे और उसके ऊपर सोने की बनी हुई नारायण की प्रतिमा स्थापन करे। एकादशी के दिवस प्रातः कालमें स्नान कर और सुगन्ध माला चढ़ाय के उस कलश कोनिश्चल स्थापित करे और ऊपर कसोरा में जौ रखकर अनार, नारियल; आदिसे अच्छे प्रकारसे पूजन करे और उस दिन गंध, धूप, दीप और विविध प्रकार के के नैवेद्य से कलश के ऊपर नारायण की मूर्ति का भक्ति भाव से पूजन करे और उस मूर्ति के सम्मुख भर रात्रि जागरण करे फिर द्वादशी के दिन सूर्य के उदय होने पर नदी, सरोवर, अथवा किसी जलाशय में उस कुम्भ को स्थापित करके विधि पूर्वक उसका पूजन करे। हे राजेन्द्र! फिर बहुत से दानके सहित उस कुम्भ को दैवज्ञ ब्राह्मण को दान कर देवे हे राम! इस विधि से सेनापतियों के समेत यत्न पूर्वक व्रत कीजिये उससे विजय होगी।

मुनिका यह वचन सुनकर जैसा उन्होंने कहा उसी प्रकार रामचन्द्र व्रत को किये और उस व्रत के करने से रामचन्द्र विजय को प्राप्त हुये। हे राजन! जो मनुष्य विधिवत् व्रत करेंगे उनकी इस तथा परलोक में सदा विजय होगी। ब्रह्माजी नारद जी से बोले कि हे पुत्र! इस कारण विजया का व्रत करना चाहिये। उसके पढ़ने और सुनने से वाजपेय यज्ञ का फल मिलता है।

इति श्रीस्कन्द पुराणे फाल्गुन कृष्ण विजया एकादशी माहात्म्य समाप्त॥७॥

एक समयमें मान्धाता वसिष्ठ जी से पूछे कि हे महाभाग ! ब्रह्मर्षीने ! यदि मेरे ऊपर आप अनुकूल हैं अर्थात् आपकी कृपा है तो ऐसा व्रत वर्णन कीजिये जिससे मेरा कल्याण होवे। वसिष्ठ मुनि बोले कि रहस्य और इतिहास सहित व्रतों में उत्तम और समस्त फलको देनेवाले व्रत को मैं आपसे कहता हूं हे राजन् आमला का व्रत बड़े २ पापों को नाश करने वाला और सब लोगों को तथा एक हजार गोदान देने का फल तथा मोक्ष को देनेवाला है। हिंसा में तत्पर व्याधा को जैसे मुक्ति प्राप्त हुई उसका उदाहरण यहां देता हूं हृष्टपुष्ट मनुष्यों और ब्राह्मण क्षत्री वैश्य तथा शूद्र सम्पन्न वैदिश नामक एक नगर है। हे राजशार्दूल ! उस सुन्दर और श्रेष्ठ नगर में नास्तिक और दुर्वृत्ति वाला मनुष्य कोई नहीं वास करते थे और वेद ध्वनि से वह नगर प्रतिध्वनित होता था उस नगर में प्रसिद्ध चन्द्रवंशीय पाशविन्दुक राजा के वंश में चैत्ररथ नामक धर्मात्मा और सत्यग्रही राजा उत्पन्न हुये। वह राजा दश हजार हाथी के समान बली और लक्ष्मी से सम्पन्न तथा षट्-शास्त्रों का ज्ञाता थे और उस धर्मात्मा और धर्मज्ञ पृथिवी पति के शासन काल में निर्धन और कृपण कहीं भी नहीं दिखाई देते और उसके राज्य शासन में सर्वत्र कल्याण सुकाल और आरोग्यता रहती थी दुर्भिक्ष कभी नहीं होती थी। उसके नगर निवासी विष्णु की सदा भक्ति करते थे और राजा भी विशेष रूप से शिवजी की पूजा में तत्पर रहते थे। द्वादशी युक्त एकादशी या कृष्ण पक्षकी हो अथवा शुक्ल पक्ष की हो उसमें कोई भोजन नहीं करते थे सब धर्मों को परित्याग कर केवल विष्णु का भक्तिमें परायण रहते थे महाराज ! इसी प्रकार सबको विष्णु भक्ति में और सुख पूर्वक रहते हुये अनेकों वर्ष व्यतीत होगये। इसी प्रकार कुछ कालमें फाल्गुन मासकी शुक्ल पक्षके द्वादशी संयुक्त आमलकी नाम्नी पुण्य तिथि प्राप्त हुई। हे राजा उसको प्राप्त होकर सब बाल वृद्ध और राजा नियम से उस एकादशी का व्रत किये उस व्रतका महाफल जानकर नदीके जलमें स्नान कर उसीके तटपर विष्णु भगवानके देवालय में वह राजा ! सबके सहित गये और जलसे भरे हुए कलश को छत्र तथा उपानद से युक्त करके पञ्चरत्न से विभूषित और दिव्य सुगन्धों से सुगन्धित करके स्थापित किये दीपमाला से संयुक्त और परशुरामके साथ मुनियोंके समेत सावधानतासे पूजा करते थे। हे परशुराम !

हे रेणुकाके दुखके बढ़ाने वाले आमल की छायासे मुक्ति भुक्तिको देनेवाले आपके लिये नमस्कार है। हे धात्रि! हे ब्रह्मा! से उत्पन्न समस्त पापोंको नाश करने वाली आमलकी! तुम्हें नमस्कार है। मेरे अर्घ्य के जल को ग्रहण करो। हे धात्रि! तुम ब्रह्म स्वरूप हो और रामचन्द्र से पूजित हो अर्थात् रामचन्द्र जी ने तुम्हारी पूजा की है, विधिवत् प्रदक्षिणा करने से संसार के सब पापों को हरने वाली हो, इस प्रकार अपनी भक्ति से एकादशी की स्तुति करके सब लोग वहां जागरण करने लगे और उसी समय में एक बहेलिया वहां आया सब धर्मों से वहिष्कृत और परिवार के निमित्त जीवघात करने वाला, क्षुधा और परिश्रम से व्याप्त और बहुत बड़े बोझ से पीड़ित और क्षुधित् वहां आमल की एकादशी का जागरण और उस स्थान को दीपक से भरा हुआ देखकर वहां जाकर बैठगया और अपने मनमें ऐसा विचार करने लगा कि यह सब क्या है। इस तरह से विस्मित हुआ और वहां एक स्थापित कलश के ऊपर दामोदर भगवान को देखा और उस स्थानमें आमले का वृक्ष तथा दीपक और कथा पढ़ने वाले मनुष्यों से विष्णु की कथा सुना और क्षुधि रहने पर भी एकादशी माहात्म्य अच्छी तरह से सुनने लगा। इसी प्रकार विस्मित चित्त से जागरण करने लगा। उसकी रात्रि भी उसी तरह व्यतीत हो गई तब प्रातः काल में सब लोग नगर में प्रवेश किये और "व्याधा" भी अपने घर आकर प्रसन्नता पूर्वक भोजन किया इसके बाद बहुत काल में वह व्याधा मृत्यु को प्राप्त हुआ अर्थात् मर गया और एकादशी के प्रभाव तथा रात्रि के जागरण करने से चतुरंगिनी सेना से वलान्युक्त राज को प्राप्त किया। जयन्ती नामकी एक नगरी है वहां विदुरथ नामक राजा राज्य करते थे। वह सुरथ नामसे महावली उसी राजा का पुत्र हुआ और धन धान्य तथा चतुरंगिनी सेना से युक्त निर्भय होकर दश हजार ग्रामों को भोग करते हुये आदित्य के समान अर्थात् सूर्य के सदृश्य तेजस्वी चन्द्रमा के समान कांति वान विष्णु के समान पराक्रमी क्षमा में पृथ्वी के समान और धर्म करने वाला सत्यवादी तथा विष्णु की भक्ति में तत्पर ब्रह्म को जानने वाला शीलवान कर्मकारी और प्रजा को पालन करने में तत्पर और दूसरे के दर्प को हरण करने वाला वह राजा विविध प्रकार का यज्ञ करने लगा और सर्वदा विविध प्रकार का दान

करने लगा। एक समय आखेट को गया दैवयोग से मार्ग भूल गया और वहां राजा को दिशा विदिशा का ज्ञान न रहा और उस एकाकी अर्थात् शून्य सघन् वन में उपाय निर्मूल विचार कर और क्षुधा से अत्यन्त श्रमित होकर वह राजा वहीं पर सो गया। उसी समय में पर्वत निवासी म्लेच्छगण राजा से वैर करके दैव से सन्तापित हुये जहां राजा सोये थे वहां पर आये। तब उस महादानी राजा को घेर कर खड़े हुये और पूर्वके वैर युद्ध भावसे इसको मारो। इसको मारो॥ ऐसे कह कर बोले कि इसने पूर्व जन्म में हमारे पिता, माता, पौत्र, भानजा, और मामा आदि को मार डाला है और हमलोग अपने स्थान से निकाले हुये दशो दिशा में पागल होकर रहते हैं। इतना कह कर वे सब वहां राजा को मारने के लिये उद्यत हो गये। पाश पट्टिश, खड्ग, और धनुष पर बाण चढ़ाय कर सब शत्रुगण राजाको मारने के लिये तत्पर हो गये। सम्पूर्ण शस्त्र राजा के चारो ओर गिरने लगे परन्तु उसके शरीर में प्रवेश नहीं करते थे और वे सब म्लेच्छ भी शस्त्र हीन होजाने से जीव रहित हो गये अर्थात् भय से भय भीत होगये। सम्पूर्ण शस्त्र कुण्ठित हो जाने से वे सब अचेत हो गये और एक पग भी आगे चलने की शक्ति उन म्लेच्छो में न रही और राजा को मारने के लिये जो आये थे वे सब दीन होगये उसी समय में उस राजा के शरीर के सब अंगो से सुन्दर एक स्त्री निकली। दिव्य गंध से युक्त तथा दिव्य आभूषणों से विभूषित दिव्य वस्त्र, और दिव्य माला, धारण किये और टेढ़ी भृकुटी करके क्रोध के वश नेत्रों में से बहुत सी अग्नि वमन करती हुई अद्वितीय काल रात्रि के समान् क्रोधित होकर और चक्र हाथ में लेकर उन अति दुःखी म्लेच्छों के ऊपर दौड़ी, और दुष्कर्म में रत रहने वाले वे म्लेच्छ मारे गये तब राजा निद्रा से जागकर महा अद्भुत काम को देखा और मारे भयसे म्लेच्छ गणों को देखकर प्रसन्न होकर कहने लगे कि हमारे शत्रु अत्यन्त म्लेच्छों को किसने मारा। इस महत् कार्य को किस हमारे हितैषी ने किया। राजा इस तरह से विचार कर रहे थे उसी समय में आकाशवाणी हुई और निष्काम तथा विस्मय से युक्त राजा को बैठे देख कर वह अन्तरिक्ष वाणी बोली कि केशव भगवान के अतिरिक्त शरणागत की रक्षा करने वाला कोई नहीं हैं, इस तरह

से आकाश वाणी को सुनां तब वह धर्मात्मा राजा भी उस बन से सकुशल पूर्वक आकर पृथ्वी में इन्द्र के समान राज्य करने लगा । वशिष्ठ जी बोले कि हे राजन् ! इस कारण से जो मनुष्य इस उत्तम व्रत को करता है वह निसन्देह विष्णु लोक में जाता है ।

इति श्रीब्रह्माण्ड पुराणे फाल्गुन शुक्लामलकी
एकादशी महात्म्य भाषा समाप्त ॥ ८ ॥

युधिष्ठिर जी महाराज एक दिन निश्चिन्त होकर श्रीकृष्ण जी से पूछे कि फाल्गुन मास के शुक्लपक्ष की आमल की एकादशी को मैंने सुना अब यह बताइये कि चैत्र मासके कृष्ण पक्ष को एकादशी को क्या नाम है ? उसकी विधि क्या है । इसलिये हे कृष्ण ! असुर संहारी ! बिहारी ! गोविन्द ! मुझे समझा कर कह सुनाइये । यह बात सुन कर श्री कृष्ण भगवान युधिष्ठिरजी से कहने लगे कि हे राजेन्द्र ! चक्रवर्ती राजा मान्धाता के पूछने से लोमश ऋषिने जिस पाप मोचनी व्रत को कहे सो आपसे मैं कहता हूं । लोमश ऋषि से मान्धाता बोले कि हे भगवन् ! लोकों के हितार्थ चैत्रमास के कृष्ण पक्ष की एकादशीमैं सुनना चाहता हूं सो उसका क्या नाम है उसकी विधि क्या है ? यह सब आप मुझसे कृपा करके कहिये

लोमश ऋषि मधुर भाषण सुनकर कहने लगे कि चैत्रमास के कृष्ण पक्ष की एकादशी का नाम पापमोचनी है वह पिशाचत्व का नाश करती है । हे राज शार्दूल ! कामना और सिद्धि को देनेवाली कथा आप श्रवण कीजिये यह विचित्र कथा पाप को हरने वाली तथा शुभ फल और धर्म को देनेवाली है ।

पुरातन काल में अप्सराओं से सेवित कुबेर के वन में वसन्त ऋतु के मास होने पर कुसुमित हुये वनमें किन्नरों के साथ में गन्धर्वो की कन्या विहार करती थी और इन्द्रादि देवता वहां क्रीड़ा करते थे । चैत्रथ के वन से सुन्दर दूसरा वन और कोई नहीं था, उस बनमें बहुत से मुनि तप करते हैं और देवताओं के सहित चैत्र तथा बैशाख में इन्द्र वहां क्रीड़ा करते और मेधावी नामक श्रेष्ठ मुनि को मोहित करने का उपाय करती थीं और मंजुघोषा प्रसिद्ध अप्सरा उस मुनि का भाव जानने की चिन्ता करतीं थी परन्तु उस मुनिके भावसे उनके आश्रम के निकट एक कोसपर ठहर गई

और मधुर स्वर से गान करने लगी अर्थात् वीणा बजाने लगी । पुष्प चन्दन से लिप्त और गान करते हुये देख कर कामदेव भी शिवजी के भक्त मुनि को जीतने की इच्छा से शिवजी का वैर स्मरण करके उसके शरीर में संसर्ग करते हुये और उस अप्सरा के भौंह को धनुष बनाय कर उसके कटाक्ष रूपी मत्यंचा पर क्रम पूर्वक उसके नेत्र रूपी बाण को चढ़ा कर और दोनों कुचों को पत्रकुटी बनाकर विजय के हेतु उपस्थित हुआ । और मंजुघोषा वहां कामदेव की सेना हो गई और मेधावी मुनिको देखकर वह भी काम से पीड़ित हो गई । मेधावी मुनि जौवन से भरे हुये वहां अत्यन्त शोभायमान हुये च्यवन ऋषि के सुन्दर आश्रम में श्वेत यज्ञोपवीत पहिरे हुये मेधावीमुनि दूसरे कामदेव के समान शोभायमान हुये । उस श्रेष्ठ मुनि को देखकर मञ्जुघोषा उसी जगह ठहर गई और मदन के वशमें होकर धीरे धीरे गाने लगी चूरी और नुपूरका शब्द करती हुई भाव सहित उस अप्सरा को गान करती हुई देख कर वह श्रेष्ठ मुनि चौंक पड़े, तब कामदेव उस मुनि को अपनी सेना से बल पूर्वक अपने वश में कर लिये और मञ्जुघोषा धीरे २ मुनिके निकट आकर उनको कामके वश में देख कर वह अप्सरा अपने हाव भाव और कटाक्षों से मुनिको मोहित कर ली । और वीणा को नीचे रख कर उस मुनिश्वर को इस प्रकार आलिङ्गन की जैसे वायु के वेगसे व्याकुल होकर लता वृक्ष से लिपट जाय । तब वह मुनि श्रेष्ठ मेधावी भी उससे क्रीड़ा करने लगे । इस वन में उस अप्सरा की उत्तम देह देखकर मेधावी मुनि का शिवतत्व छूट गया और वे कामतत्व के वश हो गये और वह कामी मुनि विहार करने में दिन और रात्रि को भी न जाने इसी प्रकार मुनि का आचार लोप करने वाला बहुत काल व्यतीत हुआ तब मञ्जुघोषा देवलोक में जाने का उपाय को और रमण करते हुये मुनि से ऐसे बोली कि हे श्रेष्ठ मुनि ! अब मुझको अपने स्थान अर्थात् गृह को जाने की आज्ञा दीजिये । तब मेधावी मुनि बोले कि हे सुन्दर मुख वाली ! तू तो अभी संध्याकाल में आई है जब तक प्रातः काल होय तब तक हमारे स्थान पर रह । मुनि की यह बात सुनकर वह भय भीत होकर अर्थात् डर गई और मुनि के शाप से डर कर बहुत वर्षों तक उस श्रेष्ठमुनि को रमण कराई और सतावन वर्ष नव मास तीन दिवस

पर्यन्त वह मुनि के साथ क्रीड़ा करती रही और उतना समय उस मुनि को अर्ध रात्रि के समान व्यतीत मालूम हुआ। उस कालके व्यतीत हो जाने पर वह अप्सरा मुनि से फिर बोली कि हे ब्रह्मन् मुझको अपने गृह जानेकी आज्ञा दीजिये। मुनि बोले कि मेरी बात सुनो! अभी तो प्रातः काल है जब तक मैं सन्ध्या करता हूं तब तक तू स्थिर रह। मुनि की यह बात सुनकर भय से वह व्याकुल हो गई। फिर कुछ हंसकर और विस्मित होकर वह बोली कि हे विप्रेन्द्र! आपकी सन्ध्या का कितना प्रमाण है वह गई या नहीं? मेरे ऊपर कृपाकर उसकाल को भी तो विचार कीजिये कि कितना बीत गया। उसका यह बचन सुनकर विस्मिय हो नेत्र में जलभर कर वह विप्रेन्द्र हृदय में ध्यान करके व्यतीत समय को विचारने लगे और यह जान गये कि इसके साथ सतावन वर्ष व्यतीत हो गया फिर महा कुपित हुये और नेत्रों से चिनगारी छोड़ते हुये और तपस्या को क्षय करनेवाली उस अप्सरा को काल के समान देख कर विचार करने लगे कि दुःख से अर्जिति की हुई मेरी तपस्या को ये क्षय कर दिया। क्रोध से मुनिको ओठ कांपने लगा और सब इन्द्रियां व्याकुल हो गई। तब मेधावी मुनि उस अप्सरा को यह शाप दिये कि तू पिशाचनी हो जा। अरी पापिनी! अरी दुराचारिणी! अरी कुलटा! अरी पातक प्रिये! तुझको धिक्कार है। उस मुनि के शाप से दग्ध होकर वह अप्सरा नम्रता पूर्वक उस मुनि की बिनती की कि हे विप्रेन्द्र! कृपा करके शाप का अनुग्रह करिये। सज्जनों का साथ और उनका वचन सातवें पदमें फल देने वाला है। हे ब्रह्मन्! आपके साथ में तो मेरे बहुत समय व्यतीत हुआ हे स्वामिन्! इस कारण कृपा करके उद्धार कीजिये। मुनि बोले हे भद्रे! शाप का अनुग्रह करनेवाली मेरे बचन सुन तेरे पाप में मैं क्या कहूं तुमने महान् तपको क्षय कर दिया। चैत्र के कृष्ण पक्ष में सब पापों को क्षय करनेवाली पापमोचनी नाम्नी जो शुभ एकादशी होती है। हे सुन्दर भौंह वाली! उसका व्रत करने से पिशाचत्व छूट जायगा, उससे यह कहकर वह मेधावी मुनि पिता के आश्रम को गये। उनको आते हुए देख कर च्यवन ऋषि उनसे पूछे कि हे पुत्र! क्या किया जो तुम्हारा पुण्य क्षय हो गया?

मेधावी बोले कि हे पिता! मैंने बड़ा पाप किया कि अप्सरा से रमण

किया, हे तात ! प्रायश्चित बताइये जिसमें पाप का क्षय होय च्यवन ऋषि बोले कि हे पुत्र ! चैत्र के कृष्ण पक्षमें पापमोचनी नामकी एकादशी होती है उस का व्रत करने से पापों की राशिक्षय हो जाती है, पिता का यह वचन सुनकर उस मुनि ने इस उत्तम व्रत को किये उसके करने से पाप क्षय हो गये और वह पुण्य युक्त हो गये और वह मञ्जुघोषा भी पापमोचनी के उत्तम व्रतको करके पिशाचत्व से मुक्त होगयी और दिव्य रूप धारण करके वह श्रेष्ठ अप्सरा भी स्वर्ग को गयी ! लोमश ऋषि बोले कि पापमोचनी के व्रत का प्रभाव ऐसा ही है । हे राजन् ! इस पापमोचनी के व्रत को जो मनुष्य करते हैं उनके जो कुछ पाप होते हैं वे सब क्षय हो जाते हैं ! हे राजन् ! पढ़ने और सुनने से यह हजार गोदान का फल देनेवाली है, ब्रह्महत्या, भ्रूणहत्या, सुरापान, और गुरु की स्त्री से प्रसंग यह सब पाप इस व्रत के करने से छूट जाते हैं अर्थात् वे समस्त पापों से युक्त हो जाते हैं वह बहुत पुण्यको देनेवाली है इस कारण यह उत्तम व्रत करना चाहिये ।

इति श्री भविष्योतर पुराणे चैत्र कृष्ण पापमोचनी
एकादशी माहात्म्य भाषा संपूर्णः ॥ ६ ॥

सूतजी बोले कि हे देवकी नन्दन ! वासुदेव के पुत्र श्री कृष्ण भगवान को नमस्कार करके महापाप को नाश करने वाली व्रत को मैं कहता हूं । महात्मा कृष्ण जीने जिस नाना प्रकार के पापों को हरने वाले एकादशी माहात्म्य को युधिष्ठिर से कहे हैं और जो अठारह पुराणों में से विगल करके नाना प्रकार की कथाओं से युक्त जिन महात्माओं को संख्या चौबीस होते हैं । हे विप्र ! सावधानी से सुनिये मैं कहता हूं । युधिष्ठिर जी बोले कि हे वासुदेव तुमको नमस्कार है मेरे आगे कहो ।

चैत्र के शुक्ल पक्ष में किस नामकी एकादशी होती है ? श्री कृष्ण जी बोले कि हे राजन् ! इस पुरानी कथा को एकाग्रचित्त से सुनिये । जिसको दिलीप के पूछने से वशिष्ठ जी मुनिने कही है । दीलीप बोले कि हे भगवान ! मैं सुनना चाहते हूं आप प्रसन्न होकर कहिये चैत्रमास शुक्ल पक्ष में किस नामकी एकादशी होती है ।

वसिष्ठ मुनि बोले हे श्रेष्ठ राजा ! तुम साधु हो मैं तुमसे कहता हूं । हे राजन् ! चैत्र शुक्लमें कामदा नामकी एकादशी होती है वह पवित्र एका-

इसी पापरूपी ईन्धन को भस्म करने के हेतु दावानल अग्नि के समान है। पापको भस्म करने वाली और पुत्र देनेवाली की कथा सुनिये।

पुराने कालमें नागों का मुखिया मदोन्मत्त पुण्डरीक नामक नाग स्वर्ण और रत्नों से विभूषित सुन्दर रत्नपुर में निवास करता था। उस नगर में गन्धर्व, किन्नर और अप्सरों से सेवित पुण्डरीक नामक राजा राज्य करता था। वहां ललिता नाम्नी श्रेष्ठ अप्सरा और ललिता नामक गन्धर्व रहते थे। वे दोनों प्रेम से युक्त होकर काम से पीड़ित होते हुये धन धान्य सम्पन्न अपने गृह सर्वदा क्रीड़ा करते थे। और ललिता अप्सरा के हृदय में सदा पति ही ध्यान में रहता था। और ललित के हृदय में उसकी स्त्री ललिता सर्वत्र काल में ध्यान रहता था। एक समय पुण्डरीक आदि गन्धर्वों के साथ ललित गन्धर्व सभा में क्रीड़ा करता था और गीत गान करते हुये ललिता के ध्यान में ललित गन्धर्व की वाणी स्खलित होजाने से पद भंग हो गया, तब उसके मनके भावको जानकर कर्कोटक नामक श्रेष्ठ नाग पदबन्ध भंग होने का कारण पुण्डरीक से कह दिया तब पुण्डरीक के नेत्र क्रोध से लाल हो गये और मदनातुर हुये ललित को पुण्डरीक शाप दिया कि अरे दुर्बुद्धे! तू कच्ची मांस और मनुष्य भक्षक राक्षस हो जाओ जिससे मेरे आगे गान करते हुये पत्नी के वश हो गया। हे राजेन्द्र! उसके वचन से वह राक्षस स्वरूप हो गया। भयानक मुख और बिगड़े हुये नेत्र को देखने मात्र से भय होने लगता। उसकी भुजा एक योजन अर्थात् चार कोस और मुख कन्दरा केसमान और कध दो योजन अर्थात् दो कोस तक हो गया। सूर्य और चन्द्रमा के समान नेत्र तथा पर्वत के समान ग्रीवा, गुफा के समान नासिका का छिद्र, और ओठ दो कोसका हो गया। और हे राज शार्दूल! उसकी शरीर अष्ठ योजन अर्थात् बत्तीस कोस की ऊंची हो गई। ऐसा वह राक्षस अपने कर्मके फलको भोगने लगा। तब ललिता अपने पति को विकृत आकृति में देख महा दुःख से दुःखी होकर मनमें चिन्ता करने लगी कि मेरे पति शाप से पीड़ित हो रहे हैं मैं क्या करूं और कहां जाऊं। मनमें ऐसी चिन्ता करके सुख को न प्राप्त होकर अर्थात् दुःखी हो गई। फिर ललिता अपने पति के साथ गम्भीर बनमें विचरने लगी और वह कामरूप राक्षस दुर्गम विपिन में भ्रमण करते हुये महा घृणित

पाप में रत, कुरूप और मनुष्य भक्षक ताप से पीड़ित होकर रात्रि और दिवस सुख को न प्राप्त हुये । ललिता पति को इस प्रकार देखकर अत्यन्त दुःखी हुई । और रुदन करने लगी, गंभीर वनमें उसके साथ में भ्रमण करने लगी । और भ्रमण करते हुये कदाचित् बहुत कौतुकमय विन्ध्य गिरि के शिखर पर श्रृङ्गी मुनि का परम पुनीत आश्रम देखा । ललिता शीघ्रता से जाकर नम्रता पूर्वक विनय करके स्थित हुई । तब उसको देखकर मुनि बोले कि हे शुभे ! तूं कौन है और किसकी कन्या है ? यहां किस कारण से आई हो सो सब सत्य २ मेरे आगे वर्णन करो । ललिता बोली कि हे महात्मा विरधन्वा नामक गंधर्व है, मैं उसकी पुत्री हूं ललिता मेरा नाम है पति के वास्ते मैं यहां आई हूं हे महा मुनि ! मेरा पति शप्प के दोप से निशाचर हो गया है । हे ब्राह्मण ! उसका भयावन स्वरूप और दुराचार देखकर मुझको सुख नहीं है । हे प्रभो ! मुझको इस समय उसका प्रायश्चित बताइये । हे विप्रेन्द्र ! जिस पुण्य से पिशाचत्व छुट जाय सो कहिये ऋषि बोले कि हे रम्भोरु ! इस समय चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी निकट आई है इसका नाम कामदा है जिसके व्रत करने से मनुष्यकी कामनायें पूर्ण होती हैं । हे भद्रे ! मेरे कहने के अनुसार विधि पूर्वक उसका व्रत करो और उसके व्रत का जो पुण्य है सो उसको अपने पति को प्रदान करो उस पुण्य को देने से क्षण मात्र में उसका शाप दोप समन हो जायगा । हे राजन् तब मुनि की यह बात सुन कर ललिता हर्षित होकर एकादशी का व्रत करके द्वादसी के दिवस में वासुदेव भगवान के सन्मुख बैठ कर ब्राह्मण से ललिता बोली कि अपने पति को तारने के हेतु मैंने कामदा एकादशीका व्रत किया उसके पुण्य प्रभावसे मेरे पतिका पिशाचत्व छुट जाय ललित राक्षस रहने पर भी ललिताके इस वचन से उसी क्षण में पाप रहित होकर दिव्य देह को धारण कर लिया उसका राक्षसत्व जाता रहा और गंधर्वत्व को पुनः प्राप्त किया फिर स्वर्ण और रत्नमय आभूषणों से युक्त ललिता के साथ रमण किया कामदा के प्रभाव से पूर्व से भी अधिक स्वरूप को प्राप्त कर विमान में बैठे हुये दोनों ललिता और ललित शोभायमान हुये हे श्रेष्ठ राजा ! यह जान कर प्रयत्न पूर्वक इसका व्रत करना चाहिये लोगों के हितार्थ तुम्हारे आगे मैंने कहा ब्रह्महत्या

आदि पाप और पिशाचत्व को नाश करने वाली इससे परे चर अचर और तीनों लोक में कोई नहीं है।

इति श्रीब्रह्माण्डपुराणे चैत्र शुक्ल कामदा एकादशी माहात्म्य भाषा सम्पूर्ण ॥ १० ॥

युधिष्ठिर बोले हे वासुदेव! मैं आपको नमस्कार करता हूं वैसाख के कृष्ण पक्ष की एकादशी का नाम और उसकी महिमा क्या है सो आप मुझसे कहिये। श्री कृष्ण बोले हे राजन्! इस लोक तथा परलोक में सौभाग्य प्रदान करनेवाली वैसाख के कृष्ण पक्ष की एकादशी का नाम वरूथिनी है वरूथिनी का व्रत करने से सदा आनन्द होता है पापकी हानि और सौभाग्य की प्राप्ति होता है इसका व्रत करने से दुर्भागिनी स्त्री भी सौभाग्य को प्राप्त होती है यह सब लोगों को भुक्ति और मुक्ति को प्रदान करने वाली है मनुष्यो के सब पापों को नाश करके मुक्ति देनेवाली है वरूथिनी के व्रत से मान्धाता स्वर्ग को प्राप्त हुये धुधुमार आदि बहुत से से राजा तथा शिव भगवान ब्रह्म कपाल से विमुक्त हुये। दश सहस्र वर्ष पर्यन्त तपस्या करने से मनुष्य को जो फल प्राप्त होता है सो फल वरूथिनी के व्रत से मिलता है कुरुक्षेत्र में सूर्य ग्रहण के समय एकभर सोना दान करने से पुरुष को जितना फल मिलता है उतना फल वरूथिनी एकादशी व्रत से प्राप्त होता है जो श्रद्धावान् मनुष्य वरूथिनी के व्रत को करते हैं वे लोक और परलोक दोनों में मानो वांछित फल को प्राप्त करते हैं। हे नृपोत्तम! यह एकादशी महा पापको नाश करने वाली और व्रत करने वालों को पवित्र और पावन करनेवाली तथा मुक्ति भुक्ति प्रदान करनेवाली है। हे श्रेष्ठ राजा अश्व के दानसे गजका दान विशेष है। और गजके दान से भूमि का दान है। उससे अधिक स्वर्णदान और स्वर्णदान से अधिक अन्न दान, अन्न दानसे परे और कोई दान हुआ न होगा। हे नृपोत्तम! पितृ देवता और मनुष्यों को तृप्ति अन्नहीं से होती हैं। कविओं ने उसीके समान अर्थात् अन्नदानके समान कन्यादान को कहे हैं। स्वयम् भगवान ने भी कहे हैं कि गोदान उसी दानकेतुल्य है। और सब दानों से अधिक विद्या दान को कहे हैं। वरूथिनी एकादशी का व्रत करके मनुष्य उस फल को प्राप्त होते हैं। पाप से मोहित हुये जो मनुष्य कन्या के धनसे जीवन

निर्वाह करते हैं। वे मनुष्य महा प्रलय पर्यन्त नरक वास करते हैं। इस कारण सब प्रयत्न से कन्या का धन न ग्रहण करें। हे राजेन्द्र! जो गृहस्थ लोभ से धन लेकर कन्या का विक्रय करते हैं। वे अवश्य दूसरे जन्म में बिलार होते हैं। जो शक्ति के अनुसार आभूषणों से अलंकृत कर कन्यादान करते हैं उनके पुण्य की संख्या करने में चित्रगुप्त भी असमर्थ हैं, उस फल को वरूथिनी एकादशी का व्रत करके मनुष्य प्राप्त करते हैं, कांस पात्र में भोजन मसूर, चना, और कोदों, साक, शहद, दूसरे का अन्न, पुनःभोजन, स्त्री प्रसंग ये दस वस्तुयें व्रत करने वाले वैष्णव को तथा अन्यजनों को भी वर्जित हैं, और जूआ खेलना शयन करना, पान खाना, दतुअन, दूसरे का अपवाद, पिशुनता, और पतितों से भाषण, क्रोध, और मिथ्यावाक्य ये नव कार्य एकादशी को वर्जित है, कांस पात्र में भोजन, मांस, मसूर, शहद, और मिथ्या भाषण, व्यायाम, परिश्रम, दूसरी बार भोजन, मैथुन, अर्थात् स्त्री प्रसंग, लवण, और तेल और दूसरे का अन्न ये बारह वस्तुयें अर्थात् कार्य भी द्वादशी को वर्जित है या नहीं करना चाहिये। हे राजन्! इस विधि से किया हुआ वरूथिनी का व्रत सब पापों को क्षय करके अक्षय गति को देती है। जो रात को जागरण करके जनार्दन भगवान का पूजन करते हैं वे सब पापोंसे मुक्त होकर परम गति को प्राप्त होते हैं। हे राजन्! इस कारण पापभीरु अर्थात् पाप से यमराज से डरे हुए मनुष्य को सम्पूर्ण प्रयत्न से वरूथिनी का व्रत करना चाहिये। हे राजन्! जो इसके पढ़े और सुने उसको हजार गोदान देने का फल होता है। और सब पापों से मुक्त होकर विष्णु लोक को प्राप्त होता है।

इति श्रीभविष्योत्तरपुराणे वैसाख कृष्ण वरूथिनी
एकादशी माहात्म्य भाषा सम्पूर्ण ॥ ११ ॥

युधिष्ठिर जी बोले, हे जनार्दन, वैसाख के शुक्लपक्ष में किस नामकी एकादशी होती है और उसका कौनसा फल है और कौन सी उसकी विधि है सो सब आप मुझसे कहिये। श्री कृष्ण जी बोले कि हे धर्मनन्दन! पहिले रामचन्द्र के पूछने से जिस कथा को वसिष्ठ मुनि ने कहा उस कथा को मैं कहता हूं तुम ध्यान देकर सुनो।

रामचन्द्र बोले कि हे भगवन् ! सब पापों को क्षय करने वाला और सब दुःखों को नाश करने वाला तथा सब व्रतों में उत्तम जो व्रत है उसको मैं सुनना चाहता हूं सीता के विरह के दुःख को मैं भोग चुका हूं। हे महामुनि ! इससे मैं भय भीत हूँ और तुमसे पूछता हूं। वसिष्ठ जी बोले कि हे राम ! तुम्हारी बुद्धि बहुत अच्छी है तुमने अच्छा प्रश्न किया, तुम्हारा नाम मात्र ग्रहण करने से मनुष्य पवित्र हो जाते हैं तथापि लोगों के हितकी कामना से सब व्रतों में उत्तम और ब्रह्मा को भी पवित्र करने वाले व्रत को मैं कहूंगा। हे राम ! वैसाखके शुक्ल पक्षमें जो एकादशी होती है और सब पापों को हरने वाली मोहनी नाम से प्रसिद्ध है मैं सत्य २ कहता हूं कि इसके व्रत के प्रभाव से मोहजाल और पापों के समूह से मनुष्य छूट जाते हैं। हे राम ! इस कारण यह तुमारे ऐसे मनुष्यों को करने योग्य है, यह पापों को क्षय करने वाली और सकल दुःखों को नाश करने वाली है। हे राम ! इस पुण्य दायिनी शुभ को एकाग्र मन से सुनिये, इसके श्रवण मात्र से बड़े २ पाप नाशहो जाते हैं। सरस्वती नदी के तटपर भद्रावती नामकी एक शुभपुरी है। उसमें धृतमान नामक राजा राज्य करते हैं। हे राम ! वह धृतिमान राजा चन्द्रवंश में उत्पन्न थे, और बड़ा सत्य प्रतिज्ञ थे, उस पुरी में धनधान्य युक्त और समृद्धि वान नामका एक वैश्य निवास करते थे। वह पुण्य में प्रवृत्त रहने वाला धनपाल के नाम से प्रसिद्ध हुये, और सरोवर, यज्ञशाला तथा उपवन आदि को बनवाते हुये, उस शान्त स्वरूप तथा विष्णु की भक्ति में परायण रहने वाले को पांच पुत्र हुये। सुमना, द्युतिमाना मेधावी और सुकृति इन में धृष्ट बुद्धि नामक पांचवां पुत्र सदा महापाप में लवलीन रहता था, वह वेश्याओं के साथ में रत तथा दुष्टों की वार्तालाप में निपुण अर्थात् चालाक था। परस्त्री गमन की लालसा अर्थात् इच्छा में और जूआ आदि व्यसन में आसक्त था। देवता, अतिथि, वृद्ध, पित्र और ब्राह्मण को भी नहीं मानता था।

वह दुरात्मा और अन्यायी पिता के धन को नाश करता था। और अभक्ष्य वस्तुओं को भक्षण करता था। सर्वदा सुरा पानमें रत रहता था, वह भ्रष्ट हो वेश्या के कण्ठ में अपनी बाहु डालकर चौरास्तापर भ्रमण करता था। तब उसके पिता ने उसको गृह से निकाल दिया। और बान्धव

गण भी उसको परित्याग कर दिये। फिर अपने शरीर के आभूषणों को भी वह नष्ट कर दिया। तब धनके नाशहो जानेसे वेश्या भी उसको परित्याग करती भई। इसके बादही वस्त्रहीन और क्षुधा से पीड़ित होकर वह चिन्ता करने लगा कि अब मैं क्या करूँ कहाँ जाऊँ और कौनसा उपाय करूँ जिससे प्राण की रक्षा हो। ऐसा सोचकर फिर उसी नगर में वह चोरी करना आरम्भ किया। तब राजपुरुष अर्थात् राजा का सिपाही उस को पकड़ लिया, परन्तु अपने पिता के गौरव से छुट गया। बारम्बार इसी तरह से छूट भी जाता था, अन्तमें वह दुराचारी धृष्टबुद्धि दृढ़ बन्धन का वेणी से बांध दिया गया। कोड़ों से मारके और बारम्बार पीड़ित करके उससे बोले कि अरे दुराचारी मन्दात्मा! मेरे राज्य में तेरा स्थान नहीं मिलेगा। अर्थात् तुम मेरे देश से निकल जाओ। तब राजा उससे ऐसा कह कर दृढ़ बन्धन से खोल दिये।

तब वह डरकेमारे वहां से निकल करएक महाभारी भयानक जंगल में चला गया। वहां क्षुधा से पीड़ित होकर इधर उधर दौड़ने लगा, फिर सिंह के समान मृगा, सूकर और चिताओं को मारने लगा। और उन्हीं सबों का मांसाहार करके सदा वनमें रहने लगा, और हाथ में धनुष तथापीठ पर तर्कस बांधके वनचर, पक्षी चारपदवाला पशु, चकोर, मोर, कंक, तीतर और मूस आदि को मारते हुए, इनका और अन्य पशुओं को घृणा रहित वह धृष्ट बुद्धि नित्यमार ताथा, और पूर्वजन्म के किये हुये पापसे पापमें निमग्न होकर पाप को करता था। और दुःख तथा शोक संयुक्त होकर दिन रात वह चिन्ता करता था, फिर कुछ पुण्य के वशमें होकर कह कौन्डिन्य मुनि के आश्रम को चला गया। वैशाख मास में गंगा स्नान किये हुये तपोधनीं कौंडिन्य के समीप शोक भार से पीड़ित वह वहां आया। उनके वस्त्र से गिरे हुये जल विन्दुको स्पर्श करने से वह पाप रहित हो गया। और हाथ जोर कर कौडिन्य के सन्मुख ठाढ़ होकर बोला धृष्टबुद्धिने कहा कि हे ब्रह्मन्! ऐसा प्रायश्चित बताओ जो विना यत्न के हो जाय, पावज्जीवन पाप करने से मेरे पास धन नहीं है। ऋषि बोले जिससे तेरा पाप क्षय होगा उस को तूँ एकाग्र मनसे सुनो वैशाख शुक्ल पक्षमें मोहिनी नामकी एकादशी होती है। यह मनुष्य के

सुमेरु पर्वत के समान पापों को नाश करती है, अतएव मेरे कहने से तूँ इस एकादशी व्रत को करो। यह मोहिनी एकादशी व्रत करने से बहुत से जन्म के किये हुये पापको नाश करती है। मुनि की इस तरह से बातको सुनकर वह धृष्टबुद्धी अपने मन में प्रसन्न हुआ। और कौडिन्य मुनि के उपदेश से विधि पूर्वक व्रत को किया। हे श्रेष्ठ नृप! मोहिनी का व्रत करने से वह पापों से मुक्त हो गया। तत्पश्चात् दिव्य देह को धारण करके और गरुड़ के ऊपर आरूढ़ होकर सब उपद्रवों से रहित विष्णु लोक को प्राप्त हुआ। हे रामचन्द्र! तम और मोहको नाश करने वाला ऐसा यह व्रत है, इससे परे चराचर और तीनों लोक में कुछ भी नहीं है। हे राजन्! तीर्थ दान और यज्ञ आदि इस सोलहवीं कलाके समान नहीं हैं, इसके पढ़ने और सुनने से हज्जार गोदान का फल प्राप्त होता है॥

इति श्री कूर्मपुराणे वैसाख शुक्ल मोहिनी
एकादशी माहात्म्य भाषा समाप्त॥१२॥

युधिष्ठिर जी बोले कि हे जनार्दन! ज्येष्ठ के कृष्ण पक्षकी एकादशी का क्या नाम है? मैं उसका माहात्म्य सुनना चाहता हूं सो आप कृपा करके वर्णन कीजिये। श्री कृष्ण जी बोले हे राजन्! लोकों की हितकामना से तुमने अच्छा प्रश्न किया। यह एकादशी बहुत से पुण्य को देनेवाली तथा बड़े बड़े पापों को नाश करने वाली है। हे राजन्! अपरमित फलको देनेवाली इस एकादशी का नाम अपरा है जो अपरा को सेवन करते हैं वे लोक में प्रसिद्ध हो जाते हैं ब्रह्महत्या गोहत्या, भ्रूणहत्या, पराया निन्दा करने वाला तथा पराई स्त्री से प्रेम करनेवाला, हे राजन्! अपराकी उपासना करने से यह सब पापों से अवश्य मुक्त हो जाते हैं, जो मिथ्या साक्षी देनेवाले, मिथ्या मरन अर्थात् प्रशंसा करने वाले, और जो कम तौल तौलने वाले, मिथ्या वेद पढ़ने वाले, विप्र, मिथ्या शास्त्र निर्माण करने वाले, ज्योतिषी और मिथ्या वैद्यक बनाने वाले वैद्य, यह सब मिथ्या साक्षीदेनेवाले तुल्य हैं। हे राजन् अपरा के व्रत से यह सब पापी पाप से छूट जाते हैं। जो क्षत्रीय अपने क्षत्री धर्म को परित्याग करके लड़ने से भाग जाते हैं वह अपने बहिष्कृत होकर घोर नरक में जाते हैं। हे राजन्!

अपरा को सेवन करनेसे वह भी स्वर्ग को जाते हैं, जो शिष्य विद्या पढ़कर अपने गुरु की निन्दा करते हैं वह भी महापाप से युक्त होकर घोर नरक में जाते हैं, फिर अपरा का व्रत करने से वह मनुष्य भी उत्तम गति को प्राप्त होता है। हे राजन्! मैं अपरा की महिमा कहता हूं आप चित्त देकर सुनिये कार्तिक में, तीनो पुष्कर में, स्नान करने से जो फल मिलता है, मकर के सूर्य में प्रयाग में, स्नान करने से और काशी शिवरात्री को व्रत करने से जो फल होता है, और गया में पिण्ड देने से पित्रों को जैसी तृप्ति होती है, तथा सिंह राशि के बृहस्पति में गौतमी नदी में स्नान करने वाले मनुष्य को जो फल प्राप्त होता है, कुम्भ में केदार नाथ के दर्शन से, बद्रिका श्रम की यात्रा, और उसके सेवन से जो फल होता है, सूर्य्य ग्रहण में कुरुक्षेत्र में स्नान करने और घोड़ा हाथी तथा स्वर्ण दान करने और यज्ञ में स्वर्ण दान देने से जो फल होता है सो फल अपराके व्रत से प्राप्त होता है और अर्ध प्रसूती, गौ, स्वर्ण, तथा पृथ्वी दान देने से जो फल होता है सो फल अपरा के व्रत से मनुष्य को प्राप्त होता है, यह पाप रूपी वृक्ष को कुठार, और पापरूपी ईन्धन को भस्म करने के लिये दावानल अग्नि है। यह पाप रूपी अन्धकार के लिये सूर्य्य, और पापरूपी मृग के लिये सिंह के समान है। जल में बुलबुले के समान, और पशुओं में भुनगे के समान, इस एकादशी के व्रत विना वे मरने के लिये ही उत्पन्न होते हैं, अपरा का व्रत और त्रिविक्रम भगवान की पूजा करने से सब पापों से छूट कर मनुष्य विष्णुलोक में जाता है। लोकों के हित के निमित्त आपसे मैंने यह कथा कही। हे राजन्! पाप से डरे हुये मनुष्यों को अपरा एकादशी का व्रत करना चाहिये। इसके पढ़ने और सुनने से सब पाप छूट जाते हैं।

इति श्री ब्रह्माण्डपुराणे जेष्ठ अपरा एकादशी
माहात्म्य भाषा सम्पूर्ण॥ १३॥

एक समय में भीम सेन व्यास जी से पूछे कि हे महाबुद्धि, पितामह! मेरी बहुत बड़ी बात सुनिये। युधिष्ठिर, कुन्ती, द्रौपदी, अर्जुन नकुल और सहदेव एकादशी के दिन कभी भी भोजन नहीं करते हैं और वे लोग हमसे नित्य कहा करते है कि हे वृकोदर! तुम भोजन मत किया करो, और

मैं उनसे कहा करता हूं कि हे तात! मेरी क्षुधा दुःसह है, मैं दान दूंगा, और विधि पूर्वक केशव भगवान की पूजा करूंगा, सो बिना उपवास किये एकादशी व्रत का फल मुझको कैसे मिलेगा भीमसेन का वचन सुनकरके व्यास जी बोले कि यदि स्वर्ग अत्यन्त प्रिय है और नरक बुरा है तो दोनों पक्षों की एकादशी को भोजन करना चाहिये। फिर भीमसेन बोले हे महा बुद्धि पितामह! मैं आपके आगे कहता हूँ। हे महामुनि! एक बारके भोजन करने से तो हमसे नहीं रहा जाता है तो मैं उपवास किस तरह करूं। वृक नामक जो अग्नि है वह सदा हमारे उदरगत रहता है, जब बहुत सा भोजन मैं करता हूं तब मेरी क्षुधा शान्त होती है। हे महामुनि! हमारे केवल एकही व्रत करने की शक्ति है जिसमें स्वर्ग की प्राप्ति हो, उस व्रत को विधि पूर्वक मैं करूँगा, वैसा एक व्रत निश्चय करके बताइये जिसमें कल्याण को प्राप्ति होऊं, व्यासजी बोले कि हे राजा! मनुष्यों के लिये वेद का धर्म आप हमसे सुनिये, परन्तु कलि काल में उन धर्मों को करने की शक्ति नहीं हैं, सरल उपाय, थोड़े धन और थोड़े क्लेश में महाफल जो सब पुराणों की साराशं है सो मैं आपसे वर्णन करता हूँ जो दोनों पक्षों की एकादशी को भोजन नहीं करते हैं वह नरक में नहीं जाते हैं, व्यास जी का वचन सुनकर महाबली भीमसेन पीपर के पत्ते के समान कम्पित हो गये और भयभीत होकर बोले। भीमसेन बोले कि हे पितामह! उपवास करने में मैं असमर्थ हूं, हम क्या करें हे प्रभो! इस कारण बहुत सा फल देने वाला एक व्रत मुझको बताइये। व्यास जी बोले वृषराशि वा मिथुन राशि के सूर्य में, ज्येष्ठ मास की शुक्ल पक्ष में जो एकादशी होती है सो यत्न पूर्वक उसका निर्जल व्रत करना चाहिये, स्नान और आचमन करने करने में जल वर्जित है, एक मासा सुवर्ण की मणि जितने जलमें डूब जाये, वह आचमन काया को शुद्ध करने वाला कहा है, गौके कानके समान हाथ करके उसमें एक मासा जल को लेकर पान करे, वह जल कमती अथवा समान हो जाता है, और अन्न भोजन करे, नहीं तो व्रत भंग हो जाता है, एकादशी के सूर्योदय से द्वादशी के सूर्योदय पर्यन्त जल ग्रहण न करै और न जलपान करे न भोजन करे, तो बिनायत्न किये हुये बारहो द्वादशी युक्त एकादशी का फल प्राप्त हो। द्वादशी के प्रातः काल होने पर

स्नान और विधि पूर्वक स्वर्ण तथा जल ब्राह्मणों को दान करे फिर वह व्रती कृत्यकृत्य होकर ब्राह्मणों के सहित भोजन करे, हे भीमसेन! इस रीति से व्रत करने से पुण्य होता है सो सुनिये। संवत्सर के मध्य में जो एकादशी होती हैं उन सबका फल निःसन्देह इस एकादशी में प्राप्त होता है। शंख चक्र, और गदाधारी अर्थात् विष्णु भगवान हमसे कहे है कि सब धर्मों का त्याग करके मेरी शरण में आओ, निराहार एकादशी का व्रत करने से मनुष्य पापों से छूट जाता है। कलिकाल में धन से शुद्ध नहीं है अर्थात् दान देने से सद्गति नहीं होता और स्मार्त्त संस्कार भी नहीं है, इस दुष्ट कलियुग को प्राप्त होने से वैदिक धर्म कहा है, हे वासुदेव! बारम्वार आपसे क्या कहे दोनो पक्षों की एकादशियों में भोजन न करे और ज्येष्ठ के शुक्ल पक्ष की एक दशी में वर्जित है अर्थात्, बिना जल, पान किये हुये इसका व्रत करे। हे वृकोदर! इसकी उपासना अर्थात् व्रत करने से जो फल होता है सो ध्यान देकर सुनिये। सब तीर्थों में जो पुण्य होता है तथा सब दानों से जो फल होता है। हे वृकोदर! उन सब फल की प्राप्ति इसके करने से होता है और हे वृकोदर। वर्ष भर में शुक्ल और कृष्ण पक्ष की जितनी एकादशी होती है उनका व्रत करने से धन, धान्य, बल, आयु, और आरोग्यता आदि जो फल मिलते हैं सो सब फल निःसन्देह इस एकादशी के व्रत से प्राप्त होता है। हे नरव्याघ्र! मैं सत्य सत्य कहता हूं कि इसकी उपासना से विशाल शरीर भयंकर और काले पीले वर्ण के यमदूत गण भयंकर दण्ड तथा फांसी लिये हुये उस मनुष्य के निकट नहीं जाते हैं। पीताम्बर धारण किये और हाथ में चक्र लिये हुये मोहिनी मूर्ति में विष्णु के अन्त समय में विष्णु लोक में लेजाने के लिये आते हैं, इस कारण सब यत्न से बिना जल के व्रत करना चाहिये, पश्चात् जल और गौदान करने से मनुष्य सब पापों से छूट जाता है। हे जनमेजय पाण्डवोंने जब यह सुना तब उस व्रत को करने लगे, उस दिन से भीमसेन इस निर्जला एकादशी का व्रत करने लगे और तब से इसका नाम भीमसेनी प्रसिद्ध हुआ। हे राजन्! वैसेही तुम भी सब पापों को शान्त होने के लिये यत्न पूवक उपवास समेत विष्णु की पूजा करो। हे देवेश! मैं आज बिना जल का व्रत करूंगा और हे देवताओं के ईश अनन्त तुम्हारे

दिवस के दूसरे दिवस अर्थात् एकादशी का व्रत करके द्वादशी को भोजन करूंगा। इस मंत्र का उच्चारण कर लेवे तब सब पापों को नाश होने के लिये श्रद्धा और इन्द्रियों को वश में करके व्रत में प्रवृत्त हो स्त्री अथवा पुरुष का पाप चाहे सुमेरु अथवा मन्दराचल पर्वत के समान भी हो तो वह सब एकादशी के प्रभाव से भस्म हो जाता है। हे नराधिप! यदि जलधेनु न दान करसके तो वस्त्र में बंधे हुये सोना के साथ कलश प्रदान करे। जल का नियम करने से उस पुण्य का भागी होता है। प्रहर प्रहर भरमें करोड़पल स्वर्णदान के फल को मनुष्य प्राप्त होता है। हे राजा! श्री कृष्ण का कहा हुआ कि निर्जला एकादशी के दिन स्नान, दान, जप, होम, जो कुछ मनुष्य करता है सो सब अक्षय हो जाता है। हे नृप जिसने निर्जला एकादशी का व्रत किया उसको और धर्म चार करने से क्या? और विविध उपवास करने वालों को विष्णु लोक प्राप्त होता है और एकादशी को स्वर्ण और अन्न, वस्त्र, जो दिया जाय। हे कुरुवंशियों में श्रेष्ठ! वह सब अक्षय होता है अर्थात् उसका नाश नहीं होता है। एकादशी के दिवस जो अन्न भोजन करते हैं वे पापका भोजन करते हैं, इस लोक में वह चाण्डाल होकर और मरने पर दुर्गति को प्राप्त होते हैं, जो ज्येष्ठ मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी का व्रत करके दान देगें वे मोक्ष को प्राप्त होगें। ब्राह्मण की हत्या करने वाले, मद्यपान करने वाले, चोरी करने वाले गुरु से द्वेष रखने वाले, और सदा मिथ्या भाषण करने वाले, द्वादशीयुक्त एकादशी का व्रत करने से इन पापों से छूट जाते हैं। हे कुन्तीपुत्र! निर्जला एकादशी के दिन का विशेष हाल सुनिये। स्त्री और पुरुषों को श्रद्धा और इन्द्रियों को वश में करके यह करना चाहिये। जलशायी भगवान का पूजा करे और वैसेही गौका दान करे। हे श्रेष्ठ नृप! अथवा प्रत्यक्ष घृतकी धेनु अर्थात् दुग्ध देनेवाली गौ, मिष्टान्न और दक्षिणा सहित पृथक् पृथक् विधि से दान करे। हे धर्म धारियों में श्रेष्ठ! इस प्रकार यत्न पूर्वक ब्राह्मणों के सन्तुष्ट होने से मोक्ष को देनेवाले विष्णु भगवान सन्तुष्ट होते हैं। जिसने इसका व्रत नहीं किया उसने आत्मद्रोह किया, वह निःसन्देह दुष्ट, दुरात्मा और दुराचारी है और जिसने इसका व्रत किया सो अपने कुलके एक सौ आगे के और एक सौ पीछे के कुटुम्बियों समेत अपने आपको वासुदेव

भगवान लोकमें पहुचा दिया अर्थात् एक सौ कुटुम्बियों के सहित वह मोक्ष को प्राप्त हुआ। जो मनुष्य शान्ति पूर्वक दानपरायण होकर विष्णु की पूजा करते हैं और जो मनुष्य एकादशी की रात्रि में उपवास करके जागरण करते हैं और अन्न, जल, गौ, वस्त्र, सुन्दर शय्या, आसन, कमण्डल और छत्र एकादशी के दिवस दान करते हैं और पदत्राण उत्तम और सुपात्र को दान देवे। वेनर सुवर्ण के विमान पर चढ़कर अवश्य स्वर्ग लोक को जाते हैं। जो मनुष्य भक्ति पूर्वक इस कथा को पढ़ें अथवा किसी को सुनावें वह दोनों निःसन्देह स्वर्ग को जाते हैं। इसमें और विचार नहीं करना चाहिये। जो फल पापनासिनीवाली अमावस्या को, सूर्य ग्रहण में श्राद्ध करने से मनुष्य को मिलता है सो फल इसके सुनने से भी होता है, दतुअन करके विधि पूर्वक विना अन्न और जल के एकादशी का व्रत करते हैं और केशव भगवान की प्रसन्नता के लिये आचमन के जल को छोड़ कर एकादशी को दूसरा जल ग्रहण करे द्वादशी के दिवस देवताओं के देव त्रिविक्रम भगवानको पूजा करे और जल, पुष्प, तथा धूप दीप से विष्णु भगवान को प्रसन्न करे। विधिवत् पूजन करके इस मंत्र को उच्चारण करे हे देवताओं के देव! हे हृषीकेश! हे संसारसागर से पार उतारने वाले! इस घट के दान करने से मुझको परमगति अर्थात् मोक्ष को प्राप्त कराइये, हे भीमसेन! इसके पश्चात् अपनी शक्ति के अनुसार अन्न, वस्त्र, छत्र, उपानह, और फल संयुक्त घट ब्राह्मणों को दान देवे और अन्य प्रकार के दान कर विशेष कर जलधेनु का दान करे पश्चात् ब्राह्मणों को भोजन करवा कर अपने भी मौन होकर भोजन करे अर्थात् भोजन करते समय बोलना नहीं चाहिये। इस प्रकार से जो इस पापनाशिनी को पूर्ण करते करते हैं वे सब पापों से छूट कर मुक्त हो जाते हैं।

इति श्री ब्रह्मवैवर्त्त पुराणे ज्येष्ठ शुक्ल निर्जला
एकादशी माहात्म्य भाषा समाप्तः ॥१४॥

युधिष्ठिर जी बोले कि हे मधुसूदन! ज्येष्ठ शुक्ल निर्जला एकादशी का महात्म्य तो मैंने सुना पर अब आषाढ़ के कृष्ण पक्षकी एकादशी का

क्या नाम है । हे मधुसूदन ! आप कृपा करके हमसे प्रसन्नता पूर्वक कहिये ।
श्री कृष्ण जी बोले कि हे राजन् ! व्रतों में उत्तम व्रत मैं आपके आगे
कहता हूं । सब पापों को क्षय करके भुक्ति और मुक्ति देनेवाली आषाढ़
के कृष्ण पक्ष में योगिनी नामकी एकादशी होती है । हे नृप श्रेष्ठ ! महा
पापों को नाश करने वाली और संसार रूपी समुद्र में जो डूबे हुये हैं
उनको पार करने वाली और सनातनी है । हे राजन् ! तीनों लोक में यह
योगिनी एकादशी सार भूत है पुराणों में इस पाप नाशिनी की जो कथा
है उसको मैं कहता हूं ध्यान देना । अलकापुरी का अधिपति कुवेर शिवजी
की पूजा करने वाला है और उसका माली हेममाली नामका यक्ष हैं और
उसकी स्वरूपवती स्त्री का नाम विशालाक्षी है । वह माली उसके स्नेह से
कामदेव के वश में हो गया और मानसरोवर से पुष्पों को लेआकर अपने
और अपनी पत्नी के प्रेम से युक्त होकर कुवेर के गृह में रख भवन को
नहीं गया । हे राजन् ! मध्याह्न काल में देवालय में शिवका पूजन करते
हुये और हेममाली अपने गृह में अपनी पत्नी के साथ विहार करता रहा ।
विलम्ब होने से यक्षराज कुबेर कुपित होकर बोले कि हे यक्षों ! दुरात्मा
हेममाली तुम क्यों नहीं आया । यह निश्चय करना चाहिये ऐसे बारम्बार
कुबेर बोलते रहे ! यक्षगण बोले कि हे राजन् । वह कामी अपनी इच्छा
से गृह पर स्त्री से रमण करता है । उनका वचन सुनकर कुबेर क्रोध से
परिपूर्ण होकर उस पुष्प लानेवाले हेममाली को शीघ्रता से बुलवाये
और हेममाली भी अधिक काल व्यतीत हुआ जान कर भयसे व्याकुल
नेत्र होकर आये और कुबेर को नमस्कार करके उनके आगे खड़ा
होगया । उसको देखतेही कुबेर क्रोधित होगया और क्रोध से उनके नेत्र
रक्तवर्ण होगये और क्रोध से उनका होठ फड़कने लगा तब क्रोधित हुये
कुबेर बोले कि अरे पापी ! दुष्ट !! दुर्वृत्ति !!! तुमने देवता की अवहेलना
अर्थात् अवज्ञा की । इस कारण तुम्हें श्वेत कुष्ट हो जाय और तेरी प्यारी
स्त्री का सदा तुम्हें वियोग हो और इस स्थान से गिर कर जहां अधम
रहते हैं वहां जाओ । कुबेर के इस वचन को कहते ही वह वहां से गिर
पड़ा और श्वेत कुष्ट से पीड़ित होकर महा दुःखी को प्राप्त हुआ और
भयानक वनमें जाकर जहां पर न अन्न और न पानी मिलता था, तथा,

दिवस में सुख और रात्रि में निद्रा भी उसको नहीं आयी। छाया में शीत से और घाम में उष्णता से पीड़ित रहने लगा किन्तु शिवजी की पूजा के प्रभाव से उसकी स्मृति नहीं लोप हुई और पाप से दबे रहने पर भी उसको पहिला कर्म स्मरण रहा, तत् पश्चात् भ्रमण करते हुये पर्वतों में उत्तम हिमालय पर्वत पर वह गया वहां पर श्रेष्ठ मुनि तपोनिधि मार्कण्डेय मुनि को देखा हे राजन्! उनको आयु ब्रह्मा के सात दिन की हुई है। ऋषि के आश्रम में जो ब्रह्मा की सभाके समान है उसमें वह यक्ष गया और वह पाप कर्म करने वाला उनकी दूर से चरण की वन्दना किया। तब श्रेष्ठ मुनि मार्कण्डेय उस कुष्टी को देखकर परोपकार के निमित्त अपने समीप बुला कर उससे पूछे कि तुमको कुष्ट क्यों हुआ? और तुम निन्दित हो रहे हो बुद्धिमान मार्कण्डेय के यह पूछने पर हेममाली बोला कि हे मुनि! मैं यक्षराज का सेवक हूं और हेममाली मेरा नाम है। मैं प्रति दिन मानसरोवर से पुष्प ले आकर शिवजी की पूजा के समय कुबेर को देता था। एक दिवस हमसे विलम्ब हो गया और कामदेव से हमारा चित व्याकुल हो गया और मैं पत्नी के सुख में रह गया, हे मुनि! तब क्रोधित होकर कुबेर मुझको शाप दिये। इससे मैं कोढ़ी होकर अपनी पत्नी से अलग हो गया, अब कोई शुभ कर्म के प्राप्त होने से आपके निकट मैं आया हूं। सन्तों का चित्त स्वभावतः परोपकारी होते हैं ऐसा जानकर हे श्रेष्ठ मुनि! मुझको उपदेश दीजिये। मार्कण्डेय मुनि बोले कि तुमने सत्य कहा और असत्य नहीं बोला इससे मैं कल्याणकारी व्रतका उपदेश तुमको कहता हूं। तुम आषाढ़ के कृष्ण पक्ष की योगिनी एकादशी का व्रत करो इसके व्रत के पुण्य से तुम अवश्य कुष्ट से छूट जाओगे। मुनि की यह बात सुनकर वह पृथ्वी में गिरकर उनको दण्डवत किया और मुनि के उठा लेने पर अत्यन्त हर्षित हुआ और मार्कण्डेय मुनि के उपदेश से उसने इस उत्तम व्रतको किया, और उस व्रत के प्रभाव से दिव्य स्वरूप वाला हो गया फिर उसकी स्त्री से उसको संयोग हुआ और उत्तम सुख को वह भोगा। हे नृप श्रेष्ठ! ऐसी योगिनी एकाशी व्रत मैंने कहा। अठासी सहस्र ब्राह्मणों को भोजन कराने का जो फल होता है, सो फल योगिनी एकादशी का व्रत करने से मनुष्य को प्राप्त होता है। हे राजन्! महापाप

को नाश करने वाली और महापुण्य के फल को देनेवाली आषाढ़ कृष्ण की पवित्र योगिनी एकादशी तुमसे मैंने कही।

इति श्री ब्रह्मवैवर्त्त पुराणे आषाढ़ कृष्ण योगिनी
एकादशी महात्म्य भाषा संपूर्ण ॥ १५ ॥

युधिष्ठिर जी बोले हे केशव ! आषाढ़ के शुक्ल पक्ष में किस नामकी एकादशी होती है, उसके देवता कौन हैं और उसकी विधि कैसे है ? यह सब आप हमसे कहिये। श्री कृष्ण जी बोले कि हे महिपाल ! जिसको ब्रह्मा ने महात्मा नारद से कही है उसी आश्चर्य्य कारिणी व्रत को मैं आपसे कहता हूं ब्रह्मासे नारद जी बोले कि आषाढ़ के शुक्ल पक्ष में किस नामकी एकादशी होती है सो प्रसन्न होकर आप हमसे कहिये। ब्रह्मा जी बोले हे कलिप्रिय श्रेष्ठ मुनि ! तुम वैष्णव हो, और तुम्हारा प्रश्न उत्तम है, संसार में हरिवासर से पवित्र और कोई वासर नहीं है। सब पापों को दूर करने के लिये यत्न पूर्वक इसको करना चाहिये। इस कारण शुक्ल पक्ष के एकादशी का व्रत मैं तुमसे कहता हूं। एकादशी के व्रत का पुण्य पापों को नाश करने वाला है, संसार में जिस मनुष्य ने इसका व्रत नहीं किया वे मनुष्य नरक गामी हैं। आषाढ़ के शुक्ल पक्षकी पवित्र एकादशी "पद्म" नाम से प्रसिद्ध है हृषी केश अर्थात् विष्णु की प्रीति के अर्थ इस का उत्तम व्रत करना चाहिये। तुम्हारे आगे पुराण की शुभ कथा अर्थात् श्रेष्ठ कथा को मैं कहता हूं। जिसके सुनने से ही महापाप नाश हो जाता है। सूर्य्य वंश में प्रतापी और सत्य प्रतिज्ञा मान्धाता नामक राजर्षि चक्रवर्ती राजा हुये। यह राजा धर्म से प्रजा को अपने पुत्र के समान पालन करते थे। उसके राज्य में दुर्भिक्ष तथा रोग शोक आदि कोई व्याधियां नहीं उत्पन्न हुये प्रजा अति रहित धनसे परिपूर्ण थी। और उस राजा के कोश में अर्थात् खजाना में अन्याय से उपार्जन किये हुये धन नहीं था इसी प्रकार उसके राज्य हुये बहुत सा वर्ष व्यतीत हो गया तब किसी पाप कर्म के परिणाम को प्राप्त होने से उस कर्म के कारण तीन वर्ष पर्यन्त उसके देश में वर्षा नहीं हुई इस कारण वहां प्रजा क्षुधा से पीड़ित होकर वेकलता को प्राप्त हुई अन्न के अभाव से पीड़ित होने से

स्वाहा, स्वाधा, वषट्कार, तथा वेदाध्ययन से उसका देश रहित हो गया तब प्रजागण राजा के समीप आकर बोले कि हे राजन्! प्रजा के हित करने वाले वचन को सुनिये। पुराणों में मुनिऋषियों अर्थात् विद्वानों ने जल को "नारा" कहा है। उस जल में भगवान का "अयन" अर्थात् भवन अथवा "स्थान" है इसका कारण जन्म का नाम "नारायण" कहा गया है और मेघ रूपी विष्णु भगवान सर्वदा सर्वव्यापी हैं, वेही वृष्टि करते हैं, वृष्टि से अन्न और अन्न से प्रजा होती है, हे राजन्! उसके अभाव अर्थात् अन्न न प्राप्त होने से प्रजा क्षय को प्राप्त होते हैं। हे नृप श्रेष्ठ! ऐसा उपाय कीजिये जिससे कुशल होवे। राजा बोले कि तुम लोगों ने सत्य कहा, तुम्हारी बात मिथ्या नहीं है। अन्न ब्रह्ममय कहा गया है। और अन्न सब में प्रतिष्ठित है, अन्न ही से सब कुछ होता है, अन्न से जीव होते हैं, अन्न ही से संसार वर्तमान है, अर्थात् अन्न ही से संसार स्थित है। ऐसा लोक में सुना जाता है, और पुराणों में विस्तार पूर्वक कहा गया है, क्योंकि राजा के अधर्म से प्रजा को दुःख होता है। यद्यपि बुद्धि से विचार कर देखने से मैंने अपने किये हुये दोष को नहीं देखा तथापि प्रजा के हित होने की कामना से यत्न करूंगा। राजा ऐसी बुद्धि करके कुछ सेना को साथ में लेकर और ब्रह्मा को नमस्कार करके गंभीर बनको प्रस्थान किये और मुख्य २ मुनियों तपस्वियों के आश्रम में विचारने लगे और ब्रह्मा के पुत्र अङ्गिरा ऋषि को राजा ने देखा जिनके तेज से दशों दिशायें प्रकाशित हो रही थीं। और वह ऋषि दूसरे ब्रह्मा के समान विराजमान थे उनको देखकर राजा हर्षित होकर वाहन से उतर गये और उनके चरणों को नमस्कार करके दोनों हाथ जोड़ खड़े हो गये तब मुनि स्वस्तिवाचन पूर्वक राजा को आशीर्वाद देकर उनके राज्य और राज्य के सातों अंगों की कुशल पूछने लगे, तब मुनि ने राजा से उनके आगमन का कारण पूछा, तब राजा बोले कि हे भगवन्! धर्म की विधि से पृथ्वी का पालन करते रहने पर भी मेरे राज्य में अनावृष्टि अर्थात् अकाल पड़ा। और मैं इसका कारण नहीं जानता हूं इसलिये इस संशय को दूर करने के निमित्त आपके निकट आया हूं। योग क्षेम की विधि से अर्थात् प्रजा जैसे सुखी होवे वैसा उपाय कीजिये।

ऋषि बोले हे राजन्! यह सतयुग सब युगों में उत्तम कहा गया है, इसमें लोग "ब्रह्म" की उपासना करते हैं, और इस युगमें चारो चरण से धर्म है, इस युग में ब्राह्मण तप युक्त है, उनको छोड़ और कोई भी तप नहीं करते हैं, हे राजन्! तुम्हारे देश में जो शूद्र तप कर रहा है उसके योग्य जो कार्य्य नहीं है उस को करने से मेघ नहीं बरसते हैं, उसके बध करने का यत्न कीजिये जिससे पाप की शान्ति हो।

राजा बोले कि मैं उस निरपराधी को तपस्या करते हुये को नहीं मारुंगा आपत्तियों को दूर करने वाला धर्म का उपदेश कीजिये।

ऋषि बोले कि हे नरपति! यदि ऐसा है तो पवित्र मारु अर्थात् आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष में "पद्मा" नामकी प्रसिद्ध एकादशी का व्रत करो, उस व्रत के प्रभाव से अवश्यही सुन्दर "वृष्टि" होगी, यह सब सिद्धियों को देनेवाली और सब उपद्रवों को नाश करनेवाली है।

हे राजन्! प्रजा और परिवार के सहित इसका व्रत कीजिये, मुनि की यह बात सुन कर राजा अपने घर को लौट आये और आषाढ़ मास प्राप्त होने पर समस्त प्रजा और चारो वर्णों के सहित इस "पद्मा" का व्रत किये।

हे राजन्! इस व्रत के करने पर "वृष्टि" हुई और पृष्ठ और पृथ्वी सब से प्लवित होकर अन्न से परिपूर्ण हुई और हृषीकेश के प्रसाद से सब प्रजा भी सुखी हुई इस कारण इस उत्तम व्रत को करना उचित है, यह सब सुख और मुक्ति देनेवाली है इसके पढ़ने सुनने से सब पाप छूट जाता है।

हे राजन्! यह एकादशी शयनी कही जाती है और विष्णु की प्रसन्नता के निमित्त इस शयनी एकादशी का मोक्ष की इच्छा करने वाले को सर्वदा करना चाहिये।

हे राजन्! चातुर्मास का व्रत इसी एकादशी से आरम्भ होता है। युधिष्ठिर जी बोले कि हे कृष्ण विष्णु शयन का व्रत कैसे करना चाहिये। हे देव। चातुर्मास और विष्णु शयन का व्रत आप कृपा कर कहिये।

श्री कृष्ण जी बोले कि हे युधिष्ठिर! विष्णु शयन और चातुर्मास में जो व्रत कहे गये हैं उनको मैं कहूंगा आप सुनिये।

आषाढ़ के शुक्ल पक्ष में जब सूर्य्य कर्क राशि पर जाते हैं तब एकादशी के दिवस जगत्पति मधुसूदन भगवान को शयन करावे और जब तुलाराशि पर सूर्य्य जाते हैं तब हरि भगवान को जगाना चाहिये और अधिक मास में भी क्रम पूर्वक इसी विधि को करना चाहिये। विष्णु के अतिरिक्त अन्य देवताओं को नहीं शयन कराना चाहिये और न जगाना ही चाहिये। आषाढ़ के शुक्ल पक्ष में एकादशी का व्रत करके चातुर्मास के व्रत करने का संकल्प करे।

हे युधिष्ठिर! इस प्रकार विष्णु की प्रतिमा स्थापन करे, फिर शंख, चक्र और गदाधारी विष्णु की मूर्ति को स्नान कराने और पीताम्बर पहिराकर सुन्दर श्वेत वर्ण की शय्या पर उस सौम्य मूर्त्ति को तकिया, और श्वेत वस्त्र से आच्छादित शय्या पर शयन करावे, फिर हे युधिष्ठिर! इतिहास, पुराण, और वेद जानने वाला ब्राह्मण दही, दूध, घृत, शहद, शक्कर, अर्थात् पञ्चामृत से स्नान करावे, उत्तम गन्ध लेपन करके बहुत सा धूप दीप और फूल से पूजा करके और हे पाण्डव इस मंत्र को पढ़े कि पढ़े कि हृषीकेश मैंने लक्ष्मी के सहित तुम्हारा पूजन करके तुमको शयन करता हूं। हे देवेश! हे जनार्दन! लक्ष्मी के सहित कल्याण करो, हे जगन्नाथ आप के शयन करने पर संसार के चर और अचर सब सो गये और तुम्हारे उठने से उठेंगे। हे युधिष्ठिर इस प्रकार उस विष्णु की प्रतिमा को स्थापन कर और उनके सन्मुख खड़ा होकर मनुष्य व्रत का नियम करे, जो वर्षा के चारो मास से देवोत्थानी एकादशी पर्यन्त होते हैं, प्रातः और सन्ध्या काल का सब नियम समाप्त करके शुद्ध नियमों को करूंगा, हे प्रभु! मुझको निर्विघ्न कीजिये अर्थात् उन कर्मों को निर्विघ्नता से पूर्ण कीजिये। विष्णु भगवान की ऐसी प्रार्थना करके और शुद्ध चित्त से मेरे भक्त स्त्री हो अथवा पुरुष धर्म के निमित्त व्रत धारण करे और दन्तधावन करके इस नियमों को ग्रहण करे। विष्णु ने व्रत ग्रहण करने का पांच काल कहे हैं, चातुर्मास्य के व्रत का उपक्रम मनुष्य को आषाढ़ मास से करना चाहिये, एकादशी, द्वादशी, पूर्णिमा, अष्टमी और कर्क की संक्रान्ति में यथाविधि से व्रत आरम्भ करे। मनुष्य चातुर्मास व्रत को चार प्रकार से ग्रहण करके कार्तिक के शुक्ल पक्ष की द्वादशी को समाप्त करे। करने

वाले को इसका जो पृथक् २ फल होता है, सो कहूंगा, आषाढ़ के शुक्लपक्ष में एकादशी का व्रत करे और हे राजन्! कुछ चातुर्मास का व्रत करे। नहीं तो किसी प्रयत्न से वर्ष का पाप नाश नहीं होगा, गुरु अर्थात् बृहस्पति और शुक्र का उदय अस्त इस व्रत में बाधक नहीं होता है, चातुर्मास्य के व्रत में मनुष्य को पहिले खण्डत्व का विचार कर लेना चाहिये। पवित्र हो अथवा अपवित्र, स्त्री हो अथवा पुरुष, यदि षडांग व्यापी सूर्य्य हो, और तिथि अखण्ड हो तो आरम्भ करे। इस व्रत के करने से मनुष्य समस्त पापों से छूट जाता है। और बिना संक्रान्ति का मास, तथा देवता पितृ कर्म में वर्जित है, बुद्धिमान मनुष्य को मल रूपी असींचन करना चाहिये। जो मनुष्य प्रति वर्ष हरि भगवान को स्मरण करते इस व्रत को करते हैं वे देहान्त में सूर्य्य के तेज के समान दिप्तिमान विमान पर आरूढ़ होकर विष्णु लोक में महाप्रलय पर्यन्त आनन्द करते हैं।

नित्य प्रति देवता के मन्दिर में झाड़कर सफाई करते हैं, जल से सींचन करते हैं गोबर से लीपते हैं, तथा रंग से लता आदि बनाते हैं, जो श्रेष्ठ मनुष्य चातुर्मास्य का व्रत करके उसकी समाप्ति में यथाशक्ति ब्राह्मण भोजन करते हैं, हे विप्रेन्द्र! वे सात जन्म पर्यन्त सत्य और धर्म में परायण होते हैं, दही, दूध, घृत, शहद तथा शकर से हे राजन्! चातुर्मास्य में विधि पूर्वक देवता को स्नान कराते हैं वह विष्णु रूप होकर अक्षय सुख को भोगते हैं, देवता के उद्देश्य से ब्राह्मण को यथा शक्ति सुवर्ण नारियल और जो राजा भूमि दान करते हैं। वे स्वर्ग में इन्द्र के समान अक्षय सुख को भोगते हैं। और निःसन्देह विष्णु लोक को प्राप्त होते है। जो विष्णु के निमित्त गन्ध, पुष्प, अक्षत, और नैवेद्य सहित सुवर्ण कलश को दान करते हैं और चातुर्मास्य में जो व्रती मनुष्य नित्य पूजा करते हैं, वे इन्द्र लोक में जाकर अक्षय सुखको प्राप्त होते हैं, जो चारो मासमें तुलसी से विष्णु की पूजा करते हैं और सुवर्ण की तुलसी ब्राह्मण को दान करे वह सुवर्ण के विमान पर आरूढ़ होकर वैष्णवी गति को प्राप्त होते हैं अर्थात् विष्णु के निमित्त गुगुल और दीप अर्पण करे वह भोग करनेवाला, धनाढ्य और सौभाग्यवान्, होता है, और समाप्ति में धूपदान विशेष कर दीप दान करना चाहिये। जो पीपर अथवा विष्णु की प्रदक्षिणा करके नमस्कार

करते हैं उसकी अवधि कार्तिक की एकादशी पर्यन्त है। अपने पदको पदके नीचे रक्खे, अर्थात् घुटने के बलसे बैठे और दोनों हाथ को जोर कर के स्तुति करे और अपने हृदय में ज्ञान रक्खे, यह चतुरंग प्रदक्षिणा कही है, जो देवता के आंगन में सन्ध्या समय दीपदान करे और व्रत समाप्त होने पर सुवर्ण के सहित दीपक, वस्त्र, और तैल, का दान करे, जो विष्णु को पंखा डुलावे वह तेजस्वी और विमान पर आरूढ़ होनेवाला अप्सरा और गंधर्वों से सेवित देवता होता है, जो मनुष्य विष्णु का पादोदक पान करे यह कष्टों से छूट जाता है। और विष्णुलोक को प्राप्त होता है और पुनः संसार में आकर जन्म नहीं लेता, और जो विष्णु के मन्दिर में तीनों काल अष्टोत्तर शत एक सौ आठ गायत्री का जप करे वह पापों से छूट जाता है, और जप माला, पुस्तक कमल, और कमण्डल धारण किये हुये चार मुख वाली गायत्री श्रोत्रिय अर्थात् सुनने वाले के गृह में स्थित रहती है, शास्त्र में कही हुई सर्वलोक और त्रयमयी नित्या जो गायत्री देवी हैं सो लोगों को प्रबोध करती है। जो गायत्री का ध्यान और जप करते हैं उस मनुष्य से व्यास भगवान सन्तुष्ट होते हैं और विष्णु लोक को जाते हैं और इसके उद्यापन में शास्त्र की पुस्तक दान दी जाती है, सब विद्याओं के तुल्य शान्ति करने वाला सुन्दर अक्षरों की पुस्तक में दान किया है हे भारती! मेरे ऊपर प्रसन्न हो।

जो प्रति दिन पुराण अथवा धर्मशास्त्र को सुनते हैं वह पुण्यवान्, धनवान, भोगी तथा सत्य और शौच में परायण होते है, जो ज्ञानी, धर्म्मात्मा और संसार में प्रसिद्ध होते हैं तथा जिसके बहुत से शिष्य हो उसको सुवर्ण के सहित वस्त्र और पुस्तक दान करे। विष्णु अथवा शिव नाम के मन्त्र से व्रत में तत्पर रहे, और व्रत की समाप्ति में उसी देवता की सुवर्ण की मूर्ति दान करे पांच मुख वृषभ पर आरूढ़ और प्रत्येक मुख में तीन नेत्र मस्तक में चन्द्रमा, कपाल शूल, और खट्वाङ्ग धारण किये हुये सदा शिव की मूर्ति को इस मन्त्र से दान करे।

हे ईश! जैसे देवताओं को अमृत छोड़ कर अपने हलाहल को नाश किये उसी प्रकार लोक के हित निमित्त त्रिपुर नामक असुर को एकही बाण

से भस्म किये. हे प्रभो! आप स्वरूप के दाता हैं, मैं पापों से मुक्त हो बहुत पुण्यवान और गुणों का गृह हो गया।

हे देवेश्वर! प्रसन्न होकर ऐसा उपाय कीजिये कि मैं आप की शरण में आजाऊं। नित्य क्रिया के पश्चात् सूर्य्य मण्डल में बैठकर जनार्दन भगवान का ध्यान करें और फिर सूर्य्य को अर्घ्यदेवें, और समाप्ति में रक्त वस्त्र, सुवर्ण और गोदान करने से आरोग्यता, पूर्ण आयु, कीर्ति, लक्ष्मी और बल को प्राप्ती होती है।

जो व्रत करके भक्ति पूर्वक व्याहृति मंत्र अथवा गायत्री मन्त्र से चातुर्मास्य में प्रतिदिन तिलका होम करते हैं और अष्टोत्तर शत अर्थात् एकसौ आठ अथवा अठाइस तिलपात्र बुद्धिमान ब्राह्मण को दान करे तो शरीर और वाणी से किये हुये संचित पापों से छूट जाता और उसको कोई व्याधि तथा उत्तम सन्तति को पाता है।

हे देवताओं के देव! वांछितफल को देनेवाले जगत्पति! मैं तिलपात्र दान करता हूं इससे हमारा पाप नाश हो जाय। जो आलस्य त्याग कर चातुर्मास्य में अन्न का दान अथवा होम करते हैं और समाप्ति में घृतका घर और सुवर्ण समेत वस्त्र दान करते हैं उनको आरोग्यता, अतुल कान्ति पुत्र, सौभाग्य और धन मिलते हैं, और उनके जितने शत्रु रहते हैं वे सब नाश को प्राप्त होते हैं और वह ब्रह्मा के तुल्य हो जाता है।

जो पीपर के वृक्ष की सेवा करके पश्चात् वस्त्र दान करते हैं वे सब पापों से छूट कर अन्त में विष्णु का भक्त हो जाता है। जो ब्राह्मणों को सुवर्ण दान करते हैं वह कभी रोग से पीड़ित नहीं होते, जो विष्णु से प्रीति करने वाला शुभ तुलसी को धारण करते हैं वह सब पापों से छूट कर विष्णु लोक को प्राप्त होते हैं।

हे पाण्डव! पश्चात् विष्णु के लिये ब्राह्मण को भोजन करावे और शुद्ध आत्मा मनुविष्णु के शयन करने के उपरांत दोनों ऋतुओं में अमृत से उत्पन्न हुई दूर्वा को सर्वदा प्रातःकाल में अपने मस्तक पर धारण करे।

हे राजेन्द्र! इस मन्त्र से लक्ष्मी नाथ अर्थात् विष्णु को सतुष्ट करे कि हे दूर्वे! अमृत से तेरा जन्म हुआ है और तुम देवता तथा दैत्यों से वन्दित हो, सौभाग्य और सन्तति देकर शीघ्र कार्य करने वाली हो. हे

कुरुश्रेष्ठ! व्रत के अन्त में सुवर्ण की बनी हुई दूर्वा। हे सुव्रत! उसको अग्र भाग और सब पत्तो को वस्त्र युक्त और दक्षिणा के समेत इस मन्त्र से श्रेष्ठ ब्राम्हण को दान करे जैसे शाखा और प्रशाखा से पृथ्वी में फैली है, उसी प्रकार मुझको भी अजर और अमर सन्तान दे। इस प्रकार आलस्य रहित होकर जो चातुर्मास्य का व्रत करते हैं उसको दुःख तथा रोग का भय नहीं होता है। और वह कभी अशुभ को नहीं प्राप्त होता है और पापों से मुक्त होकर तथा सब भोगों को भोगकर के वह स्वर्ग लोक में आनन्द करता है।

जो मनुष्य देवताओं के देव केशव भगवान अथवा शिवजी के गति को गान प्रतिदिन करते हैं वह जागरण के फल को प्राप्त होते हैं, व्रत के अन्त में अच्छे बाजने वाला घंटा देवके निमित्त दान देना चाहिये। गुरु की अवज्ञा और अध्ययन करने से मैंने जो पाप किया। हे सरस्वती! हे संसार कीस्वामिनी! संसार की जड़ता को विनाश करनेवाली! हे साक्षात् ब्राम्हणी! हे विष्णु और रुद्र देवताओं से वन्दित! हे सुन्दर मुखवाली मेरे उस अध्ययन से उत्पन्न हुई जड़ता को हरण करो। हे लोक को पवित्र करने वाली ब्राम्हणी! तुम इस घंटा के नाद से प्रसन्न हो। जो चातुर्मास्य में ब्राम्हणों के चरणो दक को प्रतिदिन भक्ति पूर्वक पान करें और ब्राम्हणों को मेरा ही स्वरूप (विष्णु) जाने वह मानसिक शारिरिक वाक्य जनित पापों से छूट जाता है।

उसको कोई व्याधि नहीं होता है, तथाः उसके लक्ष्मी और आयुकी वृद्धि होती है। व्रत की समाप्ति में दो गोदान जो दान करते हैं, अथवा दूध देनेवाली एकही गौ को दान करते हैं। हे राजेन्द्र! यदि ऐसा प्रभुता न होय तो व्रत करने वाले मनुष्य को एक जोड़ा वस्त्र दान देना चाहिये। जो समस्त वेद को जानने वाले ब्राम्हण की वन्दना करते हैं, वह शीघ्र सब पापों से मुक्त होकर कृत कृत्य हो जाते हैं! पित्रों की भक्ति करने वाला क्षय रहित सुख को प्राप्त होते हैं और समाप्ति में ब्राम्हणों को भोजन कराने से आयु तथा धनको प्राप्त करते हैं।

जो मनुष्य प्रातः काल सन्ध्या करके समाप्ति में घृत का घट जोड़ा वस्त्र तिल और घंटा ब्राम्हण को दान देते हैं वह सरस्वती के तत्व को

प्राप्त करके विद्वान हो जाते हैं, जो कपिला गौ का दान करते हैं वह सदा धनाढ्य होते हैं जो कपिला को सब प्रकार से अलंकृत करके दान करते हैं अथवा भूमि का दान करते हैं वह दीर्घायु और सम्पूर्ण पृथीवी का राजा होता है। जो सर्वदा गौ का दान करता है वह संकट से छूट कर स्वरूपवान तथा भाग्यवान् होकर अक्षय सुख को प्राप्त करता है। और शरीर में जितने रोम होते हैं, उतने वर्ष पर्यन्त इन्द्र के समान स्वर्ग में वास करते हैं और जो सूर्य्य अथवा गणेश का प्रतिदिन नमस्कार भी करे वह विघ्न को नाश करने वाले गणेशजी की कृपा से आयु आरोग्य, ऐश्वर्य्य, उत्तम कान्ति और इच्छित फल को प्राप्त होते हैं और वह सर्वत्र निःसन्देह विजयी होते हैं, सिन्दूर के समान अरुण वर्ण कंचन का सूर्य्य बनावे और सब कामों की सिद्धि के निमित्त उसको ब्राह्मण को दान करे, हृदया से, मस्तकसे, दृष्टि से, मनसे, वचनसे, पदसे, हाथ से और घुटने सेअष्टांग प्रणाम कहा गया है। इस अष्टांग से भूमि में नमस्कार करके जो पूजन करते हैं वह जिस गतिको प्राप्त होते हैं सो गति एक सौ यज्ञ करने पर भी नहीं मिलता है, जो वर्षा के तीनों ऋतुओं में शिवजी की प्रसन्नता के निमित्त चांदी का दान देते हैं अथवा अपनी शक्ति के अनुसार प्रतिदिन शिवजी को सन्तुष्ट होने के निमित्त तामा दान करते हैं उसको शिव के भक्त का स्वरूपवान पुत्र मिलते हैं, समाप्ति के शहद से भर कर चांदी का पात्र दान करना उत्तम है और तांबे के पात्र को गुड़ से भर कर तांबे का पात्र दान करते हैं। हे ताम्र! तू पुष्ट करने वाला, देवताओं को प्रिय, शुभ और नित्य सब की रक्षा करने वाला है, इस कारण मुझको शान्ति दो।

विष्णु भगवान के शयन करने पर जो अपनी शक्ति के अनुसार तिलके सहित सुवर्ण और जोड़ा वस्त्र दान देते हैं वह सब पापों से मुक्त हो जाते हैं, और इस लोक में महाभोग भोग कर अन्त समय में शिवलोक को जाते हैं, जो नित्य सोना, चांदी, तांमा, और अन्न दान करते हैं और देवता का पूजा करते हैं और इन सब कार्य्यों में दक्षिणा देते हैं, चातुर्मास्य में जो ब्राह्मणों को वस्त्र दान करके गन्ध और पुष्प आदि से पूजन करते हैं वह विष्णु का प्रिय होते हैं समाप्ती में शय्या, वस्त्र और सुवर्ण का का पट्टी दान करने से कुबेर के समान धनाढ्य होकर अक्षय सुख को प्राप्त

होते हैं। वर्षा ऋतु में जो मनुष्य प्रतिदिन गोपीचन्दन दान करते हैं, उससे विष्णु भगवान सन्तुष्ट होकर उसको भुक्ति और मुक्ति देते हैं। देवता के शरीर में लगा हुआ कुसुम आदि जो लेपन करते हैं, जल क्रीड़ा में गोपियों के अङ्ग से लगा हुआ चन्दन और द्वारिका पुरी की पापों को नाश करने वाली मृतिका को मुनियों ने गोपीचन्दन कहा है। इस कारण यत्न पूर्वक उसका दान करने से विष्णु भगवान् वांछित फल को देते हैं। और समाप्ति में भी तुला प्रमाण शुभ है गोपीचन्दन दान देना चाहिये उसका आधी अथवा चौथाई वस्त्र और दक्षिणा सहित हृषीकेश भगवान के शयन करने पर जो व्रती मनुष्य प्रतिदिन दान करते हैं और दक्षिणा सहित शर्करा और गुण भी दान देना चाहिये। ऊख के सार अर्थात् रस से उत्पन्न हुई शर्करा अमृत की कली कही गई है। उस का दान करने से सूर्य नारायण सन्तुष्ट होकर वांछित फल देते हैं, और व्रत समाप्त होने पर बुद्धिमान को इस प्रकार उद्यापन करना चाहिये। धन का लोभ न करके आठ आठ पल का ताम्र पात्र बनवावे, यदि इतना शक्ति न हो तो चार चार पल का बनावे, शक्ति के अनुसार आठ, चार, अथवा एक पात्र बनावे और प्रत्येक पात्र को शर्करा फल और दक्षिणा रख कर फिर प्रत्येक पात्र को वस्त्र में बांधे और अन्नसहित श्रद्धा से ब्राह्मणों को दान करे और कहे कि शर्करा, सुवर्ण, और वस्त्र संयुक्त ताम्र-पात्र जो सूर्य्य से प्रेम करने वाला और पाप तथा रोगों को नाश करने वाला, तथा मनुष्यों को पुष्ट करके सन्तान और स्वर्ग को देनेवाला आयु को बढ़ानेवाला है इस कारण इसके दान से सर्वदा मेरी कीर्ति हो, जो इस प्रकार व्रत करे उसके पुण्य का फल सुनिये, वह गंधर्व विद्या से सम्पन्न होकर सब स्त्रियों को प्रिय होता है, राजा को राज्य, पुत्र चाहने वाले को पुत्र, धन चाहने वाले को धन, और जो निष्काम रहे उसको मुक्ति मिलता है, यथा शक्ति चारो मास में प्रति दिन शाक, मूल और फल आदि जो ब्राह्मणों को दान करते हैं और व्रत के अन्त में शक्ति के अनुसार दक्षिणा सहित एक जोड़ा वस्त्र दान करने वाला मनुष्य राज योगी होकर चिरकाल तक सुखी रहता है जैसे मनुष्य को तृप्ति करने वाला शाक देवताओं को प्रिय है तैसे ही पत्र और पुष्प सहित कन्द देव-

पिंयों का प्रिय है। हृषीकेश भगवान के शयन करने पर दोनों ऋतुओं में प्रतिदिन इन कन्द मूल आदि को दान देने से सर्वदा देवता मंगल करते हैं। हे अनघ! जो मनुष्य कटुत्रय अर्थात् सोंठ मिर्च और पीपर सूर्य्यनारायण को प्रीति के निमित्त सुशील ब्राह्मणों को दान देते हैं। हे सुव्रत! दक्षिणा सहित ब्राह्मणों को इस मन्त्र से यह दान करे कि जैसे कटुत्रय अर्थात् सोंठ, मिर्च, और पीपर शरीर के सब रोगों को नाश करनेवाला है, इस कारण इसके दान से सूर्य्यनारायण प्रसन्न हो। इस प्रकार भली भांति व्रत करके बुद्धिमान को उद्यापन करना चाहिये, सोंठ, मिर्च और पीपर, सुवर्णकी बनवा कर बुद्धिमान ब्राह्मण को दान करना चाहिये। इस प्रकार जो व्रत करते हैं वह सौ वर्ष पर्यन्त जीवित रहते हैं और वांच्छित मनोकामना को प्राप्त होकर अन्त में स्वर्ग को जाते हैं। हे राजन्! जो सुबुद्धि मनुष्य प्रति दिन ब्राह्मणो को मुक्ता दान करते हैं वह अन्नवान्, कीर्तीवान, और धनाढ्य होते हैं। चातुर्मास्य में प्रति दिन दूध के घट को सुन्दर वस्त्र में लपेट कर फल और दक्षिणा सहित जो दान करते हैं और सुवासिनियों को लक्ष्मी जान कर गन्ध और पुष्प से इनकी पूजा करे और ताम्बूल अथवा एक फलको इस (श्रीपतयेनमः) मन्त्र से दान कर और समाप्ति में ब्राम्हण की स्त्री को सुन्दर वस्त्र और आभूषण से विभूषित करके चमेली के फूल से दम्पति की पूजा करने से पुरुष स्त्री को और स्त्री पुरुष को प्राप्त होते हैं और पुरुष श्री अर्थात् धन को ऐसे प्राप्त होते हैं जैसे माधव भगवान कला सहित लक्ष्मी को प्राप्त हुये, जो जितेन्द्रिय ताम्बूल का दान करते हैं अथवा उसको त्याग कर देते हैं और एक जोडा लाल वस्त्र और कमण्डलु दक्षिणा सहित दान करते हैं, वह सब रोगों से छूट कर अत्यन्त सुन्दरता को प्राप्त करते हैं, और बुद्धिमान् पण्डित तथा मधुर कण्ठ हो जाते हैं, और गन्धर्वत्व को प्राप्त करके स्वर्ग लोक को जाते हैं ताम्बूल, कल्याणकारी और लक्ष्मी अर्थात् धन को देनेवाली और ब्रह्मा विष्णु, तथा शिवका स्वरूप है, इसका दान करने से ब्रह्मा आदि देवता बहुत सा धन देते हैं, सुपारी में ब्रह्मा, पत्र अर्थात् पानमें विष्णु और चूनामें साक्षात् शिव भगवान हैं, इन सबके दान से मेरा भाग्य और सम्पत्ति अधिकता से बढ़ती हैं सुपारी के चूर्ण से

पूरित, नागवल्ली अर्थात् पान, चना, खैर, संयुक्त इलायची लवंग मिलाया हुआ पान गंधर्व और अप्सराओं को प्रिय है। इस कारण इसका दान करने को कहे हैं कि तुम प्रसन्न होकर धनाढ्य और आतंक रहित को चातुर्मास्य का व्रत करके सुवासिनियों और ब्राह्मणों की स्त्री हो अथवा पुरुष, लक्ष्मी या गौरी के निमित्त पात्र में हल्दी रखकर दक्षिणा सहित उस हल्दी को दान करे, भक्ति पूर्वक जो दान करके यह कहते हैं कि हे देव! मेरे ऊपर प्रसन्न हो, यह स्त्री अपने पति के और पुरुष पत्नी के साथ सुख भोग करे और वह सौभाग्य वान होकर अक्षय अन्न धन और पुत्र वृद्धि तथा स्वरूप लावण्यता को प्राप्त करके स्वर्ग लोक में निवास करते हैं। पार्वती और महादेव के निमित्त चातुर्मास्य में प्रतिदिन पत्नी सहित ब्राह्मणों को पूजा करे और यथा शक्ति दम्पति को, यह कह कर कि उमापति प्रसन्न हो, दक्षिणा सहित सुवर्ण दान करे और बुद्धिमान को शिव की प्रतिमा बनाकर उद्यापन करना चाहिये। और पांचों उपचार से गौके सहित वृषभ की पूजा करके उनको मिष्ठान्न भोजन कराने से जो पुण्य होता है, उस पुण्य के फल को सुनिये। सौभाग्य, पूर्ण आयु नाश रहित सम्पति, सन्तान और अक्षय कीर्ति इस व्रत के प्रभाव से प्राप्त होता है इस लोक में सम्पूर्ण कामनाओं को भोगकर अन्तकाल में शिव पुर को जाता है और वहां चिरकाल पर्यन्त निवास करके बहुत सा सुख भोग करता है और बचे हुये पुण्य से मृत्युलोक में आकर पृथ्वीपति होता है, जो चातुर्मास्य में जितेन्द्रिय होकर फल को दान करता है और समाप्ति में ब्राह्मणों को सुवर्ण दान करता है वह संपूर्ण मनोकामना, और न मिलने योग्य सन्तति को प्राप्त करता है। फलों के दान के माहात्म्य से नन्दनवन में आनन्द करते हैं और पुष्पदान के अन्त में स्वर्ण का पुष्प आदि भी दान करते हैं, वह परम सौभाग्यवान होकर गंधर्वत्व को प्राप्त होता है, चातुर्मास्य में वासुदेव भगवान् के शयन करने पर आलस्य रहित होकर वामन भगवान के निमित्त नित्य दही भात और छः रसका सुस्वादु भोजन करावै अथवा दान करे किन्तु एकादशी के दिवस भोजन न करवाना चाहिये इसी प्रकार ग्रहण आदि में भी दान यदि प्रतिदिन दान देने की सामर्थ्य न हो तो पांच पर्वों में दान करवा देना चाहिये। अष्टमी, अमावास्या,

पूर्णिमा, प्रत्येक रविवार और शुक्रवार को और दोनों पक्षों की द्वादशी में अवश्य दान करे, इस व्रत को करके समाप्ति में यथा शक्ति पृथ्वी का दान देना चाहिये भूमिदान देनेकी सामर्थ्य न हो तो गौ को अलंकृत करके दान देना चाहिये इस की भी शक्ति न हो तो वस्त्र सुवर्ण और पादुका दान करे, वस्त्र के सहित छत्र और पदत्राण का दान सब दानों में उत्तम है, ब्राह्मणों को भोजन और क्षत्रियों को यथा सुख भूमि। हे मुनि शार्दूल! वैश्य को भूमि दान छोड़कर सब दान करना चाहिये, सामर्थ ब्राह्मण और शूद्र को भी यह कहा है। प्रथम शिवजी के उपदेश से कुवेर जन्हु गौतम और इन्द्र, ने इस व्रत को किया है। इस व्रत को करने वाला अक्षय धन धान्य तथा पुत्र पौत्र को प्राप्त होता है उसकी शरीर दृढ़ होती है और पूर्ण आयु मिलता है तथा उसके शत्रुका नाश होता है और विष्णु की भक्ति करने वाला विष्णु लोक में जाता अर्थात् निवास करता है। और आरोग्यता अतुलित सुख स्वरूप तथा धन को प्राप्त होता है और स्त्री वन्ध्या नहीं होती है यह व्रत अनन्त फल को देनेवाला है। जो नित्य यथाशक्ति दक्षिणा और दूध देनेवाली गौको अलंकारों से अलंकृत करके दान करता है वह सब ज्ञानी होता है और वह मनुष्य दूसरे लोक को न जाकर ब्रह्मलोक को जाता है तथा पित्रों के सहित अक्षय सुखको प्राप्त होता है, जो मनुष्य वर्षा ऋतु के चारों मास में प्रजापत्य व्रत करता है और समाप्ति में दो गौदान करके ब्राम्हणों को भोजन करवाता है वह सबपापो से शुद्ध अर्थात् छूट कर सनातन ब्रम्ह में लवलीन हो जाता है। एक दिवस का अन्तर दे करके उपवास कर और आठ दीपक का दान करे सुवर्ण सहित वस्त्र और भामिनी सहित शय्या तथा हल जोतने योग्य एक जोड़ा बैल सब सामग्री के सहित जो दान करता है कि हमसें विष्णु भगवान प्रसन्न हो, अथवा चातुर्मास्य में शाक मूल और फल से जो मनुष्य निर्वाह करता है और समाप्ति में गौदान करता है वह विष्णु लोक को जाता है तथा जो दूध पान करके व्रत करता है, वह सनातन ब्रम्ह लोक को जाता है और व्रत के अंत में दूध देने वाली बिआई हुई गौ दान करता है, जो दोनों ऋतुओं में केला और पलाश के पत्र में भोजन करता है, और शक्ति के अनुसार जोड़ा वस्त्र तथा कांसपात्र दान करने से सुखी होता है। कांस्य में

में ब्रम्हा, शिव और लक्ष्मी हैं, तथा कास्य ही अग्नि है और कास्य विष्णुमय है इस कारण मुझको शान्ति प्रदान करो। जो प्रतिदिन पलाशके पत्र में भोजन करते हैं और तैल न ग्रहण करते हैं वह पापों को इस प्रकार भस्म करते हैं जैसे रूई के समूह को अग्नि भस्म करते हैं, ब्रह्मघाती मदिरापान करने वाले और जो बालक का वध करते हैं मिथ्या बोलने वाले, स्त्री का घात करने वाले, व्रत में विघ्न करने वाले, अगम्या गामी अर्थात् भगिनी और पुत्री से गमन करने वाले तथा विधवासे गमन करने वाले चाण्डालिनी से और ब्राह्मणी से गमन करने वाले। हे केशव ! वे सब इस व्रत के करने से पापों से छूट जाते हैं और व्रत अलंकृत करे की समाप्ति में चौंसठ पल का ताम्रपात्र दूध देनेवाली गौ को बछवा समेत गौदान करे और विद्वान ब्राह्मण को सुन्दर वस्त्र से अलंकृत करके दान देवे। भूमि को लीपकर और नारायण देव को स्मरण करके जो भोजन करते हैं और खेती के लिये बहुत सा जल के निकट की भूमि को यथा शक्ति दान करते हैं वह आरोग्यता तथा पुत्र सम्पन्न धार्मिक राजा होते हैं और उसको भय नहीं होता और वह विष्णु लोक को जाता है और जो बिना मांगे हुये को दो बैल सुवर्ण सहित चंदन और षट्रस भोजन देता है वह परम गति को प्राप्त होता हैं अर्थात् मोक्ष होता है। और जो हृषीकेश भगवान के शयन में नक्तव्रत को करे पश्चात् ब्राम्हण भोजन करावे तो वह शिव लोक में आनन्द करता है। मनुष्यको एक वार थोड़ासा भोजन करके व्रत में दृढ़ रहना चाहिये और चारो मास में वासुदेव भगवानकी पूजा करे वह स्वर्ग भागी होता है। जो मनुष्य हृषीकेश भगवान के शयन करने पर पृथ्वीपर शयन करे और व्रत की समाप्ति में ब्राम्हण को भोजन कराके यथा शक्ति दक्षिणा देवे और सामग्री सहित शय्या दान देवे वह शिवलोक में आनन्द भोग करता है। जो मनुष्य दोनों ऋतुओं में पांव में तेल नहीं लगाता और ब्राम्हणों का पाद प्रक्षालन करे, उनको भोजन कराके यथा शक्ति दक्षिणा देते हैं वह विष्णु लोकमें जाते हैं। आषाढ़ से आश्विन पर्यन्त चारो मासमें नख कटवाना वर्जित है ऐसा करने वाला मनुष्य आरोग्यता और पुत्र से सम्पन्न धार्मिक राजा होता है। खीर, लवण, शहद, घृत और फलको गौरी शंकर की सन्तुष्टता के निमित्त त्यागकर फिर

कार्तिक की एकादशी को उन वस्तुओं को ब्राम्हणों को दान देवे यह रुद्र-व्रत करने से रुद्रलोक को प्राप्त होता है और जो "पव" अथवा सुन्दर चावल भोजन करते हैं वह पुत्र पौत्र आदि सहित शिवलोक में आनन्द करते हैं। व्रत करने वाला विष्णु भक्त सर्वदा तैल को परित्याग करे यह वर्षा ऋतु में विष्णु की पूजा करने से वैष्णवी गति को प्राप्त होते हैं और समाप्ति में सुवर्ण युक्त ताम्रपात्र को तैल से भरकर ब्राह्मण को दान करे और वर्षा ऋतु के चारो मास में शाक आदि भोजन नहीं करना, उससे पित्रों की तृप्ति होती है और वह विष्णु लोक को प्राप्त होता है और व्रत के अन्त में विष्णु के निमित्त चांदी का पात्र दान करना चाहिये और उसको वस्त्र में लपेट कर गन्ध पुष्प से पूजन करे। करील का अग्र, फल, मूल, पत्र, त्वचा पुष्प कंचन और काण्ड यह आठ प्रकार का शाक कहा गया है, व्रत का पूर्ण होने के निमित्त इनसे दैवज्ञ ब्राह्मणों की पूजा करके दक्षिणा सहित दान करने से शूलपाणी भगवान की कृपा से सायुज्य मुक्ति को प्राप्त होते हैं व्रत में मालपूआ के अतिरिक्त कुछ भोजन न करे और कार्त्तिक में स्वर्ण गेहूं और वस्त्र का दान करने से अश्वमेध यज्ञ करने का फल होता है। गेहूं सब जीवों को बल और पुष्टि की वृद्धि करने वाला तथा हव्य कव्यों में प्रधान है इस कारण मुझको लक्ष्मी प्रदान करे।

आषाढ़ आदि चार मास में मनुष्य को भण्टा, करेला, लौकी और परवल वर्जित है! यह और अन्य भी जो कोई रुचिकर फल होते हैं उनको भी चातुर्मास्य के पूर्ण हो जाने पर उनको चांदी का बना कर और उनके बीच में मूंगा लगवाकर शक्ति के अनुसार उनका पूजन करे और दक्षिणा के सहित भक्ति पूर्वक अभिष्ट वह सब ब्राह्मणों को दान करे, और देवता का नाम लेकर कहे कि वे मेरे ऊपर प्रसन्न हों, ऐसे जो करते हैं वह दीर्घायु आरोग्यता पुत्र, पौत्र, स्वरूप और अक्षय सन्तति तथा कीर्ति को प्राप्त होकर स्वर्ग में आनन्द से रहते हैं। जो फल त्याग कर देते हैं वह विष्णु लोक में पूजा जाता है और समाप्ति में उन फलों को सोना का बनाकर ब्राम्हण को दान देना चाहिये। श्रावण में शाक और भाद्रपद में दही वर्जित है, आश्विन में क्षीर और कार्तिक में दाल यह चार काम चारो आश्रमी को प्रतिदिन वर्जित है। मनुष्य को प्रथम मास में अर्थात् श्रावण

में शाक से, दूसरे अर्थात् भाद्र पद में दही से उत्तम व्रत करना चाहिये। तीसरे मास अर्थात् आश्विन में क्षीर और चौथे मास अर्थात् कार्तिक में दाल का व्रत करे। या इनको खाना न चाहिये और कोइड़ा उरिदि मूली, तथा गाजर करौंदा ऊख मसुरी और बहुत सा बीजवाला फल चातुर्मासमें मनुष्यों को वर्जित है। हे विप्रेन्द्र! पण्डितों ने इस व्रत को नित्य कहा है। विशेष कर बैर आंवला, लौकी, और इमली को परित्याग करना चाहिये, पुरानी इमली और पुराना आंवला ग्राह्य है अर्थात् यह भोजन के योग्य है।

जनार्दन भगवान के शयन करने पर वर्षा काल में चार मास पर्यन्त भक्तिवान मनुष्य को मचान, खाट, पर शयन करना वर्जित है तथा, बिना ऋतु के स्त्री सङ्ग करना वर्जित है, परन्तु ऋतु में मैथुन करे तो दोष नहीं होता है। मधुवेली, सहिंजन, भण्टा कलिङ्ग, बेल, गूलर तथा मिसपटा को चातुर्मास्य में मनुष्य को त्याग करना चाहिये। जिसके उदर में पेजिर्ण अर्थात् पुराना हो उससे विष्णु बहुत दूर रहते हैं और उपवास रात्री भोजन एकवार भोजन तथा अअयाचित इस प्रकार व्रत करे यदि ऐसे व्रत करने की शक्ति न हो तो अखण्डित अर्थात् प्रति दिन प्रातः और सन्ध्या काल में स्नान और यथाविधि पूजन करे तो वह मनुष्य विष्णु लोक को प्राप्त होता है। विष्णु के सन्मुख गाने बजाने वाला गन्धर्व लोक को प्राप्त होता है और शहद के त्यागने से मनुष्य राजा होता है और गुड़ के त्यागने से बहुत सा पुत्र पौत्र को बढ़ाने वाली सन्तति मिलते हैं।

हे राजन्! तैल त्याग करने से सुन्दर शरीर वाला होता है और कुसुम अर्थात् बर्रे का तैल त्याग करने से शत्रु का नाश होता है। महुआ का तैल त्याग करने से सौभाग्य प्राप्त होता है, कटु, तिक्त, आम्ल, मधुर कषाय, और लवण आदि रसों को त्याग करने से कुरूप और दुर्गन्ध को नहीं प्राप्त होता है, पुष्प आदि भोगों को त्याग करने से स्वर्ग में विद्याधर होता है जो योगाभ्यास करते हैं वह ब्रम्ह पदवी को प्राप्त होते हैं अर्थात् वह ब्रम्ह-मय हो जाते हैं। हे राजन्! ताम्बूल अर्थात् पान त्याग करने से रोगी शीघ्र आरोग्यहो जाता है, पदमें तथा मस्तक में तैल का लगाना परित्याग करने से दिव्य इन्द्रिय और दीप्तिमान होकर यक्ष द्रव्य पति होता है, दूध तथा दही त्याग करने से गोलोक मिलता है, स्थाली पाक को त्याग

करने से इन्द्रलोक को प्राप्त होता है और एक दिवस का अन्तर देकर व्रत करने से ब्रह्म लोक में आनन्द से वास करता है। हे राजन् ! वर्षा ऋतु के चारो मास में जो नख और बाल को धारण करे अर्थात् चौर नहीं करावे तो वह निःसन्देह कल्प पर्यन्त स्थायी होता है, इस "नमोनारायण" मन्त्र का जप करे उसको अनन्त फल प्राप्त होता है अर्थात् उसके पुण्यका अन्त नहीं होता है। विष्णु का चरण-कमल स्पर्श करने से मनुष्य कृत कृत्य हो जाता है। अर्थात् सब मनोकामना पूरी हो जाती है,जो विष्णु के मन्दिर में एक लाख प्रदक्षिणा करे वह हंसयुक्त विमान में आरूढ़ होकर विष्णु लोक को जाता है।

हे राजन् ! तीनरात्रि भोजन न करने से स्वर्ग में देवता के समान आनन्द करता है और दूसरे का अन्न त्याग करने से मनुष्य देवता हो जाता है जो मनुष्य चातुर्मास्य में प्रजापत्य व्रत को करे वह निःसन्देह तीनों प्रकार के ताप अर्थात् कायिक, वाचिक, मानसिक तथा सब पापों से छूट जाता है, जो हरि भगवान् के शयन करने पर तप्तकृच्छ्र और प्रति कृच्छ्र करके चातुर्मास्य व्यतीत करे, वह परम स्थान को जाता है. और फिर वह जन्म नहीं लेता है। हे राजन् ! चन्द्रायण व्रत करके जो चार मास व्यतीत करे वह दिव्य शरीर होकर शिवलोक में जाता है, जो मनुष्य अन्न आदि भोजन चातुर्मास्यमें त्याग दे वह विष्णु की सायुज्य मुक्ति को प्राप्त होता है और फिर जन्म नहीं लेता है। चातुर्मास्य में भिक्षा मांग कर जो मनुष्य भोजन करता है वह वेदों के व्रत का ज्ञाता होता है। हे राजन् ! दूधपान करके जो चार मास व्यतीत करता है उसके वंश का "कव" नाश नहीं होता है। हे पार्थ ! पंचगव्य भोजन करनेसे चन्द्रायण व्रतका फल मिलता है और तीन दिवस पर्यन्त जल त्याग करने से रोग से पीड़ित नहीं होता है इन सबको करने से केशव भगवान सन्तुष्ट होते हैं जिस दिवस से भगवान क्षीरसागर में शयन करते हैं और जिस दिवस को जागते हैं उतने दिवस पर्यन्त अनन्यमन अर्थात् एकाग्रचित्त होकर व्रत करने वाले मनुष्य को गरुड़ध्वज भगवान गति देते हैं।

इति श्री भविष्योत्तर पुराणे विष्णु शयने एकादशी
चातुर्मास्य माहात्म्य संपूर्ण ॥ १६ ॥

युधिष्ठिर जी श्रीकृष्ण से पूछे कि पुराणों में आषाढ़ के शुक्ल पक्ष में जो देवशयन व्रत होता है उसको मैं पहले ही सुन चुका, अब श्रावण कृष्णपक्ष में किस नामकी एकादशी होती है ? हे गोविन्द ! इसको कहिये। हे वासुदेव ! मैं आपको नमस्कार करता हूं।

श्रीकृष्ण जी कहने लगे कि हे राजन् ! पापों को नाश करने वाले व्रत को मैं कहता हूं सो आप सुनिये। पहिले नारद जी के पूछने से ब्रह्मा जी ने जो उत्तम कथन किये उसको मैं आपसे कहता हूं।

नारद जी बोले कि हे कमलासन भगवान ! मैं सुनना चाहता हूं कि श्रावण मास के कृष्ण पक्ष में जो एकादशी होती है उसका क्या नाम है ? उसके देवता कौन हैं और उसकी विधि क्या है और उससे कौन सा पुण्य होता है, हे प्रभो ! यह सब हमसे कहिये, नारद के इस वचन को सुनकर ब्रह्मा जी बोले कि हे नारद ! लोकों का हित होने की कामना से मैं तुमसे कहता हूं सो सुनो। श्रावण के कृष्ण पक्ष में कामिका नाक की एकादशी होती है उसके सुनने से वाजपेय यज्ञ का फल मिलता है उस दिवस शंख चक्र और गदाधारी विष्णुका जो पूजन करता है जिनका नाम श्रीधर, हरि, विष्णु, माधव, और मधुसूदन है, उनकी पूजा करने से जो फल होता है सो सुनो। जो फल गंगा, काशी, नैमिषारण्य और पुष्कर में नहीं होता है सो फल विष्णुकी पूजा करने से प्राप्त होता है, जो फल केदार और क्षेत्र कुरुक्षेत्र में सूर्य्य ग्रहण में नहीं होता वह फल कृष्ण जी की पूजा करने से होता है। जो फल समुद्र और वनयुक्त भूमि का दान करने तथा सिंह के बृहस्पति में गोदावरी और गण्डक में स्नान करने से नहीं होता, वह फल कृष्ण जी की पूजा करने से प्राप्त होता है। कामिका की व्रत करने वाले का फल इन दोनों फलों के समान कहा गया है। सामग्री सहित ब्याई हुई गौदान करने से जो फल होता है सो फल कामिका एकादशी का व्रत करने वाले को प्राप्त होता है, जो श्रेष्ठ मनुष्य श्रावण में श्रीधर देव अर्थात् विष्णु भगवान की पूजा करे, उससे देवता गंधर्व और सर्प आदि पूजित हो जाते हैं, इस कारण पाप से डरने वाले मनुष्य को सब यत्न से कामिका एकादशी के दिवस यथा शक्ति हरि भगवान का पूजन करना उचित है। जो पापरूपी कीच से फँसे हुये संसाररूपी

समुद्र में डूब रहे हैं, उनके उद्धार के निमित्त कामिका एकादशी का व्रत उत्तम है, इससे परे पवित्र और पापों को नाश करने वाली कोई नहीं है। हे नारद! ऐसा जानकर स्वयं हरि भगवान ने पहिले इसको कहे हैं। अध्यात्म विद्या में निरत रहने वाले मनुष्य को जो फल प्राप्त होता है उससे अत्यन्त अधिक कामिका एकादशी की उपासना से प्राप्त होता है। कामिका व्रत करने वाले जो मनुष्य रात्रि में जागरण करते हैं वह भय दायक यम और दुर्गति को नहीं देखते हैं कामिका की उपासना करने से कुयोनि नहीं देखते हैं अर्थात् कुयोनि में जन्म नहीं लेता है, कामिका व्रत से योगी कैवल्यपद को प्राप्त हुये हैं, इस कारण सब यत्न से कामिका का व्रत करना चाहिये। जो मनुष्य तुलसी के पत्र से हरि भगवान की पूजा करते हैं वह पापों से ऐसे अलग रहते हैं जैसे जलसे कमल का पत्र अलग रहता है। एक भर सुवर्ण और चार भर चांदी दान करने से जो फल प्राप्त होता है सो फल तुलसी के पत्र के पूजन से होता है। रत्न, मुक्ता, वैडूर्य, मणि और मूंगा आदि से पूजन करने से विष्णु इतना प्रसन्न नहीं होते हैं, जितना प्रसन्न तुलसी दल से पूजन करने से होते हैं। जिस मनुष्य ने तुलसी की मंजरी से केशव भगवान की पूजा की उसने जन्मभर के किये हुये पापों का लेख मिटा दिया, जो दर्शन मात्र से समस्त पापों के नाश करनेवाली, स्पर्श करने से शरीर को पवित्र करने वाली, वन्दना करने से रोगों को नाश करने वाली, तथा सींचने से यम का त्रास नाश करने वाली, लगाने से कृष्णभगवान के समीप निवास करने वाली, तथा भगवान के चरणों पर चढ़ाने से मुक्ति देनेवाली है, उस तुलसी को नमस्कार है। जो एकादशी के दिवस रात्रि और दिवस दीपदान करते हैं उनके पुण्य की संख्या को चित्रगुप्त भी नहीं जानते हैं। एकादशी के दिवस कृष्ण भगवान के सन्मुख जिसका दीपक जलता है उसके स्वर्गस्थ पितृ अमृत से सन्तुष्ट होते हैं। घृत अथवा तिलके तेल से दीपक जलानेवाले सौ करोड़ दीपक युक्त होकर सूर्य लोक को जाते हैं इस कामिका एकादशी की कथा मैंने तुम्हारे सन्मुख कही, इससे सब पापों को नाश करने वाली इस एकादशी का व्रत मनुष्य को करना चाहिये।

यह ब्रह्म हत्या तथा भ्रूणहत्या को नाश करनेवाली और स्वर्गस्थान तथा महापुण्य के फल को देनेवाली है।

श्रद्धा सहित इसका माहात्म्य सुनने से मनुष्य सब पापों से छूट कर विष्णु लोक को प्राप्त होते हैं।

इति श्री ब्रह्मवैवर्त पुराणे श्रावण कृष्ण कामिका
एकादशी माहात्म्य भाषा समाप्त ॥ १७ ॥

युधिष्ठिर जी बोले कि हे मधुसूदन! श्रावण के शुक्ल पक्ष में किस नाम की एकादशी होती है सो प्रसन्न होकर आप हमसे कहिये। श्री कृष्ण जी बोले हे राजन्! पापों को हरनेवाली कथा मैं कहता हूं तुम सावधानी से सुनो इसके सुनने मात्र से वाजेपय का फल मिलता है।

पहिले द्वारपर युग के आरम्भ में महीजित नामक राजा माहिष्मती पुरी में राज्य करते थे पुत्रहीन होने से उस राजा को वह राज्य सुखदायक नहीं लगता था अपुत्री को इस लोक तथा परलोक में सुख नहीं होता है पुत्र के सुख की प्राप्ति के निमित्त यत्न करते हुये उस राजा को बहुत काल व्यतीत हो गया, परन्तु सब सुखों को देनेवाला पुत्र उस राजा को न प्राप्त हुआ, और अपनी अवस्था अधिक देख राजा चिन्ता में निमग्न हो सभा में बैठ कर प्रजाओं से पूछने लगे। हे लोगों! इस जन्म में तो मैंने पाप नहीं किया और अन्याय से उपार्जन किया हुआ धनभी मेरे वंश में या कोश में नहीं है। मैंने देवता और ब्राह्मणों का धन कभी नहीं ग्रहण किया। तथा बहुतसा पाप देनेवाली पराये की थाती अपहरण नहीं किया धर्म से पृथ्वी विजय करके पुत्र के तुल्य प्रजा का पालन तथा भ्राता और पुत्र समान भी दुष्ट मनुष्यों को दण्ड दिया। माहात्मा और शत्रु सज्जनों का पूजा किया। हे श्रेष्ठ ब्राह्मणों! इस प्रकार धर्म युक्त पथ में चलने पर भी मेरे गृह में पुत्र नहीं उत्पन्न हुआ। इस कारण से इसका विचार कीजिये, प्रजा और पुरोहितों सहित राजा का यह वचन सुनकर सब ब्राह्मण राजा के हितार्थ विचार कर सब लोग एक सघन वनको प्रस्थान किये और जहां तहां ऋषियों से सेवित आश्रमों को देखते हुये और राजा के हितकी कामना से उत्तम मुनि को देखते घोर तप करते हुये चिदानन्द परमात्मा में निरामय निराहार, जितात्मामा, जित क्रोध, और

सनातन धर्मत्व को जानने वाले, समस्त शास्त्र में विशारद, अनेक ब्रह्म के समान दीर्घायुवाले महात्मा लोमश मुनि को देखते हुये कल्प के व्यतीत होने पर जिसका एक लोम खड़े हैं।

इस कारण त्रिकाल को जानने वाले महामुनि का लोमश नाम हुआ उनको देख कर सब लोग प्रसन्न होकर उनके निकट गये और सब लोग यथोचित नमस्कार करते हुये और नम्रता पूर्वक परस्पर कहने लगे, कि हम लोग अपने भाग्यवश उत्तम मुनि को प्राप्त हुये, तब उन लोगों को आते देखकर मुनि बोले कि तुम लोग यहां किस कारण से आये हो? सो कहो, मेरे दर्शन मात्र से प्रसन्न होकर तुम लोग अपनी वाणी से क्यों स्तुति करते हो, निःसन्देह मैं तुम लोगों का हित करूँगा, मेरे ऐसे का जन्म केवल दूसरों के उपकार के निमित्त है, इसमें सन्देह मत करो।

तब वे सब बोले, हम अपने आगमन का कारण कहते हैं, आप ध्यान देकर सुनिये, संदेह दूर करने के निमित्त आपके यहां आये हैं, ब्रह्मा से भी अधिक श्रेष्ठ आपसे बढ़कर कोई नहीं है, इसकारण कार्य वश हमलोग आपके निकट आये हैं, यह महीजित नामक राजा पुत्र रहित हैं। हे ब्रह्मन् हमलोग पुत्र के समान पालन किये हुये उस राजा की प्रजा हैं, उसको अपुत्री देख कर हम लोग उसके दुःख से दुःखी हैं।

हे द्विजोत्तम! नैष्ठिकी गति कर के यहां तपस्या करने को आये हैं उसके भाग्यवश हम लोगों को आपका दर्शन प्राप्त हुआ, क्योंकि महापुरुषों के दर्शन से मनुष्यों की कार्य की सिद्धि होती है।

हे मुनि! ऐसा उपदेश दीजिये जिससे राजा को पुत्र हो उन लोगों का यह वचन सुनकर एक मुहूर्त भर मुनि ध्यानावस्थित होगये फिर उस राजा का प्रथम जन्म विचार कर बोले कि यह राजा पूर्व जन्म का वैश्य है और धनहीन होने के कारण दुष्कर्म को किया, ग्राम२ में भ्रमण करके वाणिज्य कर्म में निरत होकर, और एक समय ज्येष्ठ मास के शुक्ल पक्ष में द्वादशी के दिवस मध्याह्न काल के समय ग्राम की सीमा पर तृषा से व्याकुल होकर सुन्दर जलाशय को देख जल पीने की इच्छा किया, उसी समय तुरन्त की व्याई हुई बछड़ा समेत गैया वहां आई, घाम से दुःखित और तृषा से व्याकुल हुई यह गैया उसमें जलको पीने लगी। तब वह

राजाने उस गैया को हटा कर स्वयं उस जल को पीने लगा, उस कर्म के करने से वह राजा पुत्रहीन हुआ है।

परन्तु पूर्वजन्म के किये हुये पुण्य से अकण्टक राज्य को प्राप्त किये, तब लोग बोले कि हे मुनि! पुराणों में सुना जाता है कि पुण्य से पाप का नाश होता है, इस कारण जैसे पाप नाश हो सो उपदेश कीजिये, जैसे आप के प्रसाद से इनको पुत्र हो सो कृपाकर कहिये।

लोमश मुनि बोले कि श्रावण के शुक्ल पक्ष में पुत्रदा नाम्नी प्रसिद्ध एकादशी तिथि है, हे जनों! तुम सबलोग न्याय और यथा विधि जागरण सहित उसका व्रत करो। और उसका जो निर्मल पुण्य हो सो राजा को दो, ऐसा करने पर अवश्य ही राजा को पुत्र होगा।

लोमश ऋषि का यह वचन सुन उनको प्रणाम कर आनन्द से प्रफुल्लित नेत्र किये हुये अपने२ घर को गये। और श्रावण मास के आने पर लोमश ऋषि का वचन स्मरण करके राजा सहित सब लोग व्रत किये और उस पुण्य को द्वादशी के दिवस सब लोग राजा को देदिये।

अनन्तर फिर पुण्य को देने से रानी सुन्दर गर्भ धारण की और प्रसव काल प्राप्त होने पर सुन्दर प्रसव की, हे नृप श्रेष्ठ! इस प्रकार यह एकादशी पुत्रदा नाम से प्रसिद्ध हुई।

इस लोक तथा परलोक में सुख की इच्छा करने वाले को यह व्रत करना चाहिये। इसका माहात्म्य सुनने से सब पापों से मुक्त हो जाता है, इस लोक में पुत्र का सुख और परलोक में स्वर्ग को प्राप्त होता है।

इति श्री भविष्योत्तर पुराणे श्रावण शुक्ल पुत्रदा
एकादशी माहात्म्य भाषा सम्पूर्ण ॥ १८ ॥

युधिष्ठिर जी बोले कि हे जनार्दन भगवान! भाद्र पद के कृष्ण पक्ष में किस नामकी एकादशी होती है। वह मैं सुनना चाहता हूं सो आप कृपा कर कहिये। श्री कृष्ण जी बोले कि हे राजन्! एकाग्रचित्त से सुनिये, मैं विस्तार पूर्वक कहूंगा। सब पापों को नाश करनेवाली "अजा" नाम से प्रसिद्ध है।

जो मनुष्य हृषीकेश भगवान की पूजा करके उसका व्रत श्रद्धा पूर्वक करते हैं उनका पाप व्रत की कथा श्रवण से भी नाश होता। हे राजन्!

दोनों लोकों में हित करने वाली इसके परे कोई नहीं है। मैं सत्य कहता हूं मेरा कथन असत्य नहीं है।

पुरातन काल संपूर्ण पृथ्वी का पति सत्यसन्ध हरिश्चन्द्र नामक चक्रवर्ती राजा हुये, वह किसी कर्म के वशही अपने राज्य से भ्रष्ट होगये, वह अपनी स्त्री, पुत्र तथा अपने को भी बेच दिये।

हे राजेन्द्र! वह पुण्यात्मा राजा चाण्डाल का दास होकर सत्य को ग्रहण किये हुये मृतकों का वस्त्र ग्रहण करते थे वह श्रेष्ठ राजा सोम के समान अपने सत्य से विचलित नहीं थे। इसी प्रकार उस राजा का बहुत सा वर्ष व्यतीत हो गया, तब वह राजा अत्यन्त दुःखी होकर चिन्ता करने लगा कि मैं क्या करूँ और कहां जाऊं जिससे मेरा उद्धार हो इसी प्रकार पाप समुद्र में निमग्न हो अर्थात् डूबा हुआ चिन्ता करने लगा।

उसी समय राजा को आतुर अर्थात् चिन्तित जान कर कोई मुनि वहां आये, ब्रह्मा ने दूसरे का उपकार करने के निमित्त ब्राह्मण को बनाया है, उस श्रेष्ठ ब्राह्मण को देख कर वह श्रेष्ठ राजा उनको नमस्कार किये और दोनों हाथ जोड़कर गौतमके आगे ठाढ़ होकर दुखसे अपना समस्त वृतान्त उनसे कहने लगे।

राजा की बात सुनकर गौतम मुनि आश्चर्जित होकर राजा को इस व्रत का उपदेश दिया कि हे राजन्! भादोमास का कृष्ण पक्ष की अत्यन्त पुण्य को देनेवाली सुन्दर "अजा" नामकी एकादशी होती है।

हे राजन्! तुम्हारे भाग्यवश आज के सातवें दिन वह होगी। तुम उसका व्रत करो, सब पापों से मुक्त हो जाओगे, उपवास करके रात्रि में जागरण करना इस प्रकार उसका व्रत करने से समस्त पाप नाश हो जायगा, और हे नृपोत्तम्! तुम्हारे पुण्य के प्रभाव से मैं आया हूं। इस प्रकार राजा से कहकर वह मुनि अन्तर ध्यान हो गये और मुनि की बात सुनकर वह राजा उत्तम व्रत को किये। इस व्रत के करने पर क्षण भर में राजा के पाप का अन्त हो गया।

हे राज शार्दूल! इस व्रत के प्रभाव को सुनिये जो कष्ट बहुत वर्ष तक भोगने योग्य हो वह नाश होगा। इस व्रत के प्रभाव से वह राजा अपनी स्त्री सहित योग धारण किये तथा उसका पुत्र भी जीवित हो गया।

आकाश में देवताओं के नगारे बजने लगे, और पुष्प की दृष्टि हुई और इस एकादशी के प्रभाव से वह राजा अकण्टक राज्य को प्राप्त किये और परिजन तथा कुटुम्बियों के सहित राजा हरिश्चन्द्र को स्वर्ग वास मिला हे राजन् ! इस प्रकार से जो द्विजोत्तम इसको करते हैं वे सब प्रकार के पापों से मुक्त होकर अवश्य स्वर्ग लोक को जाते हैं ।

हे राजन् ! इसको पढ़ने सुनने से अश्वमेध यज्ञ का फल मिलता है !

इति श्री ब्रह्मवैवत पुराणे भाद्र कृष्ण अजा
एकादशी माहात्म्य भाषा संपूर्णम् ॥ १६ ॥

युधिष्ठिर जी बोले कि भादों के शुक्ल पक्ष की एकादशी का क्या नाम है, उसकी विधि क्या है, उसका पुण्य क्या है ? यह सब हमसे आप कहिये ।

श्री कृष्ण जी बोले कि हे राजन् ! महापुण्यवती स्वर्ग और मोक्ष को देनेवाली और सब पापों को नाश करने वाली उत्तम वामन एकादशी को मैं कहूंगा । हेराजन् ! यही एकादशी जयन्ती एकादशी भी कही जाती है, इसके सुनने से समस्त पाप नाश हो जाते हैं । जो पुण्य मनुष्य का इससे मिलता है वह पुण्य वाजपेय यज्ञ करने पर भी नहीं प्राप्त होता है ।

पापियों के पाप नाश करने के निमित्त जयन्ती का व्रत उत्तम है, हे राजन् ! इससे बढ़कर कोई नहीं हैं ।

हे राजन् ! इस कारण सद्गति के इच्छा करने वाले को इसका व्रत करना चाहिये, जो वैष्णव मनुष्य मेरी भक्ति में तत्पर होकर भादों मास में वामन भगवान की पूजा किया उससे तीनों लोक पूजित हो गये ।

जो कमल नयन वामन भगवान का पूजन कमलसे करते हैं वे निःसन्देह हरिभगवान के समीप जाते हैं । जिसने भादो मास के शुक्ल पक्ष में जयन्ती एकादशी के दिवस व्रत पूजन किया उसने ब्रह्मा, विष्णु, महादेव के सहित तीनों लोकों का पूजन किया ।

हे राजन् ! इस कारण हरि वासर अर्थात् एकादशी का व्रत करना चाहिये । इसको करलेने पर तीनों लोकों में कुछ भी बाकी नहीं रहता, इस एकादशी को शयन करते हुये भगवान करवट हो जाते हैं । इस कारण सब लोग इसको परिवर्तिनी कहते हैं ।

युधिष्ठिर बोले कि हे जनार्दन! हमको बहुत सन्देह है उसको आप सुनिये। हे देवेश! आप किस प्रकार शयन करते हैं और किस प्रकार करवट लेते हैं, हे देवताओं के ईश्वर! आप ने बलि दैत्य-को किस निमित्त बांधा। हे जनार्दन! सब देवता क्या करने से सन्तुष्ट होते हैं हे प्रभो! चातुर्मास का व्रत करने वालों को कौनसी विधि है और हे जनार्दन! आपके शयन करने पर लोग क्या करते हैं, हे प्रभो! यह सब विस्तार पूर्वक वर्णन करके मेरे संदेह को दूर कीजिये, तब श्री कृष्ण जी बोले कि हे राज शार्दूल! पापको हरने वाली उत्तम कथा को सुनो। हे राजन्! पहिले त्रेता युग में बलि नाम का दैत्य था और वह मेरा बड़ा भक्त था, मेरी भक्तिमें तत्पर होकर वह नित्य मेरी पूजा किया करता था। वह प्रतिदिन विविध प्रकार के सूक्तोंसे मेरी पूजा कर और नित्य ब्राह्मणों की पूजा तथा यज्ञ करता था परन्तु इन्द्र से द्वेष करके मेरा दिया हुआ इन्द्रलोक तथा समस्त देवताओं के लोक को उस महात्माने जीत लिया, तब सब देवता यह देख कर एकत्रित हो मन्तव्य विचार करके भगवानजी से कहने के निमित्त सब प्रस्थान किये।

उसके पश्चात् देवर्षियों के सहित इन्द्र भी प्रभु के निकट गये और अपना मस्तक पृथ्वी पर रख कर वेद मन्त्र से स्तुति किये और देवताओं के सहित बृहस्पति से मैं बहुत वार पूजित हुये, तब मैं वामन का स्वरूप धारण करके पांचवां अवतार धारण किया, तब समस्त ब्रह्माण्ड रूपी अत्यन्त उग्र स्वरूप से सत्यपर स्थिर रहने वाले बलि को उस बालक अर्थात् वामन ने जीत लिया।

युधिष्ठिर बोले कि हे देवेश! तुम्हारे वामन स्वरूप से वह दैत्य किस प्रकार जीता गया, मैं आपका भक्त हूं यह सब विस्तार पूर्वक कहिये।

श्रीकृष्ण जी बोले कि मेरा ब्रह्मचारी रूप उस बालक ने बलि से प्रार्थना की कि तीन पग भर भूमि मुझे दीजिये वह मुझको तीन लोक के समान है। हे राजन्! यह तुमको देनाही पड़ेगा, इसमें कुछ विचार मत करो,-इस प्रकार मेरे कहने पर वह राजा तीन पग भूमि दान किया और

संकल्प करते ही त्रिविक्रम शरीर अधिकता से बढ़ गयी, यहां तक कि भूलोक में पद भुवलोक में जांघ, स्वर्ग लोक में कमर, महर्लोक में उदर अर्थात् पेट, जन लोक में हृदय, और तप लोक में कण्ठ को स्थापन करके सत्य लोक में मुख, उसके ऊपर मस्तक स्थापित किया। सूर्य, चन्द्रमा आदि ग्रह तथा योगों के सहित नक्षत्र तब इन्द्र सहित समस्त देवता और शेष आदि नाग गण वेद के सूक्त से विविध प्रकार की मेरी स्तुति की, तब बलि का हाथ पकड़ कर मैंने कहा, कि एक पद से पृथ्वी और दूसरे से स्वर्ग लोक पूर्ण हो गया।

हे धर्मात्मा! तीसरे पद का स्थान दीजिये। मेरे इस प्रकार कहने पर बलि अपना मस्तक दे दिया। हे राजन्! इसके बाद मैंने एक पद उसके मस्तक पर दिया तब मेरी पूजा करने वाला बलि दैत्य पाताल को गया, फिर उसको वीनित और नम्र देख कर उससे बोला कि हे मनुजाद बलि! मैं सर्वदा तेरे निकट निवास करूंगा। तब महाभाग्यवान् विरोचन के पुत्र बलि से यह कहने पर भादो के शुक्ल पक्ष में परिवर्तिनी एकादशी के दिवस वहां बलिके आश्रम पर मेरी मूर्ति स्थापित हुई और दूसरे उत्तम क्षीरसागर में शेष के पृष्ठ पर हुई।

जब तक कार्तिक की एकदशी आती है तब तक हृषीकेश भगवान शयन करते हैं, तब जो पुण्य होता है वह सब पुण्यों में उत्तम हैं। हे राजन्! इस कारण पापों को दूर करने वाली महापुण्यवती और पवित्र इस एकादशी का व्रत यत्नपूर्वक करना चाहिये। इस एकादशी के दिवस शयन किये हुये भगवान करवट लेते हैं, इसमें तीनो लोकों के पितामह भगवान का पूजन करना चाहिये और चांदी तथा चावल सहित दधी का दान करना चाहिये, और रात्रि में जागरण करने वाले मनुष्य मुक्त हो जाते हैं।

हे राजन्! सब पापों को दूर करने वाली तथा भुक्ति मुक्तिको देने वाली इस शुभ एकादशी का व्रत जो इस रीति से करेंगे वे देवलोक को प्राप्त होकर वहां चन्द्रमा के समान विराजमान होंगे। जो मनुष्य पापों को

दूर करनेवाली इस कथा को सुनते हैं वे एक हजार अश्वमेध यज्ञ के फल को प्राप्त होते हैं।

इति श्रीस्कन्द पुराणे भाद्रपद शुक्ल परिवर्तिनी
एकादशी माहात्म्य भाषा सम्पूर्ण ॥ २० ॥

युधिष्ठिर महाराज बोले कि हे मधुसूदन! आश्विन मास के कृष्ण पक्ष की किस नामकी एकादशी होती है सो कृपा पूर्वक हमसे कहिये। श्रीकृष्ण जी बोले, आश्विन कृष्ण पक्ष में इन्दिरा नामकी एकादशी होती है। हे राजन्! पापों को नाश करने वाली तथा पितरों को अधोयोनि से उत्तम गति को देनेवाली कथा को सावधान से सुनो। इसके सुनने से वाजपेय यज्ञ का फल मिलता है। पहिले सतयुग में शत्रुओं को दण्ड देनेवाला राजा हुये। यह यशस्वी राजा इन्द्रसेन नामसे प्रसिद्ध होकर महिष्मती पुरीमें धर्म से प्रजा का पालन करते हुये राज्य करते थे। वह महिष्मती पुरी का राजा पुत्र पौत्र तथा अन्न धन से सम्पन्न और विष्णु की भक्ति में तत्पर थे, अध्यात्म विद्या का चिन्तन करने वाले मुक्ति को देने वाले गोविन्द भगवान का नाम जप करते हुए काल को व्यतीत करते थे।

एक दिवस वह राजा सुख पूर्वक सभामें बैठे थे कि वहां पर आकाश मार्ग से बुद्धिमान नारद मुनि आये उनको आते देख कर राजा हाथ जोड़ कर उठ खड़े हुये और विधि पूर्वक अर्घ्य दे मुनि की पूजा करके उनको आसन पर बैठाये तब सुख पूर्वक बैठ कर मुनि उस राजा से पूछने लगे कि हे राजेन्द्र! तुम्हारे सातों अंगो में कुशल है न? तुम्हारी बुद्धि धर्म में रहे हैं और तुम विष्णु की भक्ति में रहते हो। देवर्षि अर्थात् नारद की यह बात सुनकर राजा बोले कि हे मुनि श्रेष्ठ! आपके कृपासे मुझको सर्वत्रही कुशल है। आज आपके दर्शनसे समस्त यज्ञका क्रिया सफल हुई। हे ब्रह्मर्षि! आप कृपा करके अपने आगमन का कारण कहिये, तब राजा की यह बात सुनकर नारद जी बोले कि हे राज शार्दूल! आश्चर्य देने वाले मेरे वचन को सुनो।

हे नृपोत्तम ! मैं ब्रह्मलोक से यमलोक को गया और वहां भक्ति-पूर्वक यमराज से पूजित होकर उत्तम आसन पर बैठकर धर्मशील और सत्यवान धर्मराज की उपासना की और उसी यमराज की सभा में बहुत पुण्य करने वाले तुम्हारे पिता को व्रत का भंग हो जाने के पाप से मैंने देखा । हे राजन ! उन्होंने जो संदेशा कहा उसको मैं तुमसे कहता हूं ।

उन्होंने कहा है कि महिष्मती पुरी का इन्द्रसेन नामक राजा है । हे ब्रह्मन् ! उसके आगे कहना कि पूर्वजन्म में कोई विघ्न होजाने के कारण मैं यमराज के निकट निवास करता हूं । हे पुत्र ! इन्दिराके व्रत का दान देकर हमको स्वर्ग पठाओ । वह उनका कहा हुआ मैं तुमसे कहा । हे राजन् ! अपने पिता के स्वर्ग में पठाने के निमित्त इन्दिरा एकादशी को व्रत करो । उस व्रत के प्रभाव से तुम्हारे पिता स्वर्ग को जायंगे ।

तब राजा बोले कि हे भगवन ! कृपा करके इन्दिरा का व्रत वर्णन कीजिये । यह किस विधि से, किस पक्ष में और किस तिथि को करना चाहिये ।

नारद जी बोले कि हे राजन् ! मैं शुभादय व्रत को कहता हूं तुम सुनो, आश्विन के कृष्ण पक्ष में दशमी के दिवस प्रातःकाल में श्रद्धा-पूर्वक स्नान करने पश्चात् दो पहर के समय नदी आदि में स्नान कर फिर श्रद्धा तथा प्रीति पूर्वक पित्रों का श्राद्ध करे और एकवार भोजन करे तथा भूमि पर शयन करे और निर्मल प्रातःकाल में अर्थात् एकादशी को प्रातः काल होनेपर दतुअन करके मुख प्रक्षालन करे, फिर व्रत के नियमों को भक्ति पूवक ग्रहण करे अर्थात् प्रतिज्ञा करे कि आज सम्पूर्ण भोगों को त्याग करके विना भोजन किये हुये व्रत करूंगा तथा कल भोजन करूंगा।

हे अच्युत! हे पुण्डरीकाक्ष! मैं आपकी शरण हूं इस प्रकार के नियम करके दो प्रहर के समय में सालग्राम शिला के आगे विधि पूर्वक श्रद्धा करके दक्षिणा के सहित उत्तम ब्राह्मणों का पूजन करके उनको भोजन करावे पित्रों के श्राद्ध करने से जो बच जाय उसको सूंघ कर गौ को दे देवे और धूप तथा गन्ध आदि से हृषीकेश भगवान की पूजा करके रात्रि में केशव भगवान के निकट जागरण करे इसके पश्चात् द्वादशी के दिवस प्रातः

काल होनेपर भक्ति पूर्वक हरि भगवान की पूजा करके ब्राह्मणों को भोजन करावे और भाई, पुत्र तथा पुत्री के सहित आप भी मौन होकर भोजन करे अर्थात् भोजन के समय किसी से न बोले।

हे राजन्! इस विधि से जितेन्द्रिय होकर व्रत करो, हे राजन्! इस प्रकार व्रत करने से तुम्हारे पिता विष्णु लोक को जायंगे। इस प्रकार राजा से कह कर नारद मुनि अन्तर्ध्यान हो गये। और वह राजा मुनिकी कही हुई विधि के अनुसार व्रत को किया। हे कौन्तेय! उस राजा को पुत्र, दास और रनिवासके सहित व्रत करने से आकाश से फूलों की वृष्टि हुई और उस राजा का पिता गरुड़ पर चढ़कर विष्णुलोक को गया। और राजा ऋषि इन्द्रसेन भी निष्कण्टक राज्य भोग करके और पुत्र को राज्य पर बैठाकर आप भी स्वर्गलोक को गये। ऐसी इन्दिरा एकादशी के व्रत का माहात्म्य मैंने तुम्हारे आगे कहा। इसको पढ़ने तथा सुनते से मनुष्य समस्त पापों से छूट जाते हैं और सब प्रकार के भोगों को भोग करके सर्वदा विष्णुलोक में निवास करते है।

इति श्रीब्रह्मवैवर्त पुराणे आश्विन कृष्ण इन्दिरा
एकादशी माहात्म्य भाषा संपूर्ण ॥ २१ ॥

युधिष्ठिरजी बोले कि हे मधुसूदन भगवान्! आश्विन मास के शुक्ल पक्ष में जो एकादशी होती है। उसका क्या नाम है? श्रीकृष्ण जी बोले कि हे राजेन्द्र! आश्विन के शुक्लपक्ष में जो एकादशी होती हैं उसका पाप नाशक महात्म में कहा है सो आप सुनिये।

यह श्रेष्ठ और सब पापों को हरने वाली एकादशी पाशांकुशा नाम से प्रसिद्ध है, इसमें मनुष्य को विधि पूर्वक पद्मनाभ की पूजा करनी चाहिये। यह एकादशी मनुष्य को स्वर्ग मोक्ष तथा समस्त इच्छित फल को देनेवाली है, बहुत कठिन और बहुत दिनों तक तपस्या करने से मनुष्य को जो फल प्राप्त होता है सो फल गरुड़ध्वज भगवान के नमस्कार करने से होता है। मोह वश अर्थात् अज्ञानता से बहुत सा पाप करके भी पापों को दूर करने वाले हरि भगवान को जो नमस्कार करते हैं वह घोर नरक में नहीं जाते हैं

और पृथ्वी भर में जितने तीर्थ और पवित्र स्थान हैं, उन सबके पुण्य को विष्णु नाम के कीर्तन करने से प्राप्त होते हैं, और जो सारंग धनुष को धारण करने वाले विष्णु भगवान की शरण में जाते हैं, वे मनुष्य कदापि यमलोक को नहीं जाते हैं । एक एकादशी का व्रत करने से और प्रसंग अर्थात् कीर्तन आदि करने से भी अत्यन्त दारुण पाप किये रहने पर भी यमकी यातना में नहीं जाते हैं अर्थात् वे यमराज के दण्ड से छूट जाते हैं।

जो मनुष्य वैष्णव होकर शिवजी की निन्दा करते हैं और जो वैष्णवों की निन्दा करते हैं वे अवश्य नरक में जाते हैं, सहस्रों अश्वमेध तथा सैकड़ों राजसूय यज्ञ करने से जो फल प्राप्त होता है वह फल एकादशी के व्रत के सोलहवें भाग के समान भी नहीं है। संसार में एकादशी के समान कोई पुण्य नहीं है, इसके समान पवित्र तीनों लोक में कुछ भी नहीं है। इस पद्मनाभ के दिवस अर्थात् एकादशी दिवस के समान कोई दिवस नहीं है।

हे राजन्! जब तक पद्मनाभ के दिवस मनुष्य व्रत नहीं करता तब तक उनके देह में पाप निवास करता है। हे राजन्! एकादशी के तुल्य तीनों लोक में कुछ नहीं है, किसी बहाने से भी एकादशी का व्रत करलेने से भी यमराज का दर्शन नहीं होता है अर्थात् एकादशी व्रत करने वाले के निकट जमराज नहीं जाते हैं। यह एकादशी स्वर्ग, मोक्ष, आरोग्यता, सुन्दर स्त्री, तथा अन्न धन को देनेवाली है।

हे राजन्! एकादशी के दिन से पुण्यवान, गंगा, गया काशी, पुष्कर और कुरुक्षेत्र भी नहीं है, हे भूपाल! हरि वासर अर्थात् एकादशी को व्रत करके रात्रिमें जागरण करने से अनायास विष्णु पद को प्राप्त होता है।

हे राजेन्द्र! इसका व्रत करने वाले मनुष्य दस पीढ़ी माता के पक्ष की, दस पिता के, और दस पीढ़ी पर्यन्त स्त्री के पक्ष के पित्रों का उद्धार कर देते हैं, वे लोग दिव्य शरीर धारण कर चतुर्भुजी स्वरूप के पीताम्बर पहिने और हाथ में माला लिये हुये गरुड़ पर चढ़ के विष्णुलोक को जाते हैं।

हे नृपोत्तम! बाल्यावस्था, युवावस्था, तथा वृद्धावस्था, में इसका व्रत करने से पापी मनुष्य भी दुर्गति को नहीं प्राप्त होते हैं अर्थात् पापी भी इसके व्रत से सद्गति को प्राप्त होते हैं। आश्विन मास के शुक्लपक्ष में पासांकुशा का व्रत जो करते हैं वह समस्त पापों से छूट कर हरि भगवान के लोक को जाते हैं। स्वर्ण, तिल भूमि, गौ, अन्न, जल, तथा छाता और जूता दान करने से मनुष्य यमराज को नहीं देखते हैं। बिना किसी सत्कार्य किये जिसके दिन व्यतीत होते हैं वह लोहार की भाथी के तरह स्वांस लेता हुआ भी नहीं जीने का समान है। हे नृपोत्तम! दरिद्र मनुष्यों को भी अपनी शक्ति के अनुसार दानादिक क्रिया को करते हुये दिवस व्यतीत करना चाहिये। सरोवर, वाटिका और भवन, दान करने तथा यज्ञ आदि पुण्य कर्म करने वाला धीर बुद्धि मनुष्य यमराज की यातना अर्थात् यम के दण्ड को नहीं देखते हैं। और पुण्य करने वाले मनुष्य संसार में दीर्घायु, धनाढ्य कुलीन और रोगरहित दिखाई देते हैं, यहां अधिक कहने से क्या प्रयोजन, सारांश यह है कि अधर्म से दुर्गति और धर्म से अवश्य स्वर्ग की प्राप्ती होती है।

हे राजन्! जो कुछ आपने मुझ से पूछा था सो सब पाशांकुशा का महात्म्य मैं आप से कह सुनाया। अब क्या सुनना चाहते हैं।

इति श्री ब्रह्मपुराणे आश्विन शुक्ल पाशांकुशैकादशी
माहात्म्य भाषा संपूर्ण ॥ २२ ॥

युधिष्ठिर जी बोले कि हे जनार्दन! कार्तिक मास के कृष्णपक्ष में किस नामकी एकादशी होती है इसको कृपाकर प्रीति पूर्वक हमसे कहिये।

श्रीकृष्ण जी बोले कि हे राज शार्दूल! तुम सुनो, मैं तुमसे कहता हूं। कार्तिकके कृष्णपक्ष में "रमा" नाम की एकादशी होता है। हे राजन् यह बड़े २ पापों को दूर करने वाली है, प्रसंग वश इसका माहात्म्य मैं तुमसे कहता हूं।

हे राजन्! पहले मुचुकुन्द नामक प्रसिद्ध राजा हुये जिसकी मित्रता इन्द्र के साथ थी। जिस प्रकार इन्द्र से उसकी मित्रता थी, उसी प्रकार यम, वरुण, कुबेर, तथा, विभिषण के साथ भी उसकी मित्रता थी।

हे राजन्! वह राजा सत्यवादी और सर्वदा विष्णु की भक्ति करनेवाला था, और धर्म से शासन करते हुये निष्कण्टक राज्य करता था और उस राजा के गृह में श्रेष्ठनदी चन्द्रभागा नाम की कन्या उत्पन्न हुई और वह कन्या चन्द्रसेन के पुत्र शोभन से विवाही गई।

हे राजन्! वह शोभन किसी समय अपने श्वशुर के गृह में आये और उसी समय पुण्यदायिनी एकादशी भी आई थी, जब व्रत का दिवस निकट आया तब चन्द्रभागा चिन्ता करने लगी कि हे ईश्वर! क्या होगा मेरे पति बहुत दुर्बल हैं वह क्षुधाको सहन नहीं कर सकते हैं और मेरे पिता का शासन बहुत कठोर है। दशमी के दिवस जिसकी ढोल बज गये हैं। कि एकादशी को भोजन करना नहीं चाहिये, नहीं चाहिये! नहीं चाहिये!!! ढोल को बजते ही इस प्रकार की घोषणा को सुनकर शोभन अपनी प्यारी पत्नी से कहा कि हे प्रिये! अब मेरा तकव्य क्या है अर्थात् अब हमको क्या करना चाहिये जिसके करने से मेरे प्राण का नाश न हो। हे सुन्दर मुखवाली! ऐसा उपाय हमें बताओ। चन्द्रभागा बोली कि हे प्रभो! आज मेरे पिता के गृह में हाथी, घोड़ा आदि पशु तथा कोई प्राणी भोजन नहीं करेंगे, हे स्वामिन्! मनुष्य को कौन कहे, पशु भी एकादशी के दिवस अन्न तृण, तथा जल को भी नहीं ग्रहण करगें तो भला मनुष्य कैसे भोजन करेंगे।

हे पति! यदि आपको भोजन करना हो तो घर से चले जाइये और यह अपने मन में विचार करके मन को दृढ़ कीजिये। तब शोभन बोला कि तुमने सत्य कही है मैं व्रत करूंगा। दैवने जो रचना की है वही होगी यह विचार अपने भाग्य के आशा पर इस उत्तम व्रत को करते हुये और क्षुधा तृषा से शरीर पीड़ित होने के कारण वह बहुत दुःखी हो गया और उसको यह चिन्ता करते हुये सूर्यनारायण अस्ताचल को चले गये। वह निशा वैष्णव मनुष्यों को हर्ष बढ़ाने वाली हुई। हे राजशार्दूल! जिस प्रकार हरि भगवान की पूजा करने और रात्रि जागरण करने वाले मनुष्यों को वह निशा आनन्द-दायक हुई उसी प्रकार शोभन को अत्यन्त दुस्सह हुई और सूर्योदय के समय शोभन के शरीर से प्राण प्रयाण कर गया, तब राजा मुचुकुन्द राजाओं के योग काष्ठ अर्थात् सुगन्धित काष्ठोंसे

उसका दाह कराया और चन्द्रभागा ने पिता की आज्ञा से अपने शरीर को भस्म नहीं किया और शोभन की प्रेत क्रिया करके अपने पिता के भवन में निवास करने लगी।

हे राजन्! रमा के व्रत के प्रभाव से शोभन मन्दराचल के शिखर पर सुन्दर देवपुर को प्राप्त हुआ, अत्यन्त उत्तम जो किसी से वीजित न हो सके, असंख्यगुण सम्पन्नरत्न और वैडूर्यमणि जड़ित सुवर्णके खम्भे लगे हुये विविध प्रकार के स्फटिकमणि से सुशोभित भवन में सिंहासन पर आरूढ़, मस्तकपर श्वेतछत्र और चमर, मस्तकपर क्रीट, कानों में कुण्डल, कण्ठ में हार, बाहुँ में केयूर, विभूषित और गंधर्व तथा अप्सराओं से सेवित शोभन ऐसे शौभाग्यमान होते थे मानों दूसरा इन्द्र ही विराजमान हो रहे हैं। मुचुकुन्द के नगरका निवासी सोम शर्मा नामक ब्राह्मण तीर्थयात्रा के निमित्त भ्रमण करते हुये वहां उसको देखा और शोभन को राजा का दमाद जान कर वह ब्राह्मण उसके निकट गया, तब शोभन उसको देखते ही शीघ्रता से अपने स्थान से उठकर उस श्रेष्ठ ब्राह्मण को नमस्कार करके उससे कुशल प्रश्न किया। फिर अपने श्वसुर अर्थात् राजा मुचुकुन्द और अपनी स्त्री चन्द्रभागा और उसके नगर की कुशल पूछा। तब सोम शर्मा बोला कि हे राजन्! तुम्हारे श्वसुर के गृह में कुशल है, चन्द्रभागा कुशल से हैं और नगर में सर्वत्र कुशल है।

हे राजन्! हमको बहुत आश्चर्य्य होता, है आप अपना वृत्तान्त कहिये। ऐसा मनोहर तथा सुन्दर नगर कभी और कभी किसीने नहीं देखा होगा। हे राजन्! बताइये कि आपको यह कैसे प्राप्ति हुआ? तब शोभन बोले कि कार्तिक के कृष्ण पक्ष में रमा नामकी जो एकादशी होती है उसका व्रत करने से मुझे यह स्थिर न रहने वाला नगर प्राप्त हुआ है। हे द्विजोत्तम! जिस तरह से यह स्थिर हो जाय उसका उपाय आप कीजिये। ब्रह्मदेव बोले कि हे राजन्! यह स्थिर क्यों नहीं है और किस प्रकार से स्थिर होगा सो सब कहिये, मैं उसको करूंगा, यह अन्यथा नहीं है अर्थात् मैं मिथ्या नहीं कहता हूं।

शोभन बोले हे विप्र! मैं इस उत्तम व्रत को श्रद्धा रहित होकर किया हूं इस कारण मैं इस नगर को नाशवान मानता हूं। अब जिस

प्रकार से स्थिर होगा उसका वृत्तान्त सुनिये। मुचुकुन्द राजा की शोभा-यमान चन्द्रभागा नाम की जो कन्या है उससे इस वृत्तान्त को कहियेगा तो यह स्थिर हो जायगा। यह सुनकर वह श्रेष्ठ ब्राह्मण चन्द्रभागा से सब वृत्तान्त वर्णन किया और ब्राह्मण का वचन सुन कर उसके नेत्र प्रफुल्लित हो गये और वह ब्राह्मण से बोला कि हे द्विज! तुम्हारा वृत्तान्त प्रत्यक्ष है अथवा स्वप्न का है सो कहिये। सोम शर्मा बोले कि हे पुत्री! महावन में तेरे पति को मैंने प्रत्यक्ष देखता है, जो किसी से अधिकृत अर्थात् विजय न हो सके ऐसा देवता के नगर के समान उनका नगर मैंने देखा, उन्होंने कहा कि यह नगर स्थिर नहीं है इस कारण जिस प्रकार स्थिर हो सो करो। चन्द्रभागा बोली कि हे विप्र ऋषि! मुझको वहां ले चलिये। पति के दर्शन की मेरी बहुत लालसा है मैं अपने किये हुये पुण्य से उस नगर को स्थिर कर दूँगी।

हे द्विज! जिस प्रकार हमारी उनका संयोग हो सो कीजिये, क्योंकि वियोगी का संयोग कर देने से महा पुण्य प्राप्त होता है। यह सुनकर चन्द्रभागा को साथ में लेके मन्दराचल पर्वत के समीप वामदेव के आश्रम को सोमशर्मा गये और वामदेव उसके कहे हुये वृतान्त को सुनकर वेद के मन्त्र से और उज्वल तिलक से चन्द्रभागा को अभिषिक्त कर दिये, तब ऋषिके मन्त्र के प्रभाव से और एकादशी के व्रत से चन्द्रभागा की शरीर दिव्य हो गई और वह दिव्य गति को प्राप्त हुई, पुनः हर्षित हो प्रफुल्लित नेत्र किये हुये पति के निकट गई, प्रसन्नतापूर्वक अपनी प्यारी स्त्री को आते देख कर शोभन भी अत्यन्त प्रसन्न हुये और उसको बलाकर के अपने बायें तरफ उसको बैठाये, तब चन्द्रभागा अत्यन्त प्रसन्न होकर अपने पति से बोली कि हे पति! हित की बात और जो पुण्य में विद्यमान है उसको सुनिये। अपने पिता के गृह में जब मैं आठ वर्ष की हुई तब से विधि पूर्वक एकादशी आदि व्रत को श्रद्धा सहित मैंने किया, उस पुण्य के प्रभाव से यह लोक अविचल हो गया और कल्पान्त अर्थात् महा प्रलय पर्यन्त समृद्धि होगी।

हे राजशार्दूल! इस प्रकार दिव्य स्वरूप और दिव्य आभूषणों से भूषित होकर वह पति के सहित रमण करती हुई दिव्य भोगों को भोग

करती हुई और रमा के व्रत के प्रभाव से मन्दराचल के शिखर पर दिव्य शरीर से शोभन भी चन्द्रभागा के साथ में विहार करने लगे। हे राजन्! रमा एकादशी का विधान मैं तुम्हारे आगे कहा यह चिन्तामणि अथवा कामधेनु के तुल्य है।

हे राजन्! इस व्रत को जो उत्तम मनुष्य करते हैं निःसन्देह उनके ब्रह्महत्यादि पाप नाश हो जाते हैं, एकादशी के व्रत में कृष्ण शुक्ल का भेद न करना चाहिये, क्योंकि कृष्णपक्ष और शुक्ल पक्ष की दोनों एकादशी समान है, उपासना की हुई एकादशी मनुष्यों को भुक्ति मुक्ति देनेवाली है। जिस प्रकार काला, सफेद गौओं का दूध एक समान होता है, उसी प्रकार दोनों पक्षों की एकादशी समान फल देनेवाली कही जाती है, और जो मनुष्य एकादशी व्रत का माहात्म्य सुनते हैं वह समस्त पापों से छूट कर विष्णुलोक में जाते हैं।

इति श्रीब्रह्मवैवर्त पुराणे कार्तिक कृष्ण "रमा"
एकादशी माहात्म्य भाषा सम्पूर्ण ॥२३॥

ब्रह्मा जी बोले कि हे मुनि श्रेष्ठ! पाप को नाश करने वाला पुण्य को बढ़ानेवाला, सुबुद्धियों को मुक्ति देनेवाला एकादशी माहात्म्य को सुनिये। हे विप्रेन्द्र! पृथ्वी पर गंगा की प्रभुता जब तक है जब तक पाप को भस्म करने वाली कार्तिक में हरिबोधनी नहीं आती है। और समुद्र, तीर्थ, तथा सरोवर का प्रभाव तभी तक रहता है जब तक कार्त्तिक की विष्णु प्रबोधनी तिथि नहीं आती है, एक सहस्र अश्वमेध और सौ राजसूय यज्ञ करने से जो फल प्राप्त होता है सो फल एक प्रबोधिनी एकादशी के व्रत से मनुष्य को मिलता है।

नारद मुनि बोले कि हे पितामह! एकवार भोजन रात्रि भोजन, और उपवास करने से कौन २ पुण्य होते हैं सो हमसे कहिये?

ब्रह्माजी बोले कि एकबार के भोजन से एक जन्म रात्रि भोजन से दो जन्म और उपवास करने से सात जन्म का पाप नाश हो जाता है। हे पुत्र! तीनों लोकों में दृष्टिगोचर न होने वाला अप्रार्थित और जो न मिलने के योग्य है उसको हरि बोधिनी देते हैं। मेरु और मन्दराचल पर्वत के समान अत्यन्त उग्रपाप को भी यह पाप हारिणी एकादशी व्रत करने से

भस्म कर देते हैं। सहस्रों पूर्व जन्म के किये हुये पापों को रात्रि जागरण करने से रूई के ढेर के समान प्रबोधिनी भस्म कर देती है।

हे मुनि शार्दूल! जो स्वभाव से ही विधिवत् प्रबोधिनी का व्रत करते हैं उनको जैसा कहा हुआ है सो फल मिलता है। हे मुनिवर! जैसे कहा गया है, इस प्रकार से जो मनुष्य थोड़ा सुकृत भी किये हैं, उनका मेरु के समान फल होता है।

हे नारद जी! विधि रहित मेरु के समान सुकृत किये हैं उनको धर्म का फल अणुमात्र भी नहीं होता है। सन्ध्या न करने वाले, नास्तिक, वेदनिन्दक, धर्मशास्त्र को दूषित करने वाले, दूसरे की स्त्री से भोग करने वाले, मूर्ख, पाप कर्म करने वाले तथा धोखा देनेवाले, इन सब के शरीर में धर्म नहीं रहते हैं ब्राह्मण अथवा शूद्र भी दूसरे की स्त्री से विशेष करके ब्राह्मणी से भोग करने वाले दोनों चाण्डाल के समान हैं।

हे मुनि शार्दूल! जो ब्राह्मण विधवा अथवा सधवा ब्राह्मणी से भोग करते हैं, वह अपने वंश सहित नाश हो जाते हैं। जो अधम ब्राह्मण दूसरे की स्त्री से रमण करते हैं उसको सन्तान नहीं होता है, और उसके पूर्व जन्म के सञ्चित पुण्य नाश हो जाते हैं। गुरु ब्राह्मणों से जो अहंकार से बर्ताव किया है, उसका सुकृत अर्थात् पुण्य शीघ्र नाश हो जाते हैं और उसे धन तथा सन्तान नहीं मिलते हैं। भ्रष्ट आचार करने वाले, चाण्डाली से गमन करने वाले और दुष्ट मनुष्य की कर्म जो कि संसार में ग्रहण करने योग्य नहीं है उनको न करे और सदाचारी, अर्थात् उत्तम कर्म करे, जिससे धर्मका नाश हो। जो अपने मनमें विचार करते हैं कि मैं प्रबोधिनी व्रत करूंगा, उनको सौ जन्म के किये हुये पाप नाश हो जाते हैं। जो प्रबोधिनी एकादशी को रात्रि जागरण करते हैं वह बीते हुये, वर्तमान और होने वाले दस हजार कुल को विष्णु के लोकमें पहुचा देते हैं, और उनके पितृ पूर्वजन्म में किये हुये पापसे नरक के दुःख से छूट कर प्रसन्नता और अलंकार से अलंकृत होकर विष्णु के लोक में निवास करते हैं।

हे मुनि! ब्रह्महत्या आदि घोर पाप करने वाला मनुष्य भी प्रबोधिनी का जागरण करने से सब पापों से छूट जाते हैं। जो सुन्दर फल अश्वमेध आदि यज्ञ करने से नहीं प्राप्त होता है वह फल प्रबोधिनी में जागरण

करने से सरलता पूर्वक प्राप्त होता है। जो फल समस्त तीर्थों में स्नान करने तथा गौ, सुवर्ण और भूमि दान करने से नहीं प्राप्त होता है, वह फल एकादशी के दिन जागरण करने से प्राप्त होता है।

हे मुनि शार्दूल! वही सुकृत करने वाला और कुटुम्ब का उद्धार करने वाला उत्पन्न हुआ। जिसने कार्त्तिक में प्रबोधिनी का व्रत किया। अर्थात् जो प्रबोधिनी एकादशी का व्रत करते हैं वही पुण्यात्मा हैं।

हे मुनिवर! जिस प्रकार मृत्यु अवश्य होता है, उसी प्रकार धन भी अवश्य नाश होता है, यह जानकर विष्णु वासर अर्थात् एकादशी का व्रत करना चाहिये। जो प्रबोधिनी एकादशी का व्रत करते हैं उसके गृह में तीनों लोक के जितने तीर्थ हैं वे सब निवास करते हैं। सम्पूर्ण कर्मों को परित्याग कर चक्रपाणि विष्णु भगवान को सन्तुष्ट करने के निमित्त कार्त्तिक में सुन्दर हरि प्रबोधिनी एकादशी का व्रत करना चाहिये। वही ज्ञानी, वही योगी, वही तपस्वी, और वही जितेन्द्रिय है तथा उसीको भोग और मोक्ष प्राप्त होता है जो हरि प्रबोधिनीकी उपासना करते हैं। यह विष्णुकी प्यारी एकादशी धर्म के तत्व को देनेवाली है इस एकादशी का एकवार व्रत करने से मनुष्य मुक्ति के भागी हो जाता है।

हे नारद! प्रबोधिनी का व्रत करने से मनुष्य को गर्भ में प्रवेश करना नहीं पड़ता, इस कारण सब धर्मों को छोड़ कर इसका व्रत करना चाहिये। कर्म, मन और वाणी से किये हुये पापों को प्रबोधिनी के जागरण से गोविन्द भगवान नाश कर देते हैं।

हे वत्स! प्रबोधिनी के दिवस विष्णु भगवानके नामसे मनुष्य स्नान, दान, जप, तथा होम आदि जो कुछ करते हैं वह अक्षय हो जाता है। जो मनुष्य उस एकादशी का व्रत और भक्ति पूर्वक माधव भगवान की पूजा करते हैं वे सौ जन्म के किये हुये पापों से छूट जाते हैं।

हे पुत्र! प्रबोधिनी एकादशी के दिवस विधि पूर्वक विष्णु की उपासना अर्थात् पूजा करनेसे यह महाव्रत बड़े २ पापोंको नाश कर देते हैं। इस व्रत के करने से देवताओं के ईश जनार्दन भगवान संतुष्ट होते हैं और व्रत करने वाला दशो दिशाओं को प्रकाश करते हुये विष्णु लोकको जाते हैं।

हे द्विपदों में श्रेष्ठ अर्थात् नारद! कान्ति और सुख चाहने वाले मनुष्य को कार्त्तिक में द्वादशी युक्त प्रबोधिनी एकादशी का व्रत प्रयत्न करके करना चाहिये।

हे वत्स! बाल्यावस्था, युवावस्था, और वृद्धावस्था के किये हुये अल्प अथवा बहुत सा तथा सौ जन्म के संचित पापों को हे मुनिवर! नारद! सूखा हुआ, आर्द्र, अथवा गीला जो छिपे हुये तथा प्रगट हुये तथा जिस पाप को गुप्त रखना हो, उन सबों को इस एकादशी के दिवस भक्ति पूर्वक गोविन्द भगवान की पूजा करने से साफ हो जाता है, अर्थात् सब पाप नाश हो जाता है। यह उत्तम एकादशी अन्न, धन तथा पुण्य को देनेवाली है। भक्ति पूर्वक इसका व्रत करने से कुछ दुर्लभ नहीं है। सूर्य चन्द्रमा के ग्रहण में पुण्य करने से जो फल प्राप्त होता है, सो फल प्रबोधिनी में जागरण करने से मिलता है। जो फल स्नान, दान, जप, होम और स्वाध्याय करने से प्राप्त है, उन सबसे करोड़ गुना फल प्रबोधिनी एकादशी को विष्णु भगवान की पूजा करने से होता है। मनुष्य के जीवन भर के किये हुये समस्त पुण्य कार्त्तिक की प्रबोधिनी का व्रत किये बिना व्यर्थ हो जाता है।

हे नारद! जो मनुष्य कार्त्तिक में विष्णु का नियम अर्थात् एकादशी की उपासना नहीं करते हैं उनको जीवन पर्यन्त के किये हुये पुण्य का फल नहीं प्राप्त होता है।

हे विप्रेन्द्र! इस कारण तुमको सर्वदा यत्न पूर्वक देवताओं के देव जनार्दन भगवान की उपासना करनी चाहिये।

हे पुत्र! जो विष्णु के भक्त कार्तिक मास में दूसरे के अन्न को ग्रहण नहीं करते हैं उसको उस अन्न का त्याग करने से चन्द्रायण व्रत करने का फल मिलता है। कार्त्तिक में मधुसूदन भगवान् शास्त्र की कथा वार्ता से जितना प्रसन्न होते हैं उतना सन्तुष्ट यज्ञ करने हाथी, घोड़ा दान करने से नहीं प्राप्त होता है। कार्तिक मास में विष्णु की कथा का एक अथवा आधी श्लोक जो मन लगाके कहते हैं और सुनते हैं, उनको एक सौ गौ दान करने का फल प्राप्त होता है।

हे मुनि! समस्त धर्म अर्थात् कार्यों को छोड़ कर सर्वदा कार्तिकमास में मेरे सन्मुख बैठकर शास्त्रों की कथा कहना और सुनना चाहिये।

हे मुनि शार्दूल! जो कल्याण होने की इच्छा से कार्तिक मास में हरि कथा को कहते हैं वे कुटुम्ब को क्षण मात्र में तार देते हैं। जो मनुष्य कार्तिक मास में शास्त्रों के आनन्द में काल व्यतीत करते हैं उनको दश हजार यज्ञ करने का फल मिलता है और उनके सब पाप भस्म हो जाते हैं। जो मनुष्य नियम करके विशेष कर कार्तिक मास में विष्णु की कथा सुनते हैं वह एक हजार गोदान देने का फल पाते हैं।

हे मुने! विष्णु के प्रबोध के दिन जो विष्णु भगवान की कथा करते हैं वह सातों द्वीप पृथ्वी को दान करने का फल प्राप्त करते हैं।

हे मुनि शार्दूल! जो मनुष्य विष्णु की दिव्य कथा को सुनकर कहने वाले को अर्थात् वक्ता को शक्ति के अनुसार दक्षिणा देते हैं। उनको सनातन लोक अर्थात् नाश न होनेवाला लोक मिलता है। ब्रह्मा की बात सुनकर नारद मुनि फिर पूछे कि हे स्वामिन्! हे देवताओं में श्रेष्ठ! एकादशी की विधि हमसे कहिये। हे भगवन्! जिस के करने से जैसा फल प्राप्त होते हैं सो कहिये।

नारद मुनि की बात सुनकर ब्रह्माजी बोले कि हे द्विजोत्तम! ब्राह्म मुहूर्त अर्थात् जब दो घड़ी रात्रि बाकी रहे तब उठ जाय और दतुअन करके स्नान करे नदी, सरोवर, कूप, वापी, अथवा गृह में अपनी इच्छानुसार स्नान करे फिर केशव भगवान की पूजा करके कथा सुने।

हे महाभाग! पश्चात् नियम करने के निमित्त इस मंत्र को पढ़े कि "मैं एकादशी के दिवस निराहार व्रत करके दूसरे दिवस अर्थात् द्वादशी को भोजन करूंगा। हे पुण्डरी काक्ष! हे अच्युत! मैं आपकी शरण हूं रक्षा कीजिये"। इस मंत्र को देवताओं के देव चक्रपाणि भगवान के सन्मुख पढ़े, पश्चात् भक्ति भावसे प्रसन्नता पूर्वक व्रत करे और रात्रि में विष्णु भगवान के निकट जागरण करे।

हे मुनि! जो गीत गाते हैं, नाचते हैं, बाजा बजाते हैं, और कृष्ण की कथा सुनते हैं, कहते हैं, वह पुण्यात्मा तीनों लोक के ऊपर अर्थात् ब्रह्मलोक में निवास करते हैं। कार्तिक के प्रबोधिनी एकादशी को बहुत

सा पुष्प, फल कर्पूर, अगर और कुसुम आदि से विष्णु भगवान की पजा करनी चाहिये । हे मुनिवर ! एकादशी के दिवस धन का लोभ न करना चाहिये अर्थात् एकादशी को लोभ त्याग कर देना और दान देने से असंख्य पुण्य की प्राप्ति होती है । प्रबोधिनी एकादशी के जागरण में नाना प्रकार उत्तमोतम फल से विष्णु की पूजा और शंख से जल रख कर अर्घ्य देना चाहिये । सब तीर्थों में स्नान और सब प्रकार का दान देने से जो फल होता है, उससे करोड़ गुना फल प्रबोधिनी एकादशी को हरि भगवान को अर्घ्य देने से मिलता है ।

हे मुनिवर ! उत्तम अगस्त्य के फूल से जो जनार्दन भगवान की पूजा करते है उनको इन्द्र भी नमस्कार करते हैं ।

हे विप्रेन्द्र ! तपस्या करके सन्तुष्ट करने से हरिभगवान् जो नहीं करते हैं सो अगस्त्य के फूल से अलंकृत अर्थात् श्रृंगार करने से करते हैं । जो महा भक्त कार्तिक में बेल के पत्र से कृष्ण जी का पूजा करते हैं उनको मेरी कही हुई मुक्ति प्राप्त होती है ।

हे पुत्र ! कार्तिक मास में जो तुलसी पत्र और फूल से जनार्दन भगवान का पूजन करते हैं वे दश हजार जन्म के समस्त पापों को भस्म कर देते हैं । तुलसी दर्शन करने, स्पर्श करने, ध्यान करने गुणानुवाद अर्थात् कथा कहने, नमस्कार करने, स्तुति करने, रोपन अर्थात् वृक्ष लगाने, जलसे सीचने और प्रतिदिन पूजन करने आदि सब प्रकार से तुलसी मंगल देने वाली है । तुलसी की इन नव प्रकार की सेवा जो प्रतिदिन करते हैं वे हजार करोड़ युग पर्यन्त विष्णु लोक में निवास करते हैं ।

हे मुनि ! रोपी हुई तुलसी जितने जड़ का विस्तार करते हैं । उतनेही हजार युग पर्यन्त तुलसी रोपन करने वाले के सुकृत का विस्तार होता है।

हे मुनि ! जिस मनुष्य की रोपन की हुई तुलसी की जितनी शाखा प्रशाखा बीज और फूल पृथवी में बढ़ते हैं उसके उतने ही कुल जो व्यतीत हो गये हैं, तथा होयँगे वे दो सहस्र कल्प पर्यन्त विष्णुलोक में निवास करते हैं । कदम्ब के फूल से जो जनार्दन भगवान की पूजा करते हैं वे चक्रपाणी भगवान के प्रसाद से यमलोक को नहीं जाते हैं कदम्ब के फूल को देखकर केशव भगवान प्रसन्न होते हैं ।

हे विप्र ! जब सब कामनाओं को देने वाले विष्णु भगवान प्रसन्न हो जाते हैं तब फिर क्या नहीं मिलता, और बसंत ऋतु में "पकड़ी" के फूल से हरि भगवान की पूजा जो भक्ति भाव से करता है वह मुक्ति का भागी होता है। वकुल और अशोक के फूलसे जो वसन्त ऋतु में विष्णु भगवान की पूजा करते हैं वह तब तक विशोक रहता है जब तक सूर्य चन्द्रमा स्थित रहते हैं अर्थात् कल्प के अन्त तक उसको कोई दुःख नहीं होता है।

हे विप्र ! जो कनैल के लाल अथवा सफेद फूल से जगत्पति विष्णु भगवान् की पूजा करते हैं उसके ऊपर चारों युगों में केशव भगवान् कृपा रखते हैं। जो मनुष्य केशव भगवान के ऊपर आम की मंजरी चढ़ावे, वह भाग्यवान् करोड़ गौ दान के फल को प्राप्त करता है। जो मनुष्य दूब के अंकुरसे विष्णु भगवान की पूजा करते हैं वह सौ गुना पूजा के फल को प्राप्त करते हैं।

हे नारद ! शमी के पत्र से सुख देनेवाली भगवान की पूजा करने वाले मनुष्य का महाघोर यमराज के मार्ग से निस्तार हो जाता है। वर्षा ऋतु में जो मनुष्य चम्पा के फूल से देवताओं के देव विष्णु भगवान् की पूजा करते हैं वे मनुष्य संसार में फिर जन्म नहीं लेते हैं।

हे मुनि ! जो "पकड़ी" का फूल जनार्दन भगवानपर चढ़ाते हैं उनको एक पल सुवर्ण चढ़ाने का पुण्य होता है। जो पीतवर्ण का केतकी का फल जनार्दन भगवान पर चढ़ाते हैं उनके करोड़ों जन्म के सञ्चित पापों को गरुड़ध्वज भगवान भस्म कर देते हैं। जो "कुसुम" के समान अरुण वर्ण की शत पत्रिका और गन्ध जगन्नाथ को चढ़ाते हैं वे श्वेत द्वीप में निवास करते हैं।

हे ब्रह्मन् ! इस प्रकार से रात्रि में भुक्ति और मुक्ति देने वाले केशव भगवान की पूजा करे और प्रातः काल होने पर उठकर नदी पर जाये और वहां स्नान, जप, तथा प्रातः काल के कर्म करके गृह को पधारे और विधि पूर्वक केशव भगवान की पूजा करे बुद्धिमानको व्रत की समाप्तिके निमित्त ब्राह्मणों को भोजन और मन से भक्ती करके शिर से क्षमापन कराना

चाहिये, पश्चात् भोजन वस्त्रादि से गुरु की पूजा करके चक्रपाणी भगवान को सन्तुष्ट होने के निमित्त उनको दक्षिणा देवे और यत्नपूर्वक ब्राह्मणों को भूमिदान करे और जिन वस्तुओं को व्रतके आरम्भ में छोड़ने का नियम किये हो उन नियमों को ब्राह्मण के सन्मुख करे और अपनी शक्ति के अनुसार ब्राह्मणों को दक्षिणा देवे ।

हे राजन् ! रात्रि में भोजन करने वाले मनुष्य को उत्तम ब्राह्मणों को भोजन कराना चाहिये । अयाचित् व्रत में सुवर्ण के सहित बलवान "वरधा" दान करना चाहिये और जो मनुष्य निरामिष रहे हैं अर्थात् चातुर्मास में मांस भोजन नहीं किये हैं उनको दक्षिणा सहित गं.दान करना चाहिये ।

हे राजन् ! आमले से स्नान करने वाले मनुष्य को दधि और शहद का दान करना चाहिये, और जो मनुष्य फलों को त्याग किये हों उसको फल दान करना चाहिये, और हे राजन् ! तैल त्याग करने से घृत, त्याग करने से दूध, और अन्न त्याग करने से साठी का चावल दान दिया जाता है । हे राजन् ! पृथ्वी में शयन करने वाले को शय्या और सामग्री सहित तुलसी दान देना चाहिये, और पत्ता पर भोजन करनेवाले मनुष्य को सुवर्ण का पत्ता अथवा भोजन संयुक्त पत्रको दान देना चाहिये । मौन होकर व्रत करने वाले मनुष्य को दम्पति अर्थात् ब्राह्मण ब्राह्मणी को घृत संयुक्त भोजन कराना चाहिये । बाल रखने वाले मनुष्य को दर्पण जूता त्याग करनेवाले को एक जोड़ा जूता दान करना चाहिये । लवण को त्याग करने वाले मनुष्य को शर्करा दान करना चाहिये और विष्णु के मंदिर में अथवा देवालय में प्रति दिन दीपक जलाना चाहिये और व्रत की समाप्ति के निमित्त ताम्र अथवा सुवर्ण के पत्र में घृत और बत्ती रखके विष्णुभक्त ब्राह्मण को दान देना चाहिये, और एकान्तर व्रत में आठ कलश को वस्त्र सुवर्ण से अलंकृत करके दान करे ।

हे राजन् ! यदि यह सब न हो सके तो इनके अभाव में ब्राह्मण का वचन सब व्रतों के सिद्धि को देनेवाला कहा गया है । इस प्रकार से ब्राह्मण को प्रणाम करके उनको विदा कर और पश्चात् आप भी भोजन करे,

जिन वस्तुओं को चातुर्मास में त्याग करे उन्हीं वस्तुओं की समाप्ति करना चाहिये।

हे राजन्! जो बुद्धिमान् इस प्रकार से आचार करते हैं वह अनन्त फल को पाते हैं और अन्त समय में विष्णु लोक को जाते हैं। हे राजन्! इस प्रकार से चातुर्मास्य व्रत को जो निर्विघ्नता से समाप्त करते हैं वह कृत कृत्य हो जाते हैं और फिर उनका जन्म नहीं होता है अर्थात् वे मुक्त हो जाते हैं।

हे राजन्! इस प्रकार से करने से व्रत समाप्त हो जाते हैं, और यदि व्रत भ्रष्ट हो जाय तो व्रत करने वाला अन्धा कोढ़ी हो जाता है, तुमने हमसे जो पूछा था सो सब मैंने तुमसे कहा, इस कथा के पढ़ने और सुनने से भी गोदान करने का फल प्राप्त होता है।

इति श्री स्कन्दपुराणे शुक्ल प्रबोधिनी एकादशी
महात्म्य भाषा समाप्त ॥ २४ ॥

युधिष्ठिर जी बोले हे जनार्दन। मलमास के शुक्ल पक्ष में कौन सी एकादशी होती है, उसका क्या नाम है, और उसकी विधि क्या है सो हमसे कहिये। श्रीकृष्ण जी बोले कि हमारे मास में जो पुण्य तिथि होता है उसका नाम पद्मिनी है, यत्न पूर्वक उसकी उपासना करने से वह पद्मनाभ भगवान के लोक में जाता है। हमारे मासकी महा पुण्यवती और पापों को नाश करने वाली तिथि की कीर्ति और उसका फल वर्णन करने में चारमुख वाले ब्रह्माजी भी असमर्थ हैं। पहिले ब्रह्माने नारद जी से पापों के समूह को नाश करने वाले और भुक्ति मुक्ति देनेवाले इस "पद्मिनी" के उत्तम व्रतको कहा है। श्रीकृष्ण भगवानकी वाणी सुनकर धर्मज्ञ राजा युधिष्ठिर अत्यन्त आनन्दित होकर कृष्ण जी से इस एकादशी की विधि पूछे। तब राजा का वचन सुन कर प्रीति से प्रफुल्लित नेत्र हो श्री कृष्ण जी बोले कि—हे राजेन्द्र! सुनिये, जो मुनियों को दुर्लभ है सो मैं आपसे कहता हूं। दशमी के दिवस से व्रत आरम्भ किया जाता है, कांस पात्र में भोजन मूंग

मसूरी, चना, कोदो, शाक मधु, तथा दूसरे का अन्न दशमी के दिवस ये आठ वस्तु वर्जित हैं और हविष्य अर्थात् जौ, चावल आदि और खारी तथा लवण का भोजन करे। दशमी के दिवस पृथ्वी पर शयन करे और ब्रह्म चर्य्या से रहे। और एकादशी के दिवस प्रातः काल उठकर और विधि पूर्वक मल त्याग करे और दन्तधावन न करे और बारह कुल्ला करके शुद्ध हो जाय और प्रातःकाल में बुद्धिमान् को उत्तम तीर्थ में स्नान करने के निमित्त जाना चाहिये। गोबर, मट्टी, तिल और कुशा लेकर पवित्र हो और आमले का चूर्ण शरीर में लगाकर विधि पूर्वक स्नान करके इस मन्त्र को पढ़े कि कृष्ण रूप एक सौ बाहु वाले वराह ने तुम को उठाया है, हे मृत्तिके! तू ब्राह्मण को दी गई है और कश्यप मुनि से अभि मन्त्रित हुई है। नेत्रों, बालों और शरीर में लगी हुई तू मुझको पवित्र कर। हे मृतिके तेरे को मैं नमस्कार करता हूं, जिसमें हरि भक्ति करने को योग्य हों। समस्त औषधियों से उत्पन्न और गौके उदर में स्थित और पृथ्वी को पवित्र करने वाला गोबर मुझको पवित्र करे ब्रह्मा के थूक से उत्पन्न भुवन को पवित्र करने वाली धात्री को नमस्कार है, स्पर्श करने से तुम मेरे शरीर को पवित्र करो।

हे शंख, चक्र और गदाधारी। हे जगत्पति! हे देवताओं के देव! विष्णु! मुझको अपने तीर्थ में स्नान करने की आज्ञा दीजिये। यह कह कर और वरुण के मन्त्र का जप करके तथा गंगा आदि तीर्थों का स्मरण करके जहां कहीं जलाशय हो उसमें विधि पूर्वक स्नान करे।

हे नृप श्रेष्ठ! इसके पश्चात् विधि पूर्वक मुख, पीठ हृदय, और शरीर के मार्जन करे, फिर सुखदायक पवित्र और अखण्डित अर्थात् फटा न हो ऐसा श्वेत वस्त्र धारण करके विष्णु भगवान की पूजा करे तो बड़े२ पाप नाश हो जाते हैं। फिर विधि पूर्वक सन्ध्या बन्दन करके देवता और पितरों का तर्पण करे, और विष्णु भगवान के मन्दिर में आकर उनकी पूजा करे, स्वर्ण के बनाये हुये राधिका के सहित कृष्ण और पार्वती सहित महादेव जी की विधि पूर्वक पूजा करे कुम्भ अर्थात् घड़े के ऊपर तामा अथवा मृत्ति का के पात्र में उत्तम वस्त्र रख कर और सुगन्धित करके उसमें देवता को

बैठाये, उसके ऊपर स्वर्ण अथवा चांदी का पात्र रक्खे और उसमें विष्णु भगवान् को स्थापित करके विधि पूर्वक उनकी पूजा करे और उत्तम सुगन्ध धूप, दीप, चन्दन, अगर, और कपूर और जल से स्थापित किये हुये भगवान की पूजा करे। नाना प्रकार के पुष्प, कस्तूरी श्वेत कमल और ऋतु में उत्पन्न हुये पुष्प से परमेश्वर की पूजा करे। शक्ति के अनुसार विविध प्रकार का नैवेद्य तथा निराञ्जन अर्थात् धूप, दीप, तथा कपूर से केशव भगवान और शिवजी की पूजा करे और उन भगवान के सन्मुख नाचे और गावे, और पतितों से वार्तालाप न करे और न उनको स्पर्श करे और न उनको मारे, मिथ्या वात न बोले, विचार करके सत्य बोले, रजस्वाला स्त्री को स्पर्श न करे और गुरु ब्राह्मण की निन्दा न करे और वैष्णवों के सहित विष्णु भगवान के सन्मुख बैठ कर पुराण सुने, मलमास के शुक्ल पक्ष की एकादशी व्रत निर्जल करे अर्थात् इसके व्रत में जल न ग्रहण करे इस व्रत में केवल जलपान अथवा दुग्धपान करना चाहिये। अथवा व्रत नष्ट हो जाता है और रात्रि में गायन वादन करते हुये जागरण करना उचित है। प्रथम प्रहर की पूजा में नारियल का अर्घ्य देना उत्तम है, दूसरे पहर में बेल, और तीसरे प्रहर में बीज पूरक अर्थात् बिजौरा और चतुर्थ प्रहर में सुपारी विशेष करके नारंगी से पूजन करना चाहिये, प्रथम प्रहर में पूजा करने से अग्निष्टोम यज्ञ का फल होता है, दूसरे प्रहर में वाजपेय का, तीसरे में अश्वमेध और चतुर्थ प्रहर में जागरण करने से राजसूय यज्ञ का फल प्राप्त होता है। इस व्रत से बढ़कर न तो कोई पुण्य है, न कोई यज्ञ है, न कोई क्रिया है, न कोई तप है। जिसने हरि का व्रत अर्थात् एकादशी का व्रत किया उसने पृथ्वी पर के समस्त तीर्थ और जितने क्षेत्र हैं उन सबों में स्नान और उनका दर्शन कर लिया, इस प्रकारसे सूर्योदय पर्यन्त जागरण करे और सूर्य के उदय होने पर उत्तम तीर्थमें जाकर स्नान करे फिर स्नान कर आने पर भक्ति पूर्वक परमेश्वर की पूजा करे, और पहिले कही विधि से श्रेष्ठ ब्राह्मणों को भोजन करावे, घट आदि जो वस्तु है उनको और केशव भगवान की पूजा करके विधिवत् ब्राह्मणों को दान कर देवे। पृथ्वी में जो मनुष्य इस प्रकार से व्रत करते हैं उनको

मुक्ति भुक्ति देनेवाला व्रत सफल हो जाता है, अर्थात् इसके प्रभाव से मुक्ति भुक्ति हो जाता है।

हे अनघ! तुमने मुझसे जो मलमास के शुक्ल पक्ष की उत्तम एकादशी की विधि पूछी सो मैंने वर्णन किया। हे नृपनन्दन! प्रेम पूर्वक जो इस "पद्मिनी" एकादशी के उत्तम व्रत को करते हैं वे सब व्रतों का कर चुके और मलमास की कृष्णपक्ष के एकादशी की भी यही विधि है, और सब पापों को संहार करनेवाली कृष्ण पक्ष की एकादशी का नाम "परमा" है,इस एकादशी की एक मनोहर कथा तुमसे मैं कहूंगा। जिसको पुलस्त्य मुनि ने नारद जी से विस्तार पूर्वक वर्णन की।

कार्तवीर्य द्वारा रावण को कारागार में देखकर पुलस्त्य मुनि ने उस राजा से याचना करके रावण को छुड़ा दिया, तब वह आश्चर्य सुन कर श्रेष्ठ मुनि नारद जी भक्ति पूर्वक पुलस्त्य मुनि से पूछे कि इन्द्र के सहित सब देवता रावण से विजित हो गये। उस रावण को कार्तवीर्य ने किस प्रकार जीत लिया सो सब कथा कहिये।

नारद जी का बचन सुनकर पुलस्त्य मुनि बोले कि हे वत्स! सुनो! कार्तवीर्य की उत्पत्ति मैं तुमसे कहता हूं।

पहिले त्रेतायुग में हैहय नामक राजा के वंश में कीर्तवीर्य उत्पन्न होकर माहिष्मती पुरी का राजा हुआ और उस राजा की सहस्र प्राण प्यारी स्त्रियां थी परन्तु उनमें से किसी को राज्य का भार संभारने वाला पुत्र राजा को नहीं हुआ, देवता, पितृसिद्ध तथा बड़े २ चिकित्सकों का पूजन करता और उनकी आज्ञानुसार व्रतों को करने पर भी वह राजा उस समय में पुत्र को न प्राप्त हुये, तब पुत्र के बिना उस राजा को उसके राज्य का कुछ सुख न प्राप्त हुआ। जिस प्रकार क्षुधित मनुष्यको भोग-विलास सुखदायक नहीं लगता उसी प्रकार राज्य सुख भी उसको सुखदायक नहीं हुआ तब वह राजा अपने मनमें तपस्या करने का विचार करके अपने मनको तप करने में लगाया कि तपस्या से सदान्त मन वांछित सिद्धि होता है। इस प्रकार कह कर पत्नी के सहित चीर वस्त्र अर्थात् वल्कल बसन पहिन और

बेटा बनाकर तथा अच्छे मन्त्री को गृह का भार देकर तपस्या करने के निमित्त यात्रा किया। तब इक्ष्वाकुराजा के वंश में उत्पन्न स्त्रियों में श्रेष्ठ हरिश्चन्द्र राजा की "पद्मिनी" नामक पुत्री राजा को निकले हुये देखकर वह राजा की प्यारी पतिव्रता स्त्री अपने पति को तपस्या के उद्योग में जानकर अपने अङ्ग के आभूषणों को उतार कर एक वस्त्र को धारण की और अपने पति के साथ गन्धमादन नामक पर्वत पर चली गई और वह राजा को उस पर्वत पर जाकर दस सहस्र वर्ष पर्यन्त तपस्या किया, परन्तु गदाधर भगवान की आराधना करते रहने पर भी उस राजा को पुत्र न प्राप्त हुआ तब श्रेष्ठ स्त्री अपने पति के शरीर में केवल अस्थि और नसों को देखकर महासाध्वी अनसूयासे विनय पूर्वक पूछी कि साध्वी! मेरे पति को तपस्या करते हुये दस हजार वर्ष व्यतीत हो गया, किन्तु कष्ट को नास करने वाले केशव भगवान प्रसन्न नहीं हुये इस कारण हे महाभागे! हमसे यथार्थ व्रत कहो। जिस व्रत को भक्ति पूर्वक करने से पुत्रके देनेवाले भगवान मेरे ऊपर प्रसन्न हों तथा जिससे चक्रवर्ती और बड़ा पुत्र उत्पन्न हों जो पतिव्रत परायण रानी अपने पति को तपस्या करने की दीक्षा लेकर बन में जाते हुये देख कर उनके साथ आप भी बन को चली।

उसकी बात सुनकर कमलनयनी पद्मिनी से अनसूया प्रसन्नता से बोली कि हे सुन्दर भौंहें वाली! बारह मास से अधिक मलमास होता है हे सुन्दर मुखवाली! वह मास बत्तीस महीने पर आता है और उसमें द्वादशी युक्त परमा तथा पद्मिनी नाम्नी दो एकादशी होती हैं। उसकी उपासना विधि पूर्वक और जागरण सहित करना उचित है, इस व्रत के करने से पुत्र के देने वाले भगवान् शीघ्रही प्रसन्न होंगे।

हे नृप! प्रथम इस प्रकार कह कर फिर कर्दम मुनि की स्त्री प्रसन्न होकर मेरी कही हुई विधि को विधि पूर्वक उससे कही, फिर जिस प्रकार से अनसूयाने सब विधि वर्णन किया, उनको सुनकर वह सुन्दर गात्रवाली पद्मिनी रानी पुत्र के प्राप्ति की अभिलाषा से उन सबको की, वह सर्वदा एकादशी को निराहार रहा करती और रात्रि में गीत, नृत्य करती थी जागरण करती थी, इस प्रकार व्रत के पूर्ण होते ही केशव भगवान शीघ्र

प्रसन्न हों और गरुड़ पर आरूढ़ होकर उसके समीप आये और उससे बोले कि हे सुन्दर मुखवाली ! वर मांग ! जब जगद्धाता भगवान की बात सुनकर वह सुन्दर मन्दहास युक्त और प्रीति पूर्वक भगवान की स्तुति करके उनसे अपने पति के निमित्त बहुत बड़ा वरदान मांगी। तब पद्मिनी का प्रीति सहित वचन सुनकर श्रीकृष्ण जी बोले कि हे भद्रे ! मैं तुमसे प्रसन्न हूं यह कह कर जनार्दन भगवान बोले कि मलमास के समान दूसरा कोई मास मुझको प्रिय नहीं है और उसमें प्रीति को बढ़ाने वाली सुन्दर एकादशी जो है। हे सुन्दर भौंहवाली ! तुमने उसका व्रत मुनि पत्नी से कही हुई यथावत् विधि से किया है।

हे सुन्दर मुखवाली ! इस कारण मैं तेरे ऊपर प्रसन्न हूं मैं तुम्हारे पति को जो वह चाहेगा सो वर दूंगा। ऐसा कह कर संसार के दुःख को नाश करने वाले विष्णु भगवान् राजा से बोले कि हे राजेन्द्र ! तुम्हारे मनमें जो अभिलाषा हो सो वर मांगो तुम्हारे मनोरथ की सिद्धि होने के लिये मैं तुम्हारी प्रिया द्वारा संतुष्ट किया गया हूं। तब विष्णु का वचन सुनकर वह श्रेष्ठ राजा प्रसन्न हो सब लोकों से नमस्कृत महाबाहु पुत्र को मांगा और कहा कि—

हे जगत्पति ! हे मधुसूदन ! वह पुत्र ऐसा होवे कि तुमको छोड़कर देवता मनुष्य, नाग, दैत्य, तथा राक्षस आदि किसी से न मरे। राजा की यह बात सुन कर और अच्छा कह कर भगवान उसी जगह अन्तर्ध्यान हो गये।

इधर राजा भी प्रिया सहित प्रसन्न चित्त और हृष्टपुष्ट होकर सुन्दर स्त्री पुरुषोंसे रमणीक अपने नगर में आये और उस पद्मिनी रानी से महाबली कार्यवीर्य नामक पुत्र को प्राप्त हुये। उसके समान तीनों लोक में कोई मनुष्य नहीं हुआ इस कारण से दशकन्धर रावण युद्ध में उससे पराजित होगया। तीनों लोकों में चक्रपाणी गदाधर भगवान के बिना उसके जीतने में कोई समर्थ नहीं था। मलमास के प्रसाद और पद्मिनी एकादशी का व्रत करने से रावण को पराजित होने में तुमको आश्चर्य न करना चाहिये।

महाबली कार्तवीर्य देवताओं के देव भगवान का दिया हुआ है, यह कह प्रसन्न हो पुलस्त्य मुनि चले गये।

श्री कृष्ण जी बोले कि हे अनघ! तुमने जो पूछा सो सब मलमास के शुक्ल पक्ष की एकादशी की उत्पत्ति का वर्णन किया।

हे राजेन्द्र! इसका व्रत जो मनुष्य करेंगे वेहरि भगवान के पद को पावेंगे, यदि तुम भी मानो वाञ्छित वस्तु चाहते हो तो इस व्रत को करो, केशव भगवान का वचन सुनकर धर्मराज अत्यन्त प्रसन्न होकर सब भाइयों और परिवार सहित विधि पूर्वक व्रत को किये।

सूत जी बोले, हे द्विज! तुम जो पहले पूछे थे कि इसका क्या पुण्य है और कैसी पवित्र है सो सब हमने वर्णन किया, अब क्या सुनना चाहते हो, जिस मनुष्य ने इस विधि से भक्ति पूर्वक मलमास के शुक्ल पक्ष की सुखदायिनी एकादशी का व्रत किया है वे धन्य है और इसकी सम्पूर्ण विधि को सुनने वाले मनुष्य भी अधिक यश भागी हैं, तथा जो सम्पूर्ण कथा को पढ़ेंगे वे विष्णु लोक को जायगें।

इति श्री अधिक मासस्य शुक्लैकादशी
माहात्म्य भाषा समाप्तः ॥ २५ ॥

युधिष्ठिर जी बोले कि हे प्रभो! इस मलमास के कृष्णपक्ष की एकादशी को क्या कहते हैं? हे जगत के स्वामी! उसका नाम और विधि क्या है, यह सब आप वर्णन कीजिये। श्री कृष्ण जी बोले कि–

हे युधिष्ठिर! मनुष्यों को मुक्ति मोक्ष और भोग आनन्द देनेवाली, पवित्र और पापको नाश करने वाली इस एकादशी का नाम "परमा" है पहिले शुक्ल पक्ष की एकादशी की विधि जो मैंने वर्णन की है, इसकी विधि भी उसी के समान है। वेही कार्य और भक्ति पूर्वक नरोत्तम भगवान का पूजन इस एकादशी में करना उचित है। यहां मैं एक मनोहर कथा जो काम्पिल्य नामक नगर में हुई और जिस को मैंने मुनि से सुनी उसको मैं कहता हूं।

इस नगर में सुमेध नामक कोई धार्मिक ब्राह्मण रहे, और उसकी पत्नी बड़ी पतिव्रता रही, परन्तु किसी कर्म के वश होकर वह ब्राह्मण धनधान्य रहित हो गया। यहां तक कि बहुत से मनुष्यों से भिक्षा मांगने पर भी उसको कभी भिक्षा नहीं मिलता था, भोजन वस्त्र और स्थान तक भी वह कहीं नहीं पाता था और स्वरूप यौवन सम्पन्न उसकी स्त्री अपने पति की सेवा किया करती थीं । भोजन न खाकर भी उपवास दोनों प्राणी किया करते थे, वह विशाल नेत्र वाली जब कभी अतिथि सत्कार करती तो आप क्षुधित रह जाया करती, किन्तु गृह में क्षुधित रहने पर भी उसके मुख पंकज पर मलिनता न होती, इस प्रकार उस सुन्दर दांतवाली अपनी पत्नी को अपना शरीर कसते हुये और गृह में अन्न न रहने पर भी पति से कुछ न कहते देख तथा पत्नी के प्रेम बन्धन को देखकर अपने भाग्य की निन्दा करते हुये वह ब्राह्मण प्रियम्वदा से बोलते हुये मन में उच्चारण कर कहे कि हे कान्ते ! मैं श्रेष्ठ मनुष्यों से मांगता हूं परन्तु मुझको धन नहीं मिलता है, मैं क्या करूं ।

हे सुमुखि ! मैं क्या करूं और कहां जाऊं, तू मेरे से कह ! हे सुश्रोणि ! धन बिना गृह का सिद्ध नहीं होता है मुझको विदेश जाने की आज्ञा दे, मैं धन की प्राप्ति के निमित्त जाये, उस देश में जाने पर भी जो भाग्य में होनेवाला है वही मिलेगा। बिना उद्यम के कामों को सिद्धि नहीं मिलता है, इसलिये ! बुद्धिमान् सर्वथा शुभ उद्यम की प्रसंशा करते है ।

पति का यह वचन सुनकर वह सुनयनी नेत्रों में आंसू भर, दोनों हाथ जोड़कर और गर्दन नीची करके नम्रता पूर्वक बोली कि आपका आज्ञा पाकर मैं कहूंगा कि आपसे सुविज्ञ अर्थात् अधिक विद्वान् नहीं हूं,- भलाई की इच्छा करने वाले मनुष्य आपत्ति ग्रस्त रहने पर भी सर्वदा कहते हैं, कि पृथ्वी मण्डल पर जहां कहीं मिलते हैं वह पूर्व जन्म का दिया हुआ मिलता है । बिना दिये हुये स्वर्ण का पर्वत जो मेरु हैं उसपर भी नहीं प्राप्त होता है । पूर्व जन्ममें जो विद्या, धन और पृथ्वी दी जाती है वही इस जन्म में पृथ्वीपर मिलता है ।

ब्रह्माने ललाटमें जो लिख दिया है सो उसीजगह मिलता है, क्या कभी बिना दिये हुये भी कुछ प्राप्त होता है अर्थात् बिना दिये नहीं मिलता है ।

हे विप्रेन्द्र! पूर्व जन्म में हम तुमसे न्यूनाधिक पृथ्वी और धन कुछ भी सत्पात्र के हाथ नहीं दिया है, इसदेश और परदेश में भी अर्थात् लोक, परलोक और सर्वत्र दिया हुआ मिलता है, और सबसे प्रधान अन्न तो दिये बिना मिलबाही नहीं है, हे विप्र! इस कारण मुझे और आपको इसी स्थान में रहना उचित है।

हे महामुने! आपके बिना क्षण मात्र भी मैं नहीं रह सकती, माता, पिता, भाई, सास ससुर और कुटुम्बी आदि स्वजन स्त्री का सत्कार नहीं करते तो दूसरे कैसे करेंगे। पतिहीन और भाग्यहीन कह कर निन्दा किया करते हैं, अतएव इसी स्थान में रह कर जितना सुख मिले उसी में सुख से विहार कीजिये आपके भाग्य से इसी देशमें सुख प्राप्त होगी।

अपनी स्त्री का ऐसा वचन सुनकर वह विचक्षण उसी नगर में रह गये और तबतक मुनियों में श्रेष्ठ कौंडिन्य मुनि वहां आ गये, उनको आये देखकर श्रेष्ठ ब्राह्मण सुमेध प्रसन्न हो गये, और अपनी स्त्री के सहित शीघ्रता से उठकर बारम्बार शिर से उनको नमस्कार करके बोले कि मैं धन्य हूं जो आपने हमको अनुग्रहीत किया अब मेरा जीवन सफल हुआ जो कि मेरे बड़े भाग्य से आपको दर्शन हुआ, मुनि से इस प्रकार कह और सुन्दर आसन देकर उस मुनि की पूजा किये, और विधि पूर्वक मुनि को भोजन कराकर वह श्रेष्ठ स्त्री उनसे पूछी कि हे विद्वन्! किस प्रकार से दरिद्रता का नाश होता है, बिना दान किये हुये धन, विद्या, और स्त्री कैसे प्राप्त होते हैं, मेरे पति मुझको त्याग कर कार्य के उद्योग से जा रहे हैं।

हे विद्वन्! विदेश के निवासियों और पराये मनुष्य से याचना करेंगे और मैंने बहुत बड़े२ कारणों से रोक रक्खे हैं और यह कह कर परदेश जाने से रोके हैं कि बिना दिया हुआ कुछ नहीं मिलता है और हे मुनि तू। मेरे भाग्य वश आप भी यहां आगये हैं, आप की कृपा से अवश्य मेरे दरिद्रता का नाश हो जायगा।

हे विप्रेन्द्र! कौन ऐसी उपाय है जिसके करने से अवश्य दरिद्रता छूट जाता है। हे कृपासिन्धु! जिससे मेरा दरिद्र छूट जाय ऐसा व्रत,

तीर्थ, और तप आदि का वर्णन कीजिये । तब वे मुनिवर उस सुशीला का भाषण सुन और अपने मन में सब पापों और दुःख दारिद्र का नाश करने वाला और उत्तम व्रत विचार करके कहे कि मलमास के कृष्ण पक्ष में मुक्ति भुक्ति और पुण्य को देनेवाली सब से श्रेष्ठ परमा नाम से प्रसिद्ध जो विष्णु भगवान की तिथि होती है उसकी उपासना अर्थात् व्रत करने से अन्न धन से सम्पन्न हो जाते हैं, उसके व्रत में विधि पूर्वक गीत नृत्य, के साथ जागरण करना चाहिये । इस सुन्दर व्रत को पहिले कुबेर ने किया तब शंकर जी ने उनके ऊपर प्रसन्न हो करके धन का स्वामी बना दिये ।

हरिश्चन्द्र ने किया तो धन के स्वामी बना दिये गये और फिर से अपनी स्त्री और अकण्टक राज्य को प्राप्त हुये ।

हे विशालाक्षी ! इस लिये तुम भी जागरण के सहित विधि पूर्वक इस सुन्दर व्रत को करो ।

हे पाण्डव ! इतना कह इसकी समस्त विधि सन्तुष्ट होकर और प्रेम के साथ वर्णन करते हुये और फिर उस ब्राह्मण से पञ्चरात्रि का शुभ व्रत वर्णन करते हुये जिसके अनुष्ठानमात्र से मुक्ति भुक्ति प्राप्त होते हैं । परमा एकादशी के दिवस प्रातःकालमें पौर्वाह्निक व्रत करके यथा शक्ति पंचरात्रि करने का नियम करे, जो प्रातःकाल में स्नान करके पांच दिवस पर्यन्त निराहार रहे, वह अपने माता, पिता और स्त्री के सहित विष्णु लोक को जाते हैं । जो मनुष्य पांचो दिवस एकवार भोजन करते हैं वह समस्त पापों से मुक्त होकर स्वर्गलोक आनन्द करते हैं । जिस मनुष्य ने पांचो दिवस स्नान करके विधिवत् ब्राह्मणों को भोजन कराये उसने देवता राक्षस और मनुष्यों के सहित सब को भोजन कराये ।

जो मनुष्य जल से भरे हुये सुन्दर घटका ब्राह्मणों को दान करते हैं उसने चराचर ब्रह्माण्ड का दान कर दिये । जो मनुष्य स्नान करके पांचो दिवस तिलसे भरकर पात्र दान करते हैं वह समस्त सुखों को भोगकर सूर्यलोक में आनन्द करते हैं । जो मनुष्य पांचो दिवस ब्रह्मचर्य्य से रहते हैं वह स्वर्ग लोक के अप्सराओं के साथ आनन्द भोग करते हैं ।

हे साध्वि! तू भी पति के सहित इस विधि से व्रत कर, हे सुव्रते! इस व्रत के करने से अन्न धन परिपूर्ण होकर अन्त समय में स्वर्गलोक को जाओगी।

कौंडिन्य मुनि के इस प्रकार से कहने पर वह स्त्री पति के सहित मलमास में स्नान करके मुनि की कही हुई विधि के अनुसार व्रत को किये और पंचरात्रि का व्रत समाप्त होने पर पति सहित इस परमा एकादशी का व्रत की और व्रत पूर्ण होते ही वह स्त्री राज भवन से राजकुमार को आते हुये देखकर, और वह राजकुमार ब्रह्मा की प्रेरणा से सब सुन्दर २ वस्तुओं के सहित नवीन गृह देकर स्वयं उसमें उनको निवास कराया और सुमेधा की तपस्या से प्रसन्न होकर वह राजा उस ब्राह्मण की जीविका के निमित्त गांव देकर और उनकी स्तुति करके अपने गृह को गये। मलमास के कृष्ण पक्ष की परमा एकादशी का आदर सहित व्रत और पञ्चरात्रि का व्रत करने से समस्त पापों से मुक्त होकर और सुख पूर्वक सब प्रकार आनन्द भोगकर अपनी प्रिया के सहित अन्त में वह ब्राह्मण विष्णु लोक को गया जो मनुष्य परमा एकादशी और पंचरात्रि का व्रत करेंगे उनके पुण्य को वर्णन करने की शक्ति मुझको नहीं है। जिस ने इसका व्रत किया उसने पुष्कर आदि तीर्थ, गंगा आदि नदी और गौदान आदि सब मुख्य दान कर चुका, जिसने इस एकादशी व्रत किया उसने गया में श्राद्ध करके पितरों का परितोष कर दिया और व्रत खण्ड में कहे हुये सब व्रतों को कर चुका।

जैसे मनुष्यों में ब्राह्मण, चतुष्पदोंमें गौ, तथा देवताओं इन्द्र श्रेष्ठ है, इसी प्रकार मासो में सब से श्रेष्ठ मलमास है। मलमास में पंचरात्रि महा पापों को हरनेवाली कही जाती है, उस पंचरात्रि में परमा तथा पद्मिनी पापों को सुखाने वाली है।

बुद्धिमान् को अशक्त रहने पर भी यथा शक्ति इस का व्रत करना चाहिये, जिसने मनुष्य का जन्म पाकर मलमास का व्रत न किया और हरिवासर अर्थात् एकादशी व्रत नहीं किया उन जन्मधारियों को चौरासी लाख योनियों में दुःख मिलता है।

बहुत सा पुण्य संचित करने से वह मनुष्य की दुर्लभ शरीर प्राप्ति होता है, इस कारण से परमा के शुभ व्रत को करना चाहिये! यह कह कर श्री कृष्ण जी बोले कि हे अनघ! मलमास में परमा एकादशी से उत्पन्न जो फल हैं सो सब मैंने तुम्हारे पूछने से वर्णन किया।

हे राजन्! इस कारण सावधानता से तुम इसको करो यदुपति अर्थात् श्री कृष्ण महाराज के कहे हुये माहात्म्य को सुनकर पत्नी तथा भाइयों के सहित इस एकादशी का व्रत करते हुये और स्वर्ग लोक में अगम्य भोगों को भोगकर अन्त में प्रसन्नता से विष्णु भगवान के लोकमें पहुँच गये और भी पृथ्वी पर जो मनुष्य सुन्दर मलमास का स्नान करेंगे तथा विधि पूर्वक दोनों एकादशी और पंचरात्रि का व्रत करेंगे वे स्वर्गलोक में इन्द्र के समान भोग भोग कर अन्त में तीनों लोकों से वन्दित विष्णु भगवान के लोक को जाते हैं।

इति श्री अधिकमास कृष्णैकादशी
माहात्म्य भाषा समाप्तः ॥२६॥

॥ इति शुभम् ॥

मैनेजर रामदेव प्रसाद द्वारा, बागेश्वरी प्रेस, बनारस में छपा।

सूचीपत्र ।

हमारे यहां हर प्रकार की हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू, संस्कृत, तथा बम्बई लखनऊ इत्यादि की पुस्तकें मिलती हैं, एक बार परीक्षा कर देख लें ।

पुस्तक	मूल्य
अर्जुनगीता	-)॥
आदित्यहृदयबड़ासूरजकवच स०	≡)॥
आदित्यहृदय बालमीकी छोटा	२) सै०
अश्वकल्पद्रुम	≡)॥
आरती संग्रह	-)
अनन्त व्रत कथा मूल	-)
,, ,, भा० टी० ग्लेज	≡)
अशौच निर्णय	≈)
औषधसार	=)
अध्यातम रामायण जिल्द	३)
अमृतसागर	३)
स्तोत्ररत्नाकरगु०२२पे०	।॥=)
अमरकोष सटिप्पणी	॥=)
उपनयनपद्धति मूल	=)॥
एकोदिष्टश्राद्धमूलग्लेज	-)॥
एकोदिष्ट भा० टी०	≈)॥
किरात अर्जुनियां	।=)
कलश प्रतिष्ठा	)॥
काशीमाहात्म्य	)॥
कबीर शब्द सागर	=)
कोक शास्त्र सचित्र	-)
कमलनेत्र स्तोत्र	२॥) सै०
गोपालसहस्रनाम गुटका	≈)॥
गंगालहरी मूल	-)
गणेशपुराण सचित्र	-)॥
गीता भा. टी. बड़ा जिल्द	१।॥)
गीता पंचरत्न बड़ा भा. टी. जि.	३)
गीता पंचरत्न भा. टी. गु.	१॥)
गीता भा. टी. गु.	।॥≈)
,, ,, गुटका ६४ पे०	॥)
गीता गुटका ६४ पे० रफ	।)
गीता गोविंद भा. टी.	॥)
गणेशमाला	)॥
गीता केवल भाषा जि.	।॥)
गृह भूषण (पिंडदर्पण	॥-)
गोपीचन्द भरथरी	-॥)
गणपतपूजा	)।॥
गोदान पद्धति	)॥
गर्भगीता	)॥०
गंगा अष्टक	।॥) सै०
गोत्रावली	)॥
गीता पंचरत्न मूल	१॥)
चर्पटपंजरी मूल	॥)
चौबिस गायत्री ग्लेज	≡)॥
जातका लंकार भा० टी०	।=)
शिवतांडव स्तोत्र ग्लेज	)॥
तत्वबोध	।)
तिथी निर्णय	-)॥
तर्पण विधि	)॥
तर्कसंग्रहन्यायबोधनीपदकृत	॥)
ताजीरातहिंद	१॥)
ताजकनीलकंठी भा० टी०	२॥)

पुस्तक	मूल्य
दुर्गा मूल सांची मझोला	॥)
दशकरम पद्धति	।≈)
दत्तात्रेयतन्त्रं	॥)
धातु रूपावली	≈)
नक्षत्रखाना ज्योतिष	।)
नवग्रह स्तोत्र	)॥
नारद गीता भा० टी०	)॥
नित्यकर्म पद्धति मूल	≈)
नान्हदास पचीसी मूल	)॥
नारायण कवच	)॥
नीतिशतक भाषा	≈)
पारवण श्राद्ध मूल ग्लेज	-)।
पारवण श्राद्ध भा० टी०	≈)
प्रेतमँजरी मूल	।≈)
चमत्कार चिन्तामणि	≈)।
चाणक्यनीतिदर्पण	।)
पंचमुखी हनुमान	-)
पार्थी पूजा भा० टी०	)॥
प्रश्नोत्तरी	)॥
प्रमोदमंजरी	≈)॥
पराशरस्मृति	॥।)
प्रेम लता पद्यावली	१)
विष्णु सहस्र नाम मूल	≈)
बगलामुखी स्तोत्र	)॥
विन्ध्यवासिनी पञ्चरत्न	)॥।
बंदीमोचन छोटा	)॥
,, ,, बड़ा	-)
विन्देश्वरी	॥≈)
बृजविलास सजिल्द सचित्र	२॥)
शब्द रूपावली	≈)
बहुलाव्रत कथा	)॥
वासिष्ठीहवन ग्लेज कागज	।)
बसंत पचीसी	)॥
वेदांतसार	≈)
विनय पत्रिका	।≈)
विवाहपद्धति मूल ग्लेज	≈)
,, ,, भा० टी०	।-)
बैजनाथमहात्म्य	)॥
बजरंग बाण	१॥)
बद्रीनाथ स्तोत्र	)॥
मातृहरिशतक जिल्द पक्की	१)
मनुस्मृति भा० टी० ग्लेज	२॥)
माधव निदान भा. टी. जि.	२॥)
मृत्युञ्जय स्तोत्र	)॥।
महिम्न भा० टी०	-)
शिव महिम्न मूल	॥।)
महा विद्या स्तोत्र	)॥
मीन गीता	)॥
मुहूर्त चिंतामणि मूल	।≈)
,, भा. टी जि. स. अन्वय	१॥।)
,, मिताक्षरा	२।)
महावीरप्रश्नावली	)॥
महालक्ष्मी स्तोत्र	-)॥
मेघदूत भा० टी०	॥-)
महालक्ष्मी व्रत कथा भा. टी.	≈)॥
रामायण मूल	≈)॥
शिवचालिसा	)॥
बालमीकी सुन्दरकांड गु०	१॥।)
रामायण मानस संकावली	१)
रामरक्षास्तोत्र	)॥
रुद्री	।-)
ऋषिपञ्चमी मूल	)॥।
ऋषिपंचमी भा० टी० ग्लेज	≈)
संध्यायजुर्वेदामोटाअक्षर	-)

पुस्तक मिलने का पताः—

मैनेजर भार्गव पुस्तकालय,

चौक बनारस सिटी।